# नव वर्ष की रात्रि

# नव वर्ष की रात्रि

विनोदचन्द्र पाण्डेय

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

NAV VARSH KI RATRI (Novel), by Vinod Chandra Pandeyo

बाबू जी के लिए

इन मेमोरियम

इस कथा की पृष्ठभूमि आज से पन्द्रह वर्ष अतीत का नैनीताल है। नैनीताल इसमें उप जिला माना गया है। नैनीताल में प्रायरी नाम का एक मकान था, मिशन अस्पताल भी शायद है। परन्तु इस कथा में वर्णित, 'प्रायरी', अस्पताल तथा अन्य मकान इत्यादि बिलकुल कल्पित है। सब चरित्र और घटनाएं कल्पित है ही।

## १
# खेल

**बोट हाउस क्लब**
**(३१ दिसम्बर)**

### रात्रि २३.००

नैनीताल के बोट हाउस क्लब मे उस नव वर्ष की रात्रि को कोई खास भीड़ नही थी।

मुख्य ड्राइंग रूम मे, बॉर पर तीन पुरुष और एक महिला बैठे थे, जो शायद हर रात्रि वहां बैठते होगे। तीन मेज साथ लगाकर सात महिलाओं और पांच पुरुषों की एक पार्टी अवश्य रंगीन थी। लम्बे कद, विकट मूंछों वाले श्री जयदयाल अब ऐश्वर्य-प्रतीति के उस सातवे आसमान पर पहुंच गए थे जहां से बातचीत सारी दुनिया को सुनाकर होती है। वह सबको ज्यादा पिला रहे थे, ज्यादा खुश होने पर बाध्य कर रहे थे।

क्लब की खूबसूरती उसके ताल की ओर खुले डेक (बरामदे) है। एक मे बैंड शोर कर रहा था और बीस नाचते जोड़ों को करीब चालीस लोग देख रहे थे। इस भीड में से, बीच-बीच में झुंड यहां आते तथा रम, बीयर या कोका-कोला लेकर वापस लौट जाते। दूसरे बरामदे पर लोग खा रहे थे, या खा चुके थे और कुछ इंतजार कर रहे थे।

तीसरी ह्विस्की के बाद भी बलराम के मन की घुटन, वैसी की वैसी ही थी। ठीक छाती पर, काली भारी शिला की तरह। सिगरेट-लाइटर निकालने के लिए जेब मे हाथ डालने पर उसको अपनी बरसाती की जेब मे पड़ी पिस्तौल की याद आई। क्या वह आज रात उसका प्रयोग कर, अपने काले और भारी जीवन से मुक्ति पा लेगा। जीवन के असह्य होते ही पहाड़ो की ओर भागना तो उसकी पुरानी आदत थी।

दूर कोने पर बैठे बलराम को जयदयाल की पार्टी का अनायास भागीदार होना कभी बहलाता, कभी बेचैन कर देता।

## रात्रि २३–१५

जयदयाल ने कहा, "सज्जनो और सजनियो! अभी तक आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नही दिया। प्रेम-संबध कितने दिनों का उत्तम है—पांच दिन, पांच सप्ताह या पांच महीने?"

स्पष्टत: जगलात महकमे के ऊंचे अफसर लगते श्री सक्सेना को उनकी दुबली बीवी ने कुछ झुककर बतलाया, "हम लोगो की राय पांच सप्ताह है। सरकार इससे लम्बी छुट्टी मुश्किल से देती है।"

अपने दोनो ओर बैठी जुड़वा-सी लगती, नेपाली स्त्री और साली के कन्धों को भर, राजाशाह ने कहा, "तुम्हे जवाब एक औरत के लिए चाहिए कि दो औरतो के बारे मे?"

जयदयाल जोर से हसने लगा। "यह हुआ जवाब!......वेटर, वेटर, ठेकेदार साहब को बडा पटियाला पेग डालो। एक नही, दो।"

मेज के निचले सिरे पर बैठा, चुस्त युवक उठा। "अरे, अरे स्क्वाड्रन लीडर कहां उडे? हमारी बीबीजान को नाच में अभी-अभी थकाकर लाये हो?"

स्क्वाड्रन लीडर संजीदा चाल से विदेशी लड़की के पास पहुंचे। उन्होंने एडियां बजाईं, कमर से झुके, कुछ कहा। लैला सम्मद के साथ चलते, उसके मुख के परे से, नाथ ने जयदयाल को उत्तर दिया, "पांच घण्टे काफी है। बाकी पुनरावृत्ति है।"

जयदयाल अपने सामने बैठी, काली साड़ी मे झक्क गोरे रंग की गहरे वक्ष वाली, सुन्दर तो नही पर आकर्षक महिला से उत्तर की प्रार्थना कर रहे थे, "सरोज, तुम्हारी क्या राय है?"

"हमारी राय? पाच दिन मे तो मुलाकात होती है, पांच सप्ताह जान-पहचान मे लगते है, पांच महीने मे गलतफहमी बढती है। जो इस सबको पार न कर ले, वह स्त्री का प्रेम जानता ही नही।"

श्री सक्सेना अपने निमंत्रण मे एक जोड़ा रिश्तेदार ले आए थे। वह दोनों

बहुत उत्साह से हर चीज का मज़ा ले रहे थे। उन्होने तो सर्वप्रथम ही बतला दिया था कि उनकी शादी को पांच सप्ताह होने वाले है।

चुप रही सिर्फ जयदयाल की पत्नी सुलेखा दयाल। जितना कोमल सरोज घोषाल का व्यक्तित्व था उतना ही कठोर संगमरमर सुलेखा का। उसका नारीत्व सौन्दर्य जैसे जयदयाल की पार्टी को घटिया करारता था।

बलराम बॉर पर पहुचकर चौथी डबल ह्विस्की के लिए कूपन दे रहा था। श्री जयदयाल वहा बैठे कर्नल और अपने आदेश पर विशेप मार्टिनी बनाते कर्मचारी को, मिश्रण की खासियत समझा रहे थे।

"काहिरा के पूर्व सबसे बढिया मार्टिनी "

बाद मे अपना गिलास उठाने के समय बलराम जयदयाल के निकट आया तथा उसी समय जयदयाल का सिर भी मुड़ा। दोनो के चेहरो की दूरी दो इंच भी न थी और उनकी आंखे अटकी। जयदयाल बलराम की ओर घूरता रहा। जब बलराम अपनी ह्विस्की उठाकर लौट रहा था तब भी जयदयाल की आखें उसीके कद और चाल को तौल रही थीं।

जयदयाल के अभद्र व्यवहार से और अजनबियों को पीठ ठोंककर अपनी दावत मे शामिल करने की जयदयाल की आदत जान कर, बलराम चुपचाप उस कमरे को छोड़कर बिलियर्ड रूम की ओर बढ गया।

## रात्रि २३-३०

मार्कर था नही, और कमरे में अंधेरा था। अपने लाइटर से खोज कर बलराम ने हरे टेबल के ऊपर की ढकी रोशनियों को जलाया। टेबल पर लकड़ी के त्रिकोण के अन्दर रगीन गोलिया जमी थी। खेल देखनेवालो की ऊची कोच पर बैठकर उसने सांस ली।

यदि बलराम अपने मन को चेष्टा से खाली न रखता तो मन उसपर जीवन में सम्पूर्ण और सर्वदा पराजय का आरोप-पत्र सुनाना प्रारम्भ कर देता। दोष और कमी सिर्फ उसमें थी न तो पक्के इरादे कर सकना और न उन्हें निभा सकने की क्षमता। अच्छे स्कूलो और कालेजों में पढा, पर द्वितीय श्रेणी से आगे न घसीट सका। फिर सेना मे एमरजेन्सी कमीशन, जिसे वह बहुत चाह-कर भी पक्के कमीशन मे परिवर्तित न करा सका। राजस्थान में डेढ़ साल

खेती—धूल ज्यादा, धान कम। दिल्ली की एक दक्षिणी कालोनी मे बरसाती लेकर उसने एक साथ पत्रकारिता और शेयर मार्केट पर हाथ जमाने की कोशिश की। फर्म की नौकरी पाने और वापस सभ्य संसार में लौटने का प्रयत्न भी अपनी पत्नी आनन्दा की इच्छानुसार किया। उसके सुरक्षा-समस्याओं पर लिखे लेख पत्रों से लगातार लौट आते। शायद 'डिफेंस संवाददाता' के नाम के आगे जनरल होना जरूरी है। उसके खरीदे शेयरों के दाम कभी अद्भुत रूप से न बढते। फर्मों के इन्टरव्यू जरूर सहानुभूतिपूर्ण होते, पर उसका अभाग्य था कि आजकल औद्योगिक क्षेत्र मे मदी चल रही थी। आनन्दा का स्वभाव विवाह के एक वर्ष बाद ही चिड़चिड़ा हो गया था। उसकी घुटन और क्रोध का हिस्टीरिया बढता गया। कानपुर की पैतृक सम्पत्ति बेच-कर जो रुपया आया था वह हर महीने घटता जा रहा था। एक दिन आनन्दा अपने पिता के पास लन्दन चली गई ···बलराम क्या विरोध करता! जो पिछले सप्ताह उसके पास तलाक का नोटिस आया था, उसको भी फाडकर फेक देने के अलावा और क्या चारा था! वह स्वयं ही मानने को मजबूर था कि उसके साथ किसीका भविष्य नही बंधा था। क्या कभी वह किसी चीज मे विजयी हुआ था?—चौथी कुमाऊ के साथ तावा चौकी की विजय के अलावा या यूनिवर्सिटी मे एक मील की दौड़ मे—बस!

पत्नी द्वारा तलाक मागने मे उसके लिए ऐसा कौन-सा नया अपमान या अकेलापन था जो उसने करीब सात साल के वैवाहिक जीवन मे न भोगा हो। दिन-भर दुनिया मे हारा व्यक्ति रात को सेज पर भी हारता है। यदि कोई किसीको सुख और सतोष देने लायक प्रयत्न ही न कर सके, यदि पास पहुचते ही किसीको चिढ और अपने को डर प्रतीत हो, तब दो कमरो के मकान में सास लेने लायक हवा भी नही मिलती।

सब कुछ भुलाकर सामने की चीज में ध्यान लगाना पहले संभव था। मन से बातो को हटा देने पर भी, यह काला भारी भार ठीक छाती के मध्य से नहीं मिटता। यह कल्पना या मन की बात नही थी, बिल्कुल लोहे जैसा ठोस सत्य था, जैसे छुआ जा सकता हो। आत्महत्या के प्रथम ख्यालों मे उसे यह भ्रम हुआ था, कहीं पिस्तौल की गोली से यह अभेद्य तो नही रह जाएगा।

## रात्रि २३-४५

"खेल के लिए सब कुछ तैयार है।"

जयदयाल बिलियर्ड टेबल के दूसरी ओर खड़ा मुस्करा रहा था। बलराम कोच से उतरा। वह क्यू रेक की ओर मुड़ा।

"नही, नही, जनाब! उसकी आवश्यकता नही। यह दूसरा खेल है।"

जयदयाल ने खीचकर अपने मुख से अपनी मोटी मूंछें अलग कर दीं। बिना मूंछों के जयदयाल का चेहरा बिल्कुल ही बदल जाता था। कुछ पहचाना हुआ लगता था।

"लन्दन से खरीदी खास कर्नल मूंछे है। खेल यह है कि यदि हम लोग अपने कोट बदल लें और आप वापस मेरी पार्टी मे जयदयाल बनकर लौट जाये तो कितनी देर उन लोगों को छका सकते है।"

बलराम के अनुमान से उनका कद और डीलडौल एक-सा था। चेहरे का आकार, सामने के दांत और बाल बनाने का ढंग भी एक-से थे। पर इन मोटी समानताओं के आगे असमानताएं भी उतनी ही प्रखर थी। जयदयाल की आखे उससे छोटी, होंठ उससे मोटे और नाक उससे छोटी थी। और यह फर्क जयदयाल के आत्म-संतुष्ट ऐयाश भाव वाले चेहरे को बिल्कुल दूसरा बना देते थे। बलराम के अपने से संघर्ष मे धसे चेहरे से बिल्कुल भिन्न।

"माफ कीजिएगा। हम लोगों की शक्लो मे बहुत फर्क है। फिर मुझे ऐसे खेल खेलने का शौक नही।"

"शौक नही, या हारने का डर है? आप सदा हारने वाले लगते है।"

"आपकी बला से! मुझे क्षमा करें।"

"नया साल कुछ देर मे शुरू होने वाला है। कुछ तो नई बात करनी ही है। आप इतना घबराते क्यों है?" उसको मना सकने की क्षमता मे आश्वस्त, सदा जीतने वाले जयदयाल से छूटना असंभव था।

"चलिए, चलिए! अपना गिलास खत्म कीजिए। मैं आपकी शक्ल का नही हूं, पर इन मूंछों के पीछे आपको कोई नही पहचानेगा। बारह बजने में पांच मिनट से कुछ ही ज्यादा है। यदि आप रोशनी के बुझने तक प्रहसन निभा सकते है, तो रोशनी जलने पर पार्टी से अपना इनाम मांग सकते है।"

'मुझे आपसे, किसीसे, कोई इनाम नही चाहिए।"

"क्यों ? सरोज के पके आम की मिठास को आप चखना नही चाहते ? राजाशाह के रखैलो के दिमाग ही कीचड़ है, देह मानसरोवर के कमलो से सुन्दर है। वह अरवी घोड़ी लैला, जिसकी दौड़ लम्बी होगी, वह वहां पहुंचाने वाली है जहा सोना तेल हो जाता है।' ....यदि तुम उन अभागो में से हो जिन्हें वर्फीला रूप डसता है, तो वहां मेरी वीवी मुलेखा है। उससे यदि कुछ पा सको, तो मुवारक।"

जयदयाल ने गलत चाल चल दी थी। लालच की जगह वलराम घृणा से भर गया।

"ठहरो। पांच मिनट के प्रहसन के लिए तुम्हें क्या कीमत चाहिए। मेरा मतलब शर्त नही सिर्फ मेरी ओर से—पांच हज़ार ?"

वलराम ने आश्चर्य से जयदयाल की ओर देखा। यह आदमी मज़ाक नही कर रहा था। उसके चेहरे पर ऐश्वर्य नही, भय था। उसका निश्चय और दृढ हो गया।

"मुझे माफ कीजिए। मैं किसी चीज़ में फंसना नही चाहता। मेरा जी वैसे ही जीवन से भर चुका है।"

जयदयाल ने उसका कधा पकड़कर कहा, "तुम जीवन-भर अपनी मदद न कर सके। क्या किसी दूसरे की मदद से भी तुम्हे इनकार रहेगा ?"

इस प्रार्थना से वलराम वहुत दफा हार चुका था। फिर हार गया।

जयदयाल का कोट फिट था, पर अतिशय सुगंधित। घडी रोलैक्स। वह जेव की चीज़ें, सिगरेट केस, लाइटर, चाभियां वदलना चाहता था। पर जयदयाल ने कहा, "नही वापस लेने मे ऐसे ही आसानी होगी।" जयदयाल ने एक स्त्रियों का प्रसाधन-शीशा निकालकर वलराम को उसकी शक्ल दिखलाई। मूंछें लगाने से, वालो को ज़रा-सा वदलकर वनाने से, इतना परिवर्तन! वलराम स्वयं अपने को नही पहचान पाया।

जयदयाल फिर हंस रहा था। "आओ देर हो रही है।... यह शीशा मुलेखा का है। उसे लौटा देना।" जयदयाल ने उसे अपने गिलास की वाकी मार्टीनी पिला दी।

## रात्रि २३-५०

अपने छद्मवेश की सफलता या असफलता से बिलकुल लापरवाह बलराम क्लब रूम मे पहुंचा।

मेज पर वही लोग थे। राजाशाह दूसरी ओर जाकर सरोज के पास बैठा था। हीरा और हमीरा एक-दूसरे से उलझी हुई बाते कर रही थी। वह उनके और सुलेखा के बीच की कुर्सी पर बैठ गया।

वेटर ने उसके सामने विशेष मार्टिनी रख दी।

बलराम सुलेखा की ओर मुड़ा। जयदयाल जैसी आवाज न होने के कारण और संकोचवश, कुछ कहने की बजाय उसने वह चादी के फ्रेम में जड़ा गोल शीशा बढ़ा दिया। सुलेखा ने शीशा लेकर वापस अपने बैग मे रखा। पर सुलेखा की दृष्टि वापस बलराम पर लौट आई।

सुलेखा के दूसरी ओर बैठी हमीरा, मनोरंजन की आशा मे बलराम की ओर देख रही थी। हमीरा सिगरेट पी रही थी और उसके सिगरेट के धुएं मे एक मीठी गंध थी।

"एक हमारा कश लोगे ?" हमीरा ने अपने अटपटे उच्चारण में कहा।

बलराम ने सिर हिला दिया। हमीरा ने जैसे लोट-पोट होने की बात इसमे पा ली। ' राजा, ओ राजा, सुना तुमने ! हमारा कश लेने को मना करता है जैं दयाल।"

"अभी कितनी देर और है ?" बलराम बत्तियां बुझने और इस स्वांग से मुक्ति पाने के लिए अधीर हो रहा था।

नाथ डांस डेक के दरवाजे से लौटा था। धुत्। उसके हाथ में पाइंट बोतल थी—करीब-करीब खाली। नाथ ने राजाशाह और बलराम को बारी-बारी ललकारते हुए घूरा।

शाह ने पूछा, "लैला कहां है ?"

"यही तो मैं तुमसे पूछने आया हू। लैला कहां है ? और उत्तर लेकर रहूंगा।"

डास डेक से शोर बढ़ रहा था। पटाखे, क्रैकर्स छूटने की आवाजे आ रही थी। नाथ, राजाशाह से पूछताछ कर उसकी तरफ मुड़ा था कि बैण्ड ने बिगुल

बजाया और कमरे की बत्तिया बुझ गईं।

लोग खड़े हो गए। नया साल मुबारक ! हैप्पी न्यू इयर ! किलकारिया। बलराम एक-दो कदम पीछे हट गया।

पटाखों से बिल्कुल निराला, ताल के मध्य से पिस्तौल चलने का घोष आया। और किसीने कुछ भी सोचा हो, बलराम को पाव तक झटक जाने वाला अनिष्ट का संशय हुआ। और उस अनुभव को मन से मिटा सकने के पूर्व ही दुबारा पिस्तौल के फायर की आवाज हुई।

कमरे की रोशनी लौटी। भीड़ बरामदे की ओर चली। गोली चली—नाव पर—ताल मे।

जिस अनिष्ट की आशंका से उसका मन भर रहा था वह उसके बहुत निकट घटित हुआ। नाथ ने छोटी बोतल को हाथ में भरकर, उसकी बाईं कनपटी पर पूरा वार किया। फिर दुबारा किया।

चोट का पहला अनुभव था एक लाल-काले सागर का उसपर उछल आना। गाल पर लहू का स्पर्श। दर्द के चीखने और चले जाने के पहले ही बलराम गिर पडा।

—इतनी ठड है। ठंड ताल की ओर से आई है। उसका आक्रमण कही गले के आसपास लगता है। यह ठंड उसके देह के पार जा रही है। वह उसे रोक क्यो नही पाता। वह उसकी इच्छा से भी बलवान है। उसके स्नायुओं को छेदती, उनकी आकृति और रेखाओं मे नई रेखाएं भरती फैलती जा रही है। यह ठंड और उसका मन, दोनों कैसे रह पायेंगे—जहां मन होता है। यह ज्यादती है। बिल्कुल अनधिकृत है।

—दूसरे स्तर पर अनुभव स्वप्न के रूप मे था। एक मील लम्बी दौड़ है। चक्करो की गिनती में उससे कोई गलती हुई। जब वह रेखा के पार हुआ तो उसे दौड़ते रहना पड़ा। उसने एक भीगा काला कोट पहन रखा है। जो उसे दौड़ने में असुविधा दे रहा है। वह दौड़ता जा रहा है।

पर उसे मालूम है कि उससे अपेक्षित पांच चक्कर न लग सकेंगे। वह बहुत थका रेखा को पार करता है। अनियंत्रित हुआ रेफरी हवा मे फायर कर देता है।

—तीसरे स्तर पर हिमालय की चोटी पर बैठी नीली बुद्धि उससे

उपनिषद् की शैली मे बातचीत कर रही है। क्या यह देह तुम्हारा है ? क्या बाल तुम्हारे है ? क्या हाथ तुम्हारे है ? क्या पांव तुम्हारे है ? क्या लिंग तुम्हारा है ? वह पांच बार अपने प्रश्नों का उत्तर स्वयं ही देती है। नहीं, नहीं, नही, नही, नही ! क्या मन तुम्हारा है ? इस बार उत्तर मे वह अपनी अंगुली आकाश की ओर उठा देती है। आकाश उसके मुख के बिल्कुल पास है, उसमें बड़े-बड़े ग्रह तैर रहे है। उनके विभिन्न रग है। लाल, नीला, मोती जैसा श्वेत, प्रखर चमकीला, धुए के रंग जैसा। सबसे अधिक प्रकाश चन्द्रमा में है। वह एकटक अपने चन्द्रमा की ओर देखता है। चन्द्रमा में एक ग्रहण का बिन्दु है। और बढ रहा है।

वह घबराकर पूछता है, "क्या मैं इस ग्रहण को रोक सकता हूं ?"

वह नीली बुद्धि उत्तर देती है, "क्यो नही। मैं जो तुम्हारे साथ हू।"

"आप कहा है ?"

"मेरा लोक गहराई से भी गहरा है। ऊंचाई से भी ऊंचा। और तुम्हें लग रही ठंड से भी ठंडा।"

फिर उसे ठंड लग-लगकर बुखार की कंपकंपी आ रही थी। गले के दर्द, बायें मुख पर कई जगह तीव्र टीस और जलन, बहुत कमज़ोरी। दूर की आवाज़ें पास आने लगीं।

## अस्पताल

**(१ जनवरी)**

### रात्रि ००-३०

डाक्टर दास बोट हाउस क्लब में ही थे। उन्होने आते ही मुख और गले पर पानी फेके जाने पर आपत्ति की। बलराम गहरी नींद में लगता था। सुलेखा, राजाशाह और सरोज ("मेरा घर उसी तरफ है") डांडी के साथ रिक्शों में मिशन अस्पताल चले।

काच के टुकड़े निकाल लेने के पश्चात् सिर के चारों ओर होती तथा मुख के चारों ओर जाती पट्टी बांधी गई। सामने चेहरा सूजा भी हुआ था। गले में ठंड लगने के कारण (या चोट के कारण) सिर्फ एक भर्राई आवाज़ निकलती

थी, शब्द समझ में न आते थे। ऊंचा बुखार था।

वलराम, अपनी देह मे अवश, उन लोगों की बातें सुन रहा था।

डाक्टर दास कह रहे थे, "चोट से ज्यादा गम्भीर लैरन्जाइल इनफ्लेमेशन है। कमजोरी तो नार्मल है। काफी खून वहा है। शॉक है। पर जनवरी की ठंड का तो आप लोगों को सोचना चाहिए था। ⋯ कनपटी वाली चोट ज्यादा है। क्रियाइन्द्रियो मे तो कोई असर नही है। दिमाग वहुत कोमल और सूक्ष्म होता है। उसपर जरा-सी चोट का वहुत असर हो सकता है और वह भारी चोट भी सह लेता है। कल तक मालूम पड़ेगा। सावधानी से पट्टियां होगी, क्योकि गाल पर निशान बचाने हैं। कनपटीवाली चोट की लकीर कुछ तो वालों मे छिपी रहेगी। वस, यही सव है।"

राजाशाह ने पूछा, "जयदयाल को घर ले जाया जा सकता है?"

"मुझे कोई आपत्ति नही। ड्रेसिग और कुछ इजेक्शन घर मे भी लग सकते हैं। हां, अभी हिलना-डुलना खतरा पैदा कर सकता है। कमजोरी काफी है।"

सुलेखा ने कहा, "आपको कल जाच भी तो करनी है—दिमाग पर असर होने की वात आप कह रहे थे।"

"मैं तो कल मरीज को देखने न आ सकूंगा। मेरा आपरेशन का दिन है।"

सुलेखा ने चट से कहा, "यहां प्राइवेट वार्ड मिल सकेगा। कल सुवह आप देख लें। फिर सहूलियत से घर ले जाएंगे।"

शाह ने एतराज़ किया, "तुम वेकार फिकर करती हो, सुलेखा। जयदयाल का सिर चट्टान का वना है। उसके दिमाग को कुछ नही हुआ।"

डाक्टर दास ने अंग्रेज़ी में कहा, "मिसेज़ दयाल का सुझाव ठीक है। मैं वार्ड सिस्टर से कहे देता हूं।" फिर मुड़कर डाक्टर दास ने कहा, "इनके लिए कपड़े, कुछ दूध मगवा लीजिए।"

सरोज वोली, "नीचे फोन है। प्रायरी—फोन कर सकती हो।"

"तुम्ही फोन कर दो, सरोज। लक्ष्मण पुराना नौकर है, सब कुछ ले आएगा।"

सरोज के जाते ही राजाशाह ने कुछ तेजी से कहा, "जयदयाल को घर ले चलने से क्यो तुमने इनकार किया? किसी और से वात करने से पहले मुझे

जयदयाल से बाते करनी हैं। यह बहुत जरूरी है—उसके सामने यह चोट कुछ भी नही, जिसको तुम बडा बना रही हो।"

"इनके स्वस्थ होने तक, या इनकी खुद की मर्जी होने से पहले तुम इनके पास भी नही आ सकते, मिस्टर शाह! इतना अधिकार मेरा भी है।"

"तुम्हे क्या हो गया सुलेखा? अधिकार की कैसी बात कर रही हो! मै और जयदयाल हिस्सेदार है, और हमारी बिजनेस की बहुत बड़ी रकम का सवाल है।"

"मुझे उस बारे मे कुछ भी नही मालूम। पर जो मालूम है वह शायद आपकी रकम से भी गम्भीर है।"

राजाशाह को बलराम के अनुसार सुलेखा के दूसरे वाक्य की व्यंजना नही ज्ञात थी। वह ज़रा-सी चहलकदमी करके बोला, "जयदयाल से कल बात हो जाएगी। पर बिलियर्ड रूम से लौटने के बाद क्या उसने तुम्हे कुछ रखने को दिया था? यह तो बतला सकती हो।"

सुलेखा ने क्रोध की बिजली से कड़कते स्वर मे उत्तर दिया, "राजाशाह, बहुत हो गया। तुमने जयदयाल के सब कपड़े टटोल लिए, क्लब मे तुमने मेरा बैग भी बिना मेरी इजाजत के खोज लिया। मेरी सहनशीलता समाप्त हो रही है।.."

"आज हुआ क्या है? तुम्हारी सहनशीलता तो बहुत लम्बी थी!" राजाशाह चला गया।

## रात्रि ०१-१५

प्राइवेट कमरे में पहुचने के कुछ देर बाद सुलेखा ने सरोज से कहा, "अब तुम चली जाओ, यहा सब ठीक है।"

"तुम यहां अकेली कैसे रह पाओगी?"

"अकेला कैसा? वार्ड सिस्टर है। थोड़ी देर में लक्ष्मण आ जाएगा।—क्या राजाशाह ने तुम्हे मुझे अकेले न छोड़ने के लिए कहा है?"

"राजा ने भी कहा था। वह जयदयाल का पुराना मित्र है, सुलेखा। ऐसा रुख मत अपनाओ। कल जब जयदयाल ठीक हो जाएगा तब उसकी मर्जी पर यदि तुम्हे अपना, तिरस्कार लौटाना पड़ा तो कड़ुवा लगेगा।"

"ऐसा कुछ नही होगा, सरोज।"

"नव वर्ष का नया संकल्प लिया था, जयदयाल से क्या?"

"कुछ यही समझो।" अव जाओ सरोज। यह सो गए है।"

## रात्रि ०१-३०

सरोज के जाते ही वलराम ने उठकर बैठने की कोशिश की। सुलेखा ने उसे हाथ दिखाकर रोका पर कमरे की ऊपरवाली रोशनी उसे स्पष्ट देख सकने के लिए जला दी। जितनी जल्दी सुलेखा को सत्य जानने की थी उससे भी जल्दी वलराम को सत्य वतला देने की थी। मूछो के विना किसीको भी धोखा होना कठिन था—एक पत्नी के लिए विल्कुल असंभव। मूछें डाक्टर दास ने अस्पताल मे लाने के वाद हटाई थी, जव कमरे में सिर्फ सुलेखा थी। वाकी लोगो ने उसे फिर पट्टी वंधा ही देखा था। पट्टियां हटाने को उठे हाथ को अपने हाथ से रोककर सुलेखा ने कहा, "नही! उसकी जरूरत नही है। तुम वोल भी नही सकते। मुझे समझ रहे हो न?"

वलराम ने उसके हाथ को दवाया, और उनके वीच संवाद का ढंग वन गया।

"एक वार हाथ दवाने का मतलव—हा। अपना हाथ मेरे हाथ से छुटा लेने का मतलव—नहीं। समझ गए?"

वलराम ने सुलेखा का हाथ एक वार दवा दिया।

"तुम जयदयाल नही हो?"

वलराम ने अपने हाथ मे वंदी हाथ को दवाया। उसे आश्चर्य हुआ। अपने में अनजाने विरोध से, जो हाथ छोड़ देना चाहता था। इस अल्प संघर्ष में शायद उसने सुलेखा का हाथ ज्यादा जोर से दवा दिया। सत्य प्रकाशित करने के वाद वलराम पर अपनी थकान का पूरा भार उतर आया। उसकी पलकें वन्द हो गई। उसने जकड़े हाथ को एकाएक छोड़ दिया और अपने हाथ छाती पर वाध लिए।

सुलेखा ने उसपर झुककर पूछा, "तुम्हे जयदयाल ने भेजा था न?" जव सुलेखा ने उसका हाथ उत्तर जानने के लिए फिर पकड़ा तो उसने उत्तर में हाथ को दवाया। उसपर गजव की नीद घिर रही थी। उसके मन ने कहा,

यदि हाथ छोड़ूंगा तो सोचेगी,—नही—वही छाती पर उसका हाथ पकड़े वलराम गहरी नीद मे लुढ़क गया।

सुलेखा अपना हाथ छुड़ाने या उसको जगाने का निर्णय किए बिना वैसे ही बैठी रही। उसने दूसरे हाथ से ऊपर की रोशनी बुझा दी। वह लक्ष्मण के पहुंचने पर ही उठी।

## सुबह ७-००

सवेरे सबसे पहले स्क्वाड्रन लीडर नाथ मिलने आए। लक्ष्मण से सुलेखा ने कहा, "उनसे नीचे ही बैठने को कहो और सिस्टर को इधर भेज दो।"

वलराम उठ गया था। सुबह का सूर्य पहुचने से पहले, उसकी रोशनी कमरे में फैल गई थी। उसकी देह थकी, पर हल्की थी। सिर्फ गले में दर्द पूर्ववत् था। वह सुलेखा की ओर देख रहा था।

अधूरी नीद के कारण सूजी हुई आंखे और बड़ी लगती थी। जूड़ा ढीला होने से वाल फैल गए थे। रात-भर कुर्सी पर बैठकर सोने से साड़ी पुरानी हो गई थी। उसका चेहरा चिन्ता से भारी लगता था।

"सिस्टर तुम्हारे पास रहेगी। हो सके तो तैयार हो जाना। मैं नाथ को निपटाने जा रही हूं। जिसने कल रात तुम्हे चोट पहुंचाई थी। कह दूगी, हमें केस नही करना। समझ गए?"

उसने स्वीकृति मे एक बार हाथ दवा दिया।

"तो मेरा हाथ छोड़ो।"

सिस्टर लक्ष्मण को सहायता के लिए बुलाना चाहती थी। पर वलराम ने खुद ही जो मामूली तैयारी हो सकती थी, कर ली। जयदयाल की घड़ी भी पहन ली।

## सुबह ७-२०

सुलेखा के लौटने में पन्द्रह मिनट से भी ज्यादा लगे। उसका चेहरा क्रोध से तमतमाया हुआ था। वह सिरहाने की कुर्सी पर बैठ गई, पर मन मे वलराम से हजारो मील दूर।

"सूअर, वदतमीज़।"

वलराम ने उसकी ओर वढाया हाथ वापस खीच लिया।

"ऐसे नीच होते है मर्द ! अकेली औरत से माफी मांगने का ढग उसमें सटकर बैठना, उसके कधे लपेटना होता है ! पति से उसकी पत्नी का अन्दाज लगाते हैं !"

वलराम ने नि.श्वास लेकर दूसरी तरफ करवट ले ली। उसने निश्चय किया, चोट, पट्टी, कमजोरी कुछ भी हो, वह टैक्सी लेकर वापस दिल्ली चला जाएगा। जयदयाल के झंझटो मे फंसने की उसे गहरी अनिच्छा थी। वह अपने को धिक्कारने लगा।

## सुवह ७-४५

पौने आठ वजे डाक्टर साहव आए। ड्रेसिंग खोलकर सावधानी से चोटों को देखा। ब्लड प्रेशर, बुखार, छाती, पीठ का निरीक्षण किया। मुह खोलकर वाहर से गले को देखा। कुछ वातचीत करने की कोशिश की। वलराम चुप रहा।

"नीद मे वार-वार हाथ-गले को पकड़ते थे। जैसे वहां वहुत दर्द हो रहा हो।"

"सूजन अभी घटी नही, मिसेज दयाल ! ठीक होने मे दो-तीन दिन तो लगेगे ही।"

डाक्टर दास ने उसकी आखों मे देखकर कहा, "मिस्टर दयाल, वोलने की कोशिश कीजिए। कोई वात नही, कैसा भी स्वर निकले।"

वलराम के मुख से, 'कैं' 'खैं' जैसे सुनाई पडने वाले स्वर निकले। उसने देखा कि उसके न वोल सकने पर सुलेखा का चेहरा कुछ निश्चिन्त हुआ।

"इजेक्शन और दवाएं जारी रहेगी। मरीज नार्मल है। बुखार वढ़े तो चिन्ता न कीजिएगा। लैरिन्कस की सूजन और कमजोरी समय से ठीक होगी। एक्सरे ठीक है।"

सुलेखा ने अनुरोधपूर्ण स्वर मे डाक्टर से कहा, "इन्हे आराम की जरूरत है। विजनेस वगैरह से छुट्टी चाहिए। आप तो जानते ही है, इनके पार्टनर राजाशाह को ! वे अपने विजनेस की धुन मे इनपर स्ट्रेन डालने मे न हिच-किचाएंगे। मैं सोच रही थी......"

डाक्टर दास ने सुलेखा के सोचने को अपनाकर कहा, "आप ठीक सोचती हैं, मिसेज दयाल। सर की चोट है, कभी भी उलझनें पैदा हो सकती है। मेरी राय से नर्सिंग होम वाले हिस्से मे डबलरूम मिल जाएंगे—मैं अभी एलाट कर देता हू। मरीज को वही दो-तीन दिन रखते है। मिलनेवालों पर पावन्दी लगा देंगे। आपकी चिन्ता विल्कुल सही है।"

## सुबह १०-००

नया कमरा दुमजिले पर और सुसज्जित था। बन्द खिड़कियों से नीचे शायद ताल भी दीख जाता था। पलंग पर लेटा वलराम सामने पर्वत-श्रेणी को देख सकता था।

सुलेखा के लिए बगल वाले कमरे मे भी वैसा ही फरनीचर था। वैठने वालों के लिए एक कोच और एक सोफा कुर्सी। गैलरी से सीधे वलराम के कमरे मे आनेवाले दरवाजे को सुलेखा ने अन्दर से वन्द कर दिया। उसके सामने एक फालतू मेज भी रख दी। कमरो के बीच के दरवाजे के वन्द होने पर सुलेखा के कमरे की आवाज नही आती थी। सिर्फ भारी परदों के खिंचे होने पर वातचीत सुनाई पडती थी।

सुलेखा लक्ष्मण से कह रही थी, "मैं एक अटैची और बाकी सामान जुटा-कर ले आऊगी। तुम पहले यह फल, दूध, दवाएं वगैरह वाजार से लेते आओ। एक रिक्शा भी लेते आना। मेरे यहां न होने पर किसीको अन्दर साहव के पास मत आने देना। समझ गए। किसीको भी नही। मुझे ज्यादा देर नही लगेगी। तुम जाओ।"

वलराम सामने की पर्वत-श्रेणी को देख रहा था। उसे वैठाने के उद्देश्य से नर्स पलंग के सिरहाने को उठा गई थी। सुलेखा परदे पार कर आई। सिरहाने सीधी कुर्सी पर वैठी।

"मुझे कुछ देर के लिए घर जाना ही पड़ेगा। किसीसे भी मत मिलना।"

वलराम सिर नही हिला सकता था। यह आदेश था। सहमति मागी नही गई थी। उसने अपनी इच्छाओ से सतर्कता बरतने का निश्चय किया। कल सुलेखा का हाथ ही पकड़े रह गया था।

"यह तुमने किए है?"

दवाइयो के लिए दो खानेवाली स्टील टेबल पर पड़ी स्लिप बुक को उठाकर वह ध्यान से देख रही थी। जयदयाल की कलम नर्स ने उठाकर वहा रख दी थी। उसने वैसे ही पैड पर अपना नाम लिखना और हस्ताक्षर करना शुरू किया था। कलम की घिसावट या हाथ की कमजोरी के कारण लिखाई उसकी जैसी नही बन पाती। उसकी लिखाई का ढलान दाहिनी ओर होता था और अक्षर जुड़े हुए बनते थे। इस तरह बाई ओर ढलान वाले और स्पष्ट अलग-अलग नही। वह निब दबाने का भी आदी नही था। बार-बार बाई तरफ ढले, बचकाने, अलग-अलग, पतली और मोटी लकीर वाले अक्षर बनते। उसने कई बार इस ढंग से 'जयदयाल' अंग्रेज़ी मे लिखा। नाम के नीचे पत्तीनुमा दो बिन्दी-युक्त लकीर खीच दी। फिर पैड रख दिया।

"यह हस्ताक्षर—क्या तुम फिर से कर सकते हो ?"

बलराम ने कलम उठाकर दो बार फिर वैसे ही जयदयाल लिख दिया। हाथ मे आसानी थी, उसे अपने मन से सुरक्षित-भर रखना ही पूरा फन था।

सुलेखा ने बलराम की ओर देख, तीव्रता से कहा, "पर यह तो हू-ब-हू जयदयाल के हस्ताक्षर है। जरा फरक नही है।"

बलराम ने अपने को वापस पर्वत-शृखला की ओर मोड़ लिया। उसके गले का दर्द बढा लगता था। उसने आखें बन्द कर ली।

सुलेखा शायद ज्यादा अपने को ही सुना रही थी, "किसीके साथ ज्यादा रहने से उसकी वैसी बोलचाल हो जाती है—वही वाक्य इस्तेमाल करने लगते है, वही गालिया देने लगते है। पर जयदयाल के कपड़े पहनने से उसकी जैसी लिपि हो गई !"

थोड़ी देर बाद बलराम के अनायास गले पर आए हाथ को सुलेखा ने सहलाया। फिर अपने मे उसका हाथ ले लिया।

सुलेखा ने कहा, "तुम जयदयाल होने मे कितना बढ सकते हो ? यह कोशिश करने लायक नही है। तुम सिर्फ मेरी मुक्ति के लिए आए हो। जयदयाल हो जाने के लिए नही। समझे ! सुना तुमने ?"

बलराम क्या उत्तर देता ? सुलेखा उसका हाथ पकड़े हुए थी।

कुछ देर बाद सुलेखा उसके सामने वाली खिड़की पर जाकर खडी हो गई। वह नीचे ताल देख रही थी शायद।

"ताल पर नावें है। कुछ पुलिस वाले, तैराक और लाल जर्सी में राजा शाह होगा। लैला सम्मद की खोज चल रही है। देखा, तुम्हारी कोई खोज नही है, मान लिया गया है तुम भाग गए। कुछ गलतफहमियां होने के बारे में शर्त लगाई जा सकती है। एक पुरुष और स्त्री, रात्रि में ताल पर, पिस्तौल की आवाज़, दोनों गायब। यही माना जाएगा कि गोली पुरुष ने चलाई और यदि किसीकी हत्या हुई तो स्त्री की। बिलकुल वैसे जैसे..."

सुलेखा कहते-कहते रुक गई। फिर बाहर देखती रही। चुपचाप।

# २
# खोज

स्विस काटेज
(१ जनवरी)

सुबह १०-३०

सुलेखा ने सोचा, मुझे नैनीताल अच्छा नही लगता। मैं पहली बार यहां शादी के बाद आई थी। जितना नैनीताल के लिए सुना था, जितना विवाहित जीवन के लिए सुना था, मेरे लिए सच न निकला।

रिक्शा अस्पताल से उतरती सडक से ताल के किनारे मुख्य सड़क पर पहुचा। रिक्शावालो ने अपनी चाल बदली, हाथ की घंटी अकारण बजाई। खुली धूप थी, सिर्फ हवा कभी-कभी ठडी लगती थी। नैनीताल की थोड़ी स्थायी आबादी, तल्लीताल के बाजार और कुछ मल्लीताल के ऊपर वाले बाज़ार मे सिकुड़ी थी। मुख्य मल्लीताल के बाजार की दुकानें इस समय बंद रहती है, सत्यनारायण पुस्तक और रिकार्ड्स वाला, राधा साड़ी एम्पोरियम, दो नये पंजाबियो की जर्नल मर्चेण्ट दुकानें, सभी रेस्तरां।

नैनीताल सीजन मे झूठी सुखेच्छाओ से फूला बैलून होता है। हाथ में उडता इतराता। बाद मे, एक फूटा सिकुड़ा रबड़ का टुकड़ा।

रिक्शा लाइब्रेरी तक पहुचा था कि चार्ल्स ने करीब-करीब सामने आकर रिक्शा को रुकने पर बाध्य किया। रंगीन कपड़ो मे, सर पर चौकोर ऊनी टोपी लगाए, स्विस काटेज का मालिक चार्ल्स—जो नैनीताल के बारे मे सुलेखा के मन मे आए तिरस्कार को झूठा करने की स्वयं पूरी शहादत था। बारह महीने नैनीताल ही रहने वाला, रेस्तरा और बेकरी का मालिक, साठ से ऊपर उम्र, टमाटर जैसे लाल चेहरे वाला।

"हैप्पी न्यू ईयर, मिसेज दयाल। हैप्पी न्यू ईयर।" वह हंसता हुआ

अपने दोनों हाथ मल रहा था।

सुलेखा रिक्शा से उतरी। "हैप्पी न्यू ईयर, चार्ल्स।" उसने अंग्रेजी में पूछा, "वैंटिना कैसी है ?"

"आओ, आओ ऊपर, खुद देख लो।" चार्ल्स ने तपाक से सुलेखा का बाया हाथ समेट लिया। सुलेखा ने बचने की प्रार्थना करने की बजाय विशेष स्विस काफी पीने का निमंत्रण मान लिया।

मुख्य सड़क से जरा-सा ऊपर जाकर, एक साधारण बंगले में विख्यात स्विस काटेज थी। वैंटिना ढके बरामदे के बाहर खुले में एक मेज़ सजा रही थी। वह शिष्टाचार सपन्न करने के बाद तुरंत काफी और चीज-केक लेने अन्दर चली गई।

चार्ल्स ने पूछा, "कल ही आई थी, क्यों ? दयाल रहेगा और तुम एक-दो दिन मे चली आओगी, क्यों ?"

"हां, इरादा तो ऐसा ही है।"

"तुम हर साल ये ही करती हो।"

हर चीज असली और शौकीन। चादी के चम्मच, विदेशी क्रॉकरी। वैंटिना ने मेज पर दो फूल पहले सजाए और कॉफी बाद मे रखी। कितनी कम खाने की मेजों पर सूक्ष्म को स्थूल भाग से यह प्राथमिकता मिलती है।

वैंटिना ने कहा, "प्रायरी मे सुलेखा जाड़ों में अकेले कैसे रह सकती है ? उस तरफ तो सब मकान बन्द होगे। आदमी के लिए विभिन्न है। मिस्टर दयाल तो राजाशाह के साथ कैम्पस मे घूमते रहते हैं। दिन-भर अकेले मकान मे तो नही रहना पड़ता।"

चार्ल्स ने कहा, "आपको प्रायरी की कहानी मालूम है, मिसेज दयाल ? यह सचमुच पादरियो का मठ था। उन दिनों उस ओर बहुत जंगल था और बाकी मकान नही थे। उस जंगल में आग लगी और प्रायरी भी उसकी लपेट मे आ गई। बहुत भीषण आग थी, पूरी रात और पूरा दिन बुझी नही। मठ के कुछ पादरी भी न बच सके। आग में नष्ट हो जाने के बाद वह पादरियों का मठ कही और स्थापित हुआ। कई साल बाद मेजर नार्टन ने यह बंगला पुरानी नीव पर बनवाया, कुछ हिस्सा तो शायद पुराना ही है। आपको कभी वहा भूत नही दीखा, मिसेज दयाल ?"

चार्ल्स स्वयं यह कथा सुलेखा को तीन-चार वार सुना चुका था। नैनीताल का इतिहास वखानने पर उसे अधिकार था।

"अभी तक तो नही दीखा। हा, एटमॉसफीयर तो वहुत है।"

वैटिना ने पूछा, "रात की पार्टी कैसी रही ? फैसी ड्रेस थी ?"

"इरादा तो फैसी ड्रेस का था, पर कोई तैयार नही हुआ।" चार्ल्स ने वात वदली, "सब वोट वाले नाव खीचकर चले जाते है। इधर दस-पन्द्रह दिन के लिए कुछ नावें निकालते हैं। तो आज पुलिस वाले खुली धूप मे सैर की वेगार ले रहे है।"

वैटिना ने कहा, "गोपाल ने वतलाया, खोज हो रही है। रात ताल पर पिस्तौल चली थी।"

"खोज करने वाला कौन है ! डी-वाई०, एस०पी० जोशी—उसे मैं आठ साल की उम्र से जानता हू। मुफ्तखोर और लाल वुझक्कड़ है। अपने हाथ की अगूठी भी नही खोज सकता है।"

वैटिना वोली, "चार्ल्स को सव अधिकारियो से चिढ़ है।"

"अच्छा, वचेगा जीवन, यदि आने-जाने, छिपने की आज़ादी पर भी दुनिया के जोशी प्रतिवध लगाने लगें। मैं तो उसे उस भले आदमी के वारे में कुछ नही वताऊंगा।"

वैटिना वोली, "कौन, वह कल शाम वाला हमारा चाकलेट लाजर ?"

"वह मेरे हाथ के वनाए चार प्याले चाकलेट पी गया। वेचारा भूखा लगता था।"

सुलेखा के मन मे कही विजली जागी। उसे कोने के टेवल पर वैठा वलराम याद आया। वेचारा भूखा लगता था।

चार्ल्स ने कहा, "उसने मुझसे कहा मैं एक सप्ताह की पेशगी दे रहा हूं। यदि उसके पहले या वाद गायव हो जाऊं तो मेरा सामान फेंक दीजिएगा। वह आज नही लौटा तो क्या ? उसे हक है गायव होने का—जहां तक मेरे द्वारा चलाई लाज का सवाल है।"

"चार्ल्स, तुम तो वेकार ड्रामा गढते हो ! उसके जैसे भले चेहरो के लडके सदा लौट आते है।"

सुलेखा ने भरसक अपने स्वर को स्वाभाविक रखकर पूछा, 'उनका

नाम क्या बलराम था ?"

"हां, मेजर बलराम। आप जानती है उसे ?"

"बहुत थोड़ा। मिस्टर दयाल की मामूली जान-पहचान थी।"

"दुनिया छोटी जगह है।"

नीचे से आया डाकिया स्टीवर्ड गोपाल को चिट्ठी दे रहा था।

फिर वह उनकी तरफ बढ़ आया। प्रायरी की एक चिट्ठी थी। सुलेखा ने ले ली। बोट हाउस क्लब का बिल था।

सुलेखा उठ खड़ी हुई। "मै अब क्षमा चाहती हूं। प्रायरी से लौटती हुई वैटिना की गर्म चाकलेट ले जाऊगी, चार्ल्स।"

साथ उतरते चार्ल्स ने हल्के से कहा, "ज्यादा चोट तो नही लगी न ? यह पार्टियां अक्सर ऐसे ही समाप्त होती है।"

## प्रायरी

(१ जनवरी)

### सुबह ११-१५

'लैण्ड्स एण्ड' जाने वाली चढाई से बाई ओर पर्वत मे एक सीधा, बिना चढ़ाई का रास्ता कटता है। उसके दोनों ओर लगे पुराने पेड़ो से छाया रहती है। थोड़ी दूर पर, सडक से दाहिने, चढाई पर अलग-अलग मकान है। यह रास्ता आगे चलकर प्रायरी की जायदाद मे खत्म होता है।

प्रायरी पत्थर और लकडी का बना दुमजिला मकान है। बाहर और ऊपर कुछ गोथिक शैली की सजावट है। यदि छोटे कमरों, कोनों, गहरी खिड़कियों वगैरह को न जोड़ा जाये तो, जगह के लिहाज से, प्रायरी छोटा मकान है। ऊपर दो बड़े मुख्य कमरे, नीचे अलग ड्राइंगरूम और डाइनिंग रूम, जिनको बांटती गैलरी से ऊपर जाने की लकड़ी की सीढी थी। नीचे मध्य आकार के दो कमरे बन्द रहते थे। एक रसोई मुख्य मकान के साथ थी और दूसरी बड़ी रसोई एक ढकी राह से जुडी कुछ दूर पर। पीछे खुले हिस्से मे एक पुराना लकड़ियों का टाल था। दो टीन की छत वाले कमरे। लक्ष्मण तो मुख्य छोटे [illegible] के छोटे कमरे में सोता था। बाहर के क्वार्टरों मे टूटी

चीजे, सूखी घास वगैरह जमा थी।

मकान की 'स्काउस्टिक' विचित्र थी। कही से कही फुसफुसाहट भी पहुंच जाती और कही से कही चीख भी न आती। इस मकान की कुछ अपनी आवाज़ें इधर-उधर वजती रहती थी। खास तौर से तेज़ हवा के दिन।

मकान की सजावट और ज्यादातर फर्नीचर मकान के साथ आया था। पुराना भारी लकडी का। जयदयाल को चमड़े-मढ़ी कुर्सियो का शौक था, वह कई थी। कमरों मे लकडी की पेनलिंग थी। फायर प्लेस मे, चिमनी वन्द करके वड़े विजली के हीटर लगा दिए गए थे। सुलेखा ने अपने कमरे में पेपरवैक किताबों के लिए एक रैक और इच्छानुसार रोशनी कर सकने लायक कई तरह के लैम्प और ट्यूब्स लगवाई थी।

सुलेखा ने अटैची केस और फिर वारी-वारी दो हीटर, दो कम्वल अपने कमरे से निकालकर वाहर जीने मे रखे। वह दुवारा अन्दर अलमारी से चेक वुक और कुछ छोटी चीजें अपने बैग मे वटोरने गई थी कि उसे पहली वार कुछ असाधारण का सशय हुआ। वह तय नही कर पाई कि उसने कुछ सुना। विना ध्यान दिए, कुछ असाधारण देखा हुआ, याद आया और फिर खो गया। जो अनुभव एक ठड के झोके की तरह हुआ था, वह सच मे किसी कोने से आई ठंडी हवा का स्पर्श था या, मन की वनाई उसके डर की अभिव्यक्ति!

मकान मे कोई और है?

सुलेखा को याद आया, नीचे रिक्शा वाले है और वह उन्हे वुला सकती है। अपनी अलमारी के सामने वह ठिठककर खडी हुई, मुड़ी। उसके कमरे के सामने सीढी से दूसरी ओर जयदयाल का कमरा था। दुवारा उसपर भय की झिझक आने से मालूम हुआ कि उसे भय जयदयाल के कमरे से है।

अपने खुले दरवाजे से उसने देखा कि सामने जयदयाल का दरवाजा वन्द है। दरवाजे मे लगे ताले, उसके और जयदयाल के कमरे में, एक जैसे थे और किसीकी भी चावी से खुल जाते थे। क्या जयदयाल के वन्द कमरे के दरवाजे का ताला खुला हुआ था? उसका बन्द ही रहना तो साधारण नही था, जयदयाल इस वारे में लापरवाह था। पर कल रात्रि उसने स्वयं जयदयाल का कमरा पार्टी मे जाने के पूर्व बन्द किया था।

हिम्मत करके नीचे उतरने की वात थी। फिर वह कुलियो के साथ आकर

तसल्ली कर सकती थी। क्या कमरे मे जयदयाल स्वयं छिपा था। पर अपने मकान मे, और सुलेखा से छिपने का तो कोई कारण नही था! सुलेखा ने लम्बी सास और हिम्मत भर कर कमरे से बाहर कदम रखा। वह करीब-करीब भागती हुई सीढी से उतरी।

सुलेखा दो रिक्शा-कुलियो के साथ ऊपर आई।

"ठहरो, शायद बिल्ली अन्दर रह गई है। गन्दा कर देगी।" एक कुली उसके कहने पर सामान उठाते रुक गया। सुलेखा ने बढकर जयदयाल के कमरे का दरवाजा खोला। ताला नही लगा था। कमरे मे हवा बासी थी। कुली कमरे मे इधर-उधर देख रहा था।

सुलेखा ने स्नानागार खोला। फर्श गीली थी, वाशबेसिन भी शायद सूखा न था। उसने लटके हुए तौलिये परखे, इस्तेमाल हुए थे।

"यहां नही है। बिल्ली नही है।" उसके पीछे कुली ने कहा।

सुलेखा शीशे के नीचे कांच की पाटी पर रखे कंघे को गौर से देख रही थी। वह चौंकी। "हां, यहा नही है," पर कंघे मे लम्बे भूरे पीले बाल थे। लैला सम्मद।

सुलेखा ने बाथरूम और जयदयाल का कमरा बन्द किया। ताला-चाभी घुमाकर बन्द किया। फिर कुछ सोचकर वापस खोल दिया। नाथ और लैला को जयदयाल क्या पहले प्रायरी लाया था? वह खुद तो बरेली से चार बजे के करीब पहुची थी। उसके यहां आने पर लक्ष्मण के अलावा प्रायरी मे कोई नही था। जयदयाल कपड़े बदलकर नीचे जा चुका था। तैयार हुई सुलेखा ने सदा की तरह उसकी प्रतीक्षा की थी, कह गए आठ बजे लौटने की बजाय नौ बजे तक। फिर वह अपनी फैन्सी ड्रेस यानी मूंछें लगाने में व्यस्त हुआ था। जयदयाल किसी धुन मे था, क्योंकि बराबर उसकी बेसुरी सीटी सुनाई देती रही थी।

न चाह कर भी जयदयाल के उसके कमरे मे आने पर वही हुआ था जो वह जानती थी, सदा होगा। झगड़ा, गाली-गलौज, चीखना।

कुली नीचे उतर गया था। सुलेखा ने अपने कमरे का ताला बन्द कर दिया और वह तेज कदमो से नीचे उतरी।

बाहर के मुख्य दरवाजे पर ताला लगा चुकने पर उसे याद आया कि वह

थर्मस लेना भूल गई है। इसके लिए गैलरी के पार पिछला दरवाज़ा खोलकर वरामदे से छोटी किचन के वगल वाले स्टोर में जाना पड़ेगा।

इस वार विना हिचक, विना कुली को साथ ले जाने की सोच, सुलेखा ने ताला खोला। उसने भारी पर्दे हटाकर जव पिछले दरवाज़े की चिटखनी खोलने को हाथ उठाया तो पाया कि ऊपर का वाया काच टूटा हुआ है।

किचन और फिर उससे स्टोर मे पहुचकर उसने लाल, काली विन्दियो वाला थर्मस लिया। क्या हवा मे वह रोगी, मीठी सुगन्ध फिर उड़कर आई थी ? वह वरामदे पर एक क्षण रुकी। लकड़ी के टाल के पार, टिन की छत वाली कोठरी का दरवाज़ा पूरा वन्द था। सूखी घास, कोयले वाली कोठरी का दरवाज़ा भी क्या वन्द रहता था ? सुलेखा कुछ देर उस वन्द दरवाजे को देखती रही। कोई डर नही था।

सुलेखा गभीर चिन्ता मे धीरे कदमो से वाहर रुके रिक्शे की ओर लौट गई।

## लिलि काटेज
(१ जनवरी)

### दुपहर १२-००

राजाशाह ने कहा, "जिन नही, रम।"

वह ताल पर खोज के नाटक को पूर्ण कर लौटा था। दिन के वारह वज रहे होगे, हीरा तो अभी सो रही थी। हमीरा ड्रेसिग गाउन और ऊनी घर के जूतो मे उसके लिए रम लाने उठी।

राजाशाह अपने ओठो को काट रहा था। उसका हाथ वार-वार उसकी मोटी मूंछो को जाकर खीचता। यह उसकी चिन्ता की भगिमा थी, सोचने का वाहरी प्रयास था।

साला जयदयाल ! अपनी जोरू के पल्लू के पीछे छिपा है। राजाशाह ने षड्यन्त्र के साप को अपने पैरो के नीचे खिसकते यदि न पहचाना होता ? अव लैला को उस दिल्ली के काठ के उल्लू के साथ भगा दिया।

नही; लैला तो सिर्फ विदेशी मुर्गी थी, क्यो ? सिर्फ मुर्गी पढ़ा रहा हूं,

क्यों ? हमे उल्लू वनाएगा कि लैला माल का पेमेण्ट नही लाई थी। हीरे नहीं लाई थी। और आराम से ठीक होकर कहेगा, अलिफ ने कीमत यही भेजी है, प्यारे। मार्केट मन्दा पड़ गया है। फिफ्टी-फिफ्टी पार्टनर। फिफ्टी की मां और फिफ्टी की तेरी वहन।

साला जयदयाल ! लैला को गायव कर दिया। क्योंकि उसके शक को भांप गया था। कैम्प ले जाकर मुर्गी को चीर डालता, जव तक नही उगलती कि कितने अंडे पहुंचाये गए है। हीरे वीस थे या शायद तीस।

पर हीरे थे कहा। सुबह से पार्टी तक, जयदयाल को लैला के साथ अकेला नही छोड़ा था। साला, प्रायरी दिखलाकर वहा ठहरने का लालच दे रहा था। पर जलन से झुलसते नाथ ने लैला का हाथ नही छोड़ा था। आखिर-कार नाथ और लैला रायल मे ही ठहरे थे। जव नाथ और लैला के पीछे-पीछे जयदयाल दस-पन्द्रह मिनट के लिए गायब हुआ था तब ही हीरों की हेरा-फेरी हुई होगी। राजाशाह ने गलत अनुमान लगाया था कि नाथ लैला को चिपकाए रहेगा। साला नामर्द !

राजाशाह ने जयदयाल को पूरा टटोल डाला था। कही चमड़े की थैली नही थी। कपड़ों की हर जेब, लाईनिंग, रूमाल, जूते तक देख डाले थे। ओवर कोट में भी कुछ नही था। क्या जयदयाल ने हीरे कही क्लब में छिपा दिए थे— दो-ढाई लाख के हीरे—किसी कोने मे नहीं ? ·· नही, सुलेखा को देना जयदयाल के अपने स्वार्थ मे नही था। वह बेटी तो स्वय उससे तीन लाख मांग रही थी और उसी कारण तलाक देने रुकी थी। जयदयाल ने राजाशाह की तरह सुलेखा को भी धन्धे की असली कमाई से नावाकिफ रखा था। फिर राजाशाह ने सुलेखा का बैग, कोट तो देख डाला था। क्या जयदयाल का कोई दूसरा साथी हीरे लेकर उड़ गया। जयदयाल अन्य साथियों में विश्वास करनेवाला था तो नही।

राजाशाह ने चक्कर खाकर दुबारा ओठ काटने शुरू कर दिए।

"अभी दिन मे वाहर जायगा ?" हमीरा पूछ रही थी।

"हां, ऊपर जाना है।"

"साली मोटी के पास ?"

"हां, सरोज से काम है।" राजाशाह ने हमीरा को आंख दिखलाई।

घसियारे की औलाद घसियारिन ही रहेगी। हीरा हमीरा का बाप नेपाली घास का ठेकेदार था। कहती है, मिशन स्कूल मे आठ क्लास तक पढ़ा है। रायल फेमिली से सबधित है। न साली हिन्दी बोल सकती है, न अंग्रेजी। हा, शौक और व्यसन देशी और विदेशी दोनों बटोरती है। शराब, तो हां, सिगरेट, तो हा, हशीश की सिगरेट, तो डबल हा। और कितनी ही बार, कैसे ही सेक्स के लिए, सदा, हां।

आखिरकार इस जीवन मे सेक्स से भी कुछ महत्त्वपूर्ण है ? राजाशाह ने संजीदगी से अपने को सुनाया, जैसे धन कमाना। खास तौर पर पेमेण्ट के हीरे पाना।

"एक बात सुनेगा, राजा ?"

"नही।" हमीरा की एक बात वही बात होती थी।

"जयदयाल दाहिने हाथ मे एक सोने की अंगूठी पहनता था। याद है न!"

"हा, जैसे उसकी बीबी दाहिने मे पहनती है।"

"वह अंगूठी कैम्प मे खीचने की कोशिश की थी। याद है न!"

"याद है—आगे बोलो।"

"कल रात उसके हाथ मे नही थी। कैसे सोच डाला।"

राजाशाह ने मुर्ग-मुसल्लम का टुकड़ा प्लेट पर रख दिया।

"तूने यह कब देखा ? जयदयाल से पूछा था।"

"नही। बत्ती बुझने के पहले वह हाथ टेबल के नीचे लाया था। हमने सोचा, हमको पकड़ने के लिए नीचे किया है। पर वह वापस मेज पर हाथ ले आया। तब देखा उंगली खाली थी।"

सुलेखा की उसको दूर रखने की जिद से कुछ शक उसको भी हुआ था। पर अपनी जगह किसी और को बैठा, भाग जाने मे जयदयाल का स्वार्थ नही था। धन्धा तो चल रहा था, उसके विशाल ठेके के जंगलों मे उगाने के स्थान तो बढाए गए थे। बरेली के केमिकल वर्क्स में सामान आया था, जिसे जयदयाल ने, जो स्वय ट्रेण्ड फार्मेस्युटिकल केमिस्ट था विदेश से धीरे-धीरे जुटाया था। लैला को भगाकर राजाशाह का कुछ हिस्सा खिसकाना और राजाशाह को उसके असिद्ध शको से सताना—इतनी तो उसके जाने-पहचाने

जयदयाल की भूमिका थी।

फिर भी इस संभावना को भी मद्देनजर रखने की जरूरत है। राजाशाह ने सोचा।

हमीरा ने देखा राजाशाह उठने की तैयारी कर रहा है। आखिरकार उसने राजा को एक आइडिया तो दिया था। यह तो वह इन्कार नही कर सकता। यही मागने का समय था।

"राजा, हमारा सिगरेट खतम हो गया।"

"तो बाजार से मंगवा लो।"

"बाजार वाला नही, दूसरा।"

राजाशाह बिलकुल चिढकर मुड़ा। शिकारी, तैराक, बाहरी जीवन के व्यसनी, कठोर पेशियों वाले राजाशाह को ऐसे नशे के दास या दासियों से सख्त नफरत थी।

कभी-कभी सुट्टा खीचना एक बात थी। उसके जैसे समर्थ मर्द के लिए नही भी जरूरत हो, मस्ती के लिए इस्तेमाल के लिए तो ठीक बात थी। यह चाट पड़ना, तड़पना दूसरी बात थी। राजाशाह ने अपना चमड़े का कोट पहना और खटपट करता बाहर चल पड़ा।

कमरे में हमीरा ने उसे, मर्द जात को, भद्दी गाली दी।

**अस्पताल**
**(१ जनवरी)**

दिन १२-००

बलराम ने सोचा, एक दूसरे मे फिसल जाता है। मन के नेतृत्व जाने के बाद—याद आना, दिवा-स्वप्न, स्वप्न ! नेपथ्य के संस्कार रहस्यमय गहराई के होते जाते है।

प्रारम्भ स्मृति से होता है। वह रीगल के पास बस का इन्तजार कर रहा है। उसे मालूम है, बस से पहुचने की ज़िद से देर हो सकती है। असल में वह उस पार्टी मे जाना ही नही चाहता जहां कि निमत्रण बेनामी हो। आनन्दा तैयार हो रही होगी, वहा दिल्ली के सब लोग होगे। सप्ताह में एक बार वह

पार्टी मे नही उतर पाती है तो उसके किसी आत्मविश्वास को ठेस लगती है।

किसी छोटे हब्शी राज्य का गणराज्य दिवस। जहा भूतपूर्व सार्जेण्ट मेजर, जनरल बनकर राष्ट्रपति हो गया था। जनमेजय ने प्रेस-निमंत्रण उसको दे दिया था। वह स्वयं किसी मंत्री के घर जा रहा था। शायद ब्रिगेडियर नन्दा मिल जाएं, जो उसे फ्रंटियर प्रशासन सेवा मे नियुक्ति पाने का तरीका बतलाने वाले थे।

बरसाती की सीढियां चढ़ते बलराम सोच रहा था, युद्ध के सिद्धांतों से प्रेम के सिद्धांत पहचाने जा सकते है। जैसे दूसरे को विजय देना, युद्ध शास्त्र ने यह एक चाल है, प्रतिद्वन्द्वी को गलत परिस्थिति मे डाल देना। प्रेम मे प्रतिद्वन्द्वी के युद्ध-उद्देश्य को अपने विरुद्ध पूराकर उनकी सारहीनता स्पष्ट कर देना। विजय-पराजय सरल है; युद्ध का अन्त कोई नही चाहता। आज, अभी अपने को संतुष्ट, सुखी मान लेने की भीपणता से हम कतराते रहते है।

"आप पहुंच गए—भगवान का भला हो।"

वह नहा चुकी थी, पर तैयार होने के लिए रुकी थी। बलराम को सदा की तरह घर पहुंचते ही भूख सता रही थी। पर रसोई टटोलने जाना गलत होगा, क्योकि यदि खाना न हुआ, तो आनन्दा सोचेगी कि सिर्फ उसको नीचा दिखलाने को (मुझसे खाना नही बनता, तुम्हे मालूम है) यह किया गया। फिर वे लोग पार्टी मे जा रहे है। पर पार्टी मे भूख मर जाती थी, यह उसकी विवशता थी।

"नीला सूट पहन सकते थे और काले जूते ?"

"अरे चलेगा।"

"तुम्हे मुझे साथ लेकर बाहर निकलने का अब शौक नही रहा, न ?"

शब्दो का अर्थ कुछ भी हो, इस वाक्य का अर्थ था, वह नीला सूट और काले जूते पहन ले, वरना। यह उनके संबंध की हीन स्थिति थी कि आनन्दा ऐसी हो गई थी कि, चलो नीला सूट पहिनो, कहने की जगह, वह ऐसी बात कहने को मजबूर होती जिसमे कि अंशतः दूसरी चुभन हो। अक्सर यह दूसरा पलीता स्वयं सुलग जाता है।

सार्जेण्ट मेजर जो एक रात मे पूरे जनरल हो जाते है, उनपर कुढ़ता बुदबुदाता बलराम कपड़े बदलता रहा। उसने झुककर जूतो को ब्रश से साफ भी कर लिया। बाथरूम के शीशे के सामने बाल भी ठीक कर लिए।

वह कमरे मे पहुंचकर आनन्दा का अनुमोदन पाने बढ़ा।

"फैंसी ड्रेस तो है नही !"

बलराम ने देखा, वह अपनी मूंछों को ताव दे रहा है। मूछे नकली थीं, ऊपरी ओठ से चिपकी हुई। वही कल रात वाली मूछे, लन्दन की विशेष प्रकार की कर्नल मूछे।

बलराम अंधेरे मे दर्शक दीर्घा मे बैठ गया था।

"कैसा लग रहा हू ?" जयदयाल ने पूछा। उसके संतोष को पूछने की आवश्यकता तो थी नही।

प्रतीक्षा करने वाली पत्नी, सुलेखा, ने शीशे के सामने तैयार होना आरम्भ कर दिया था।

"फर्स्ट क्लास, बिलकुल फर्स्ट क्लास," सुलेखा के स्वर मे कुछ नकल उतारना था। और चिढ थी।

"लो, तुमको क्या हो रहा है ?" जयदयाल अपनी उमंग में कुछ अधिक न रुका।

"बरेली से मुझे क्यों बुलाया गया है ?"

"क्यों, नये साल की पार्टी है··"

"जैसी पिछले साल कैम्प में मनाई गई थी !"

"बोट हाउस क्लब मे—सरकार ! डी० आई० जी० फोरेस्ट सक्सेना, उसकी बीवी, मय जोड़ा रिश्तेदार होंगे—आपको कोई घबराहट होने की वजह नही। दिल्ली मे दो पर्यटक मिले थे, वे भी आएंगे।"

सुलेखा के इतने घने केश है, बलराम ने नही देखा था। कंघी का हाथ उनमे खो जाता फिर छुटता था। सुलेखा चुप थी। जयदयाल पीछे पलंग पर बैठ गया।

"एक तरह से ठीक है। यह हमारे साथ का आखिरी नव वर्ष होगा।"

"तुम मुझे कभी नही छोड़ोगी, सुलेखा ? सब पति-पत्नी लड़ते है। सब पति थोड़ा या ज्यादा हरामी होते हैं। पर हिन्दुस्तानी पत्नियां, जिनके दूसरा यार नही होता, पति को नही छोड़ती।"

"अच्छा। तो फिर मेरे तीन लाख लौटाने में क्यों देरी लगा रहे हो ?"

जयदयाल सिगरेट पीता रहा।

"देखो, जय, तुमने तीन महीने मागे थे। छह महीने होने वाले है। तुम्हारे नये अफीम और चरस के धंधे की कमाई लाखो मे है, हजारो मे नही। तुम्हारा और राजाशाह राक्षस का हिस्सा बराबर भी हुआ तो उसने रामगढ मे सेवों का बाग लिया है, पिथौरागढ मे जमीन ली है। फिर राजाशाह को धोखा तो दे ही रहे होगे।"

जयदयाल ने कहा, "वाह री दुनिया, जिसका मेरे पार्टनर को अभी शक ही हुआ है, उसका मेरी पत्नी को पूरा विश्वास है। वाह।"

"मैं मार्च के आगे नही रुकूंगी। यह मेरी चेतावनी याद रखना। मेरे पैसे वापस करो और हम लोग सभ्यता से अलग हो सकते है। नही तो जितने साल मैंने तुम्हारे नाम की पटिया पहनकर जेल काटी है उससे दुगुनी तुम्हे न काटनी पडे। फर्स्ट क्लास केमिकल वर्क्स और अलिफ लैला के किस्से प्रकाशित हो जाएंगे।"

"स्वीट हार्ट, ब्लैकमेलर होना तुमपर फबता नही।"

"···फर्स्ट क्लास केमिकल्स कुछ दिनों में वही बचेगा जो उसका प्रास्पेक्टस कहता है। यदि तुम लौटकर जाकर देखोगी तो पाओगी कि विशेष लेबोरेटरी गायब हो चुकी है।"

"वह जो तुम्हारी 'बहन' सिंगापुर से आई थी··?"

"बिलकुल ठीक। तुम उस गैंडे राजाशाह से कितनी बुद्धिमान हो। माल का किमाम बनाने के लिए सिंगापुर मे बहुत-सी सहूलियतें है। फिर डालर अमेरिकी मार्केट से दुगुने मिलते है।"

"दुगुने खाक ! यहा से कच्चे माल पर राजाशाह से आधा और सिंगापुर से आधे से ज्यादा हिस्सा मिलेगा।"

जयदयाल ज़ोर से हंसने लगा। "आखिरकार पत्नी किसकी हो।"

"राजाशाह इस बारे मे क्या कर रहा है?"

"चौकीदार कुत्ते की तरह मेरे इर्द-गिर्द घूम रहा है। उसे शक है कि अलिफ के भुगतान मे आए हीरो का पूरा आधा हिस्सा उसे नही मिलता। वह तो पागल हो गया है। जिससे मैं बात कर लूं वही अलिफ का कैरियर दीखता है। आज मैंने हसकर टैक्सी से उतरे एक जोड़े को पार्टी के लिए बुला लिया, तो वह उनके ऊपर डबल निगरानी कर रहा है।"

"कौन है ये लोग ?"

"स्क्वाड्रन लीडर नाथ और एक लैला सम्मद।"

सुलेखा ने मेज पर वापस लिपस्टिक रखी। "तुम्हारी अवधि कल तक की है, जय ! मुझे कल शाम के पहले ही तीन लाख वापस चाहिए। यदि तुमने मुझे पैसे नही दिए तो मैं बरेली नही, सीधे बम्बई जाऊंगी। मेरे भाई के वकील तुमसे आगे बात करेंगे।"

"क्या मतलब ? क्या तुम भी राजाशाह जैसी मूर्ख हो ? हर अजनबी को अलिफ का कैरियर मान लोगी।"

"कैरियर तो कोई भी होता है। तुम्हारी उससे पूर्व पहचान जरूरी नहीं, बल्कि नही होना जरूरी है। सिर्फ आने का समय और जगह की ही सूचना होती है। लानेवाला कोई हो सकता है, जिसके पास नोट का टुकड़ा हो। लेने वाला कोई हो सकता है, जिसके पास दूसरा टुकड़ा हो,—कोई स्क्वाड्रन लीडर या लैला भी हो सकता है।"

"हो तो कोई भी सकता है। इसके मतलब यह नही कि—है।"

"मैं अरबी नाम सुनकर निश्चित नही हूं पर तुम्हे आज भुगतान मिलेगा। नही, मुझे मालूम है, तुम्हे आज हीरे मिलनेवाले है।"

जयदयाल चुप रहा।

"भूल गए। मैंने पूछा था आखिर मुझे क्यों बुलाया ! फोन पर तुमने मुझसे कहा था, फैन्सी ड्रेस पार्टी है। पर फैन्सी ड्रेस पार्टी है नही। तुमने मुझे मूंछों का डिब्बा लेकर आने के लिए निमंत्रण दिया था, क्योंकि उसी डिब्बे में तुम्हारे डालर रहते है और उनमें वह फटे डालर का टुकड़ा भी।"

जयदयाल ने कहा, "हरामज़ादी !..."

"बिलकुल ठीक। डालर मेरे पास हैं। तुम कभी भी उन्हे मांग सकते हो। पर मुझे वापस लाकर हीरे देने होगे। समझ गए !"

"क्या तुम्हे फिक्र नही होती ?—किसी दिन तुम्हारी सुराहीदार गर्दन मरोड़ दूगा।"

"बिलकुल नही। इतना प्यार तुमने मुझसे कभी नही किया। मेरे मर जाने से तुमसे वसूली नही रुकेगी। अशोक के वकील ज्यादा बेदर्दी से वापस ले लेंगे।" सुलेखा ने आखिरी बार आधा घूमकर अपने को देखा। "चलें।"

वे लोग अंधेरी सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। उसने पूछा, "तुम शायद तीन लाख का सवाल मुझसे बदला लेने के लिए ज्यादा उठाती हो, अलग होने की जरूरतों के कारण कम। और इसीलिए मैं देने को टालता हूं।"

"तुम दोगे और हम अलग होंगे।"

अगले मानचित्र मे उसने देखा कि वह, यानी बलराम और आनन्दा सड़क पर उतर आए हैं।

बलराम अपनी कल्पना से घबरा गया। पति-पत्नी युद्ध के लम्बे पर्यवेक्षक होने के नाते वह प्वाइंट्स गिनने, सही और गलत चालों को पहचानने, उन्हें याद करके उस वार-गेम (युद्ध-खेल) को दुबारा खेलने का आदी था। पर उसकी कल्पना से यह युद्ध-खेल नही बन सकता था। उसकी कल्पना इतनी सारी घटनाएं नही बना सकती थी। दो अन्य जीवन का इतना ब्योरा नही जोड़ सकती थी।

सुलेखा के व्यक्तित्व मे क्या सच मे इतनी तेज इस्पात की धार थी? ..

वहा आई नर्स ने पाया कि बलराम अचेत है। उसके खुले मुख और भाव-हीन ढंग से, निद्रा की कोमलता व्यक्त नही होती थी। उसने लक्ष्मण को उठा और डाक्टर को बुलाने तेज़ी से गई।

## दिन १२·१५

सुलेखा के लौटने तक डाक्टर जा चुका था। लक्ष्मण ने कहा, साहब को फिट आ गया था, सांस खो गया था। अब ठीक है।

बलराम के सोते चेहरे पर, विशेषतः उसके मस्तक पर गहरे और कठिन चिंता मे फंसे होने की सिकुडनें थी। सुलेखा का बहुत मन हुआ बलराम को हिला कर जगा दे—स्वप्न के दुःख से अलग करने के लिए इतना नहीं जितना कि अपने मन में जो सुन्दर और नया उसे जन्मता लगता था, उसे दिखलाने! उसे शब्दो मे बतलाने मे बहुत संकोच था—यदि शब्दो मे यह किसी ढंग से भी उसे इंगित से ज्यादा किया जा सकता था, जितना कि दूसरा पहचान सके, उतनी ही बात थी!

लखनऊ के विख्यात इसाबेला गर्ल्स कालिज की स्मार्ट सुलेखा, जिसके दिमाग की जगह अच्छा दिमाग था। सफल परिवार के लाड़ मे थोड़ी-बहुत

बिगाड़ी गई, समाज में बिलकुल आश्वस्त। जो विवाह के प्रतिकूल संघर्ष में जयदयाल से हारी नहीं। "हीरे की तरह शमा।"

मैं कितना बदल गई हूं। जहां रोज पहचानती थी, उससे कितनी दूर आज अपने को पहचान रही हूं।

लक्ष्मण ने याद दिलाई, रात-भर नही सोए है आप। तनिक आराम कर लेते। हम बैठे हैं। उठे, तो उठा देगे।

## शाम ५ बजे

शाम होने मे ज्यादा देर नहीं थी। सूरज की रोशनी खिड़की से उष्मा-हीन और तिरछी हो गई थी। उसकी गर्दन शायद अकड़ गई थी और गले पर अब भी वही बाहरी दबाव अनुभव होता था।

उसे मन व्यथित करनेवाले स्वप्न दीखे थे। इधर-उधर के अंश याद आते, उसके आनन्दा के झगडे से टुकड़े, मन में उमड़ी जयदयाल और सुलेखा के कलह की कल्पना के चित्र, सब कुछ एक-दूसरे से घुला-मिला, उलझा। सोचो, सुलझाने की चेष्टा करो तो सिर मे दर्द होने लगता।

हीरों की बात थी। कितने हीरों की बात, कुछ याद नही आता। सोने या जागने पर, धीरे-धीरे बढ़ती उदासी में फर्क नही पडता था। बलराम सोचता, इस परिस्थिति को भी सह लूंगा। कुछ दिनों मे बीत जाएगी। फिर आगे नही बन्द गली है।

स्वप्न में दीखी सुलेखा कुछ-कुछ याद आती थी। किसी स्त्री की असलियत कौन जानता है, बिना उसके साथ कई वर्षों रहे। आनन्दा को देखकर कोई कह सकता था कि वह स्वभाव से इतनी जिद्दी होगी? बलराम के मन की एक कल्पना थी कि यदि वह बेहतर और अधिक सफल व्यक्ति होता तो शायद आनन्दा मे गुण विकसित हो जाते। उसके जीवन में कहीं न पहुंच सकने की एक कीमत आनन्दा का दुखी विघटन भी था।

लक्ष्मण उसे उठा देखकर चला गया था। बीच का दरवाजा बन्द था।

पलंग [illegible] बक्सो के बीच अंगूठी गिर जाने पर आनन्दा ने कहा, "मुझसे [illegible] 'लीलाराम' कनाट प्लेस से बत्तीस रुपये का [illegible] का छल्ला [illegible] आनन्दा की अनुपस्थिति मे ढूढकर [illegible]

वापस ड्रेसिंग टेवल पर रख दिया था। पर फिर आनन्दा ने उसे पहनना छोड़ दिया।

मन मे किसी और स्मृति ने कुरेदा। हमारा कश नही लोगे ? हमीरा। वलराम को मज़ाक देर में समझ आते थे। हमीरा की सिगरेट हशीश की थी। या कश लेने मे निमन्त्रण था। नही-नही। जब वह मुख्य मेज़ पर आकर सुलेखा और हमीरा के वीच वैठा था, उसने हाथ टेवुल के नीचे किए थे। इसपर उसकी दाईं ओर वैठी हमीरा ने, तैयारी में अपने वैठने का ढंग वदला था। शायद जयदयाल निकट वैठी हमीरा पर हाथ लगाए विना न रहता था। वलराम ने नाटक को विना पहचाने अपने हाथ फिर टेवल के ऊपर ले लिए थे। क्या यह व्यवहार जयदयाल के स्वभाव के इतना विपरीत था कि सुलेखा मे शक का सूत्रपात हुआ। नही, सुलेखा तो उसे एकटक चांदी का शीशा लौटाने के समय से ही देख रही थी। नही-नही। जो याद आने का अशक्त हठ कर रहा था, वह यहा कही हुआ था। हमीरा उसके हाथों—वाये खाली हाथ को घूरकर देख रही थी। वह कुछ पूछने ही वाली थी कि वत्तियां वुझ गईं।

वलराम को याद आ गई। जयदयाल ने वाये हाथ मे फसी सादे सोने की अंगूठी उतारने का प्रयास कर छोड दिया था। वलराम के वायें हाथ मे उस अंगूठी की कमी ही हमीरा ने लक्ष्य की थी। यह स्मृति थी।

अपने ही प्रयास से अपना ही मन खटखटा कुछ पूछना, सुलझाना, समझना, क्या सवसे वडा सुख नही था।

## शाम ५-३०

सुलेखा हरी साड़ी मे, सोई, नहाई, धोई, उसके सामने कुछ मुस्कुराती और मुस्कुराने को तत्पर, पर जैसे अनुमति चाहती।

किसीका उमंग में होना, दूसरे को भी उमग में पहुंचाता है—प्रश्न और चिन्ताएं छोड़कर।

"अव ठीक हो न ?"

गर्दन कड़ी थी, परन्तु सुलेखा उसकी आखों में हां, ना या लम्वे वाक्य भी पढ़ सकती थी।

लक्ष्मण ने आकर कहा, "सरोज वाई आई है—नीचे।"

सुलेखा चिन्तामय हुई और घबरा उठी। वह क्षण अन्य क्षणों की तरह मिट गया। "सरोज को तो यहां बुलाना ही पड़ेगा। इसे राजाशाह ने भेजा है। कुछ भी उत्तर देने का प्रयास न करना।" सुलेखा ने स्लिप बुक और पेन उठा लिया।

"मै उसे लाने जा रही हू।"

बलराम ने उसे बायां हाथ उठाकर रोका। "क्या है?"

बलराम बाये हाथ में अंगूठी की जगह दिखला रहा था।

"जयदयाल बाये हाथ में अंगूठी पहने था? किसीने खाली अंगूठी लक्ष्य की? ओह!"

सुलेखा ने अपना हाथ फैलाया। उसके दाहिने हाथ मे वैसी ही सोने की अंगूठी थी।

"ठहरो लाती हूं। मेरे पास दूसरी है।"

सुलेखा अपने कमरे मे जाकर, हाथ में एक सोने की अंगूठी लेकर लौटी। बलराम का बाया हाथ अपने हाथ में लेकर उसने वह अंगूठी उसे पहना दी। पहनाते समय बलराम ने देखा कि सुलेखा के हाथ से उतारी अंगूठी की जगह खाली है। अपने हाथ की अंगूठी उसके सामने उतार देने की जगह, सुलेखा ने दूसरे कमरे से उसे लाने का नाटक किया था। सुलेखा के गाल किसी लज्जा से लाल थे।

## शाम ६-००

सरोज और सुलेखा बाई ओर स्थित सोफे पर बैठी।

सुलेखा जोर-शोर से उसकी हालत का आतंक जमा रही थी। "डाक्टर दास ने एक सप्ताह का पूरा आराम बतलाया है। आज दिन मे फिट आ गया—इतनी कमजोरी है। दिन मे चार सुइयां दे रहे है। पट्टी तीसरे दिन खुल जाएगी। सबसे अधिक चिन्ता लेरिन्कस की चोट से है। हमेशा गले पर हाथ रख देते हैं। यदि न सुधरा तो दिल्ली या बम्बई ले जाऊंगी। उठने, चलने लायक हो जाए। इन बातों में कोई रिस्क नही ले सकते।"

"बिलकुल नही बोल पाते? धीमी आवाज मे भी नही।"

"नही। सबेरे डाक्टर दास ने प्रयास किया था।"

लक्ष्मण चाय की ट्रे लेकर आया।

सुलेखा ने पूछा, "थर्मस की चाकलेट कहा है ?"

सरोज ने प्रश्न किया, "जयी के लिए चाकलेट ?"

"हा, डाक्टर की आज्ञा है।"

मग और प्लेट आने पर सुलेखा साधिकार पलंग पर बैठ गई। कुछ उसके और सरोज के वीच मे।

वहां से सुलेखा ने मज़े में प्रश्न किया, "राजशाह क्या कर रहा है ?"

"यहां आने की मनाही तो डाक्टर दास ने फोन पर लगा दी है। वह दिल्ली से आई लैला सम्मद को ढूढ रहा है।"

"क्यो, ऐसी खोज लायक तो वह लड़की नही है।"

"तुम गलत समझ रही हो। विजनेस का मामला है। वह लड़की जयदयाल और राजा के व्यापार के किसी जरूरी काम से आई थी।"

सुलेखा ने उससे विना पूछे मग दुवारा भर दिया, अपनी देह की आड मे उसका वाया हाथ अपने हाथ मे ले लिया। वलराम ने सोचा, जो अकेले मे कठिन है, वह दूसरे के सामने, उससे छिपकर इसके लिए सरल है।

सरोज कह रही थी, "राजाशाह सच मे चिन्तित हैं। सुलेखा, कोई वडी वात अटकी है।"

"तो खोज ले मिस लैला सम्मद वह।"

"खोज तो रही है। मल्लीताल से नाव पर चढी थी। साथ मे वह दिल्ली वाला आदमी था। नाव तल्लीताल के घाट पर है, पर दोनों गायव हो गए है।"

"कौन दिल्ली वाला ? नाथ!"

"नही। तुम्हे क्या याद नही ? पार्टी के कमरे मे ही एक अजनवी कोने में बैठा था। चुपचाप, अकेला, काफी आकर्षक, रहस्यमय।"

"हा। कुछ याद तो आता है।" सुलेखा ने उसका हाथ दवाया।

"पर वह तो लैला को घूर भी नही रहा था। उसने कैसे लैला को साथ नाव पर जाने के लिए पटा लिया। नाथ, राजाशाह और जयदयाल तो दिन-भर से कोशिश कर रहे थे।"

"ऐसी वातें हो जाती है एकाएक। क्यो, नही हो जाती क्या ?"

सुलेखा ने प्रश्न तो प्रत्यक्ष मे सरोज से पूछा था। वलराम ने उत्तर मागती

सुलेखा का हाथ हां मे दवा दिया।

सरोज हंसने लगी। "तुम मूड में हो, सुलेखा।"

सुलेखा की उमंग एकाएक रुक गई। हाथ निर्जीव हो गया।

वलराम ने सोचा, तुम आज मूड मे हो सुलेखा। एक वटन दव गया और सुलेखा की सारी रोशनियां बुझ गईं। कल्पना करनी तो कठिन न थी इस संदर्भ की। पतियों द्वारा पत्नियों से पूछा गया, अनुमति के लिए कथन, प्रश्न, प्रारम्भ। वह सुलेखा का हाथ छोड़नेवाला था।

सरोज कह रही थी, "अगर जरूरी कागज हो, हस्ताक्षर तो करा पाओगी, सुलेखा?"

वलराम ने झिझकती सुलेखा को हां का स्पष्ट आदेश दे हाथ छोड़ दिया।

सुलेखा ने पलंग से उठकर कहा, "क्यो नही! वह तो हो सकता है।" वह सरोज और अपने लिए चाय डालने लगी।

सुलेखा ने पूछा, "लैला सम्मद के वारे मे नाथ से क्यों नही पूछते? आखिर वे साथ आये थे।"

"नाथ तो सवेरे ही चला गया। तुमने जो वखश दिया था उसको। उसे कुछ मालूम नही था। वह तो उसी दिन होटल जनपथ मे लैला से मिला था। फिर दोनों का नैनीताल आने का प्रोग्राम हो गया।"

"तो चलो वात ही समाप्त हुई," सुलेखा ने भार उतारने जैसी सांस निकाली।

सरोज ने कहा, "तुम्हारा एक भाई भी तो एयर फोर्स मे है?"

"हां, वेवी है। तीसवें स्क्वाड्रन मे, मिग्स उड़ाता है।"

सुलेखा ने कुछ देर वाद कहा, "मेरा एक काम करोगी सरोज? वोट हाउस क्लव का विल आया है। मैं चेक देती हूं। तुम भिजवा देना या राजा शाह को दे देना, यदि वह तुमसे मिलने आए।"

"हां-हां।" सुलेखा ने वैग से विल और चेक वुक निकालकर चेक भरा। फिर उसे लेकर वलराम के पास आई। वलराम ने जयदयाल की कलम से चेक पर हस्ताक्षर कर दिए। और उसने मन की आदत के अनुसार सुलेखा को इस वात का गेम पाइंट दिया।

"यह लो।"

सरोज सुलेखा से चेक लेकर, बलराम के पास उठ आई थी। उसपर झुककर बोली "हैलो हीरो। हमसे बोलोगे भी नही ?"

सरोज देवी का हलका हाफना और उसकी सुगंध का कंवल उसे असह्य हो गया। बलराम की बाई आंख झँप गई। पुलकित सरोज कल्लोल कर उठी।

"जयी, तुम कभी नही बदलोगे। सुलेखा, यह तुम्हारा पति अब भी आंख मार रहा है।" सरोज की दृष्टि चौकन्नी थी। बलराम ने अपना बाया हाथ कम्बल के ऊपर रख दिया। जैसा उसे संशय था, सरोज की दृष्टि एकदम सोने की अंगूठी पर पहुची।

सरोज फिर भी नही हट रही थी। बलराम ने फिर सोचा, वह और क्या गवाही जुटा सकता है, जयदयाल होने की। सरोज सुलेखा के सामने आई हुई खड़ी उसपर झुकी थी। मन से पहले, बलराम के दायें हाथ ने 'जयदयाली' प्रेरणा जानी। उसने उठ सरोज का एक वक्ष मरोड डाला।

सरोज ने दात दबा दर्द सहा। अबकी बार सरोज सन्तुष्ट हो मुड गई। पहुंची हुई कुशलता से उसका हाथ सहला भी गई।

सुलेखा ने इस व्यापार को कितना देखा, इसपर भूल-चूक लेनी-देनी के भाव से सरोज ने वापस बैठते कहा, "कभी नही बदलेगा। बहुत फ्लर्ट है।"

## लिलि काटेज
(१ जनवरी)

### शाम ७-१५

राजाशाह ने खीझ में अपने हाथ का काच का गिलास फायरप्लेस मे फोड़ डाला।

"कोई चारा नही है, सरोज। कल सीधे-सादे जयदयाल से पूछना पड़ेगा। पाच सौ प्रति किलो तो कच्चा माल पहाडो से उठ जाता था। काली गोलियो का आठ सौ भी मिल जाता था। बनाये माल का एक हजार से कम दाम बतलायेगा, देख लेना। जैसे पिछली बार बतलाया था। एक लाख से ज्यादा न बतलायेगा देख लेना।

"हमे क्या मिलेगा राजा ?"

"वही, एक कैरेट से जरा ऊपर के दस हीरे ?"

"हीरे बदल देता है क्या ?"

"नही, उस तरह का बेल्जियम कट बड़ा हीरा बाहर से आता है। यहा के पंसारी जौहरी नही काट सकते। खड़े-खड़े कही बिक सकता है।"

राजाशाह मूछो को खीच रहा था। जैसे उखाड़ ही डालेगा।

"तुमने दिल्ली-बम्बई मे पूछा ?"

"हा, फोन आ गए है। यूसुफ कुछ भी बतलाने से इनकार करता है। यह भी कि वह अलिफ नाम के किसी आदमी को जानता है। उसे कुछ मालूम नही। वह फोन पर आने को भी तैयार नही था। मैंने तिवारी को उसके पास भेजा। पहले तो मिला ही नही। फिर क्रोध करता कोलाबा के एक ईरानी होटल मे आया। वही पुरानी कहानी। उनकी तरफ से कोई गड़बड़ नही हो सकती है। कितने का माल था, कितना भुगतान भेजा गया, कौन लाया, यह सब हेड आफिस जानता है। उनके कैरियर कभी कोई चूक नही कर सकते, क्योकि वे खुदा का खौफ चाहे न माने, शैतान अलिफ का जरूर मानते है। कैरियर गायब हो जाए, भुगतान न मिले तो उसका पूरा जिम्मा संगठन पर है। दूसरा भुगतान भेज दिया जायेगा। भुगतान के बाद गायब होना उनका अपना काम है—सिर्फ सप्ताह के अन्त तक नोटों के दोनों टुकड़ों की रसीद वापस पहुंच जानी चाहिए। यही खेल के नियम पर लेक्चर देता रहा। कुछ मतलब की बात नही की। यूसुफ को खुद संगठन द्वारा भेजे कैरियर का नाम नही मालूम होता है। साला एक नबरी काईया।"

"उस अजनबी के बारे में कुछ पता चला ?"

राजाशाह अपनी धुन मे बोल रहा था। "दिल्ली में भी कुछ पता नही चला। लैला सम्मद के पास लेबनान का पासपोर्ट था, पर वह दिल्ली के पूर्व तेहरान थी। दिल्ली के सब होटल चेक कर लिए गए, पर वहां नही है। वहां होना कोई जरूरी भी नही है।"

"उस अजनबी के बारे मे कुछ पता चला ?" सरोज ने फिर पूछा।

"उसके घर भी नही है। वह तो फटीचर बरसाती में रहनेवाला था। बन्द है। उसका नाम बलराम है।"

सरोज ने कहा, "एक बात सोचो। यदि कैरियर लैला नही बल्कि बलराम

रहा हो।"

"क्या मतलब ?"

"जयदयाल को सिर्फ आने का दिन ही मालूम था। कैरियर कोई भी हो सकता है। लैला और नाथ के यहा आने का स्पष्ट कारण था, वे मजा उड़ाने आए थे। एक फटीचर वरसाती वाला नैनीताल क्यो आया ? फिर उसी रात क्लव क्यो पहुचा ? और जयदयाल के साथ विलियर्ड्स रूम मे क्या कर रहा था ? और आखिर मे फिर वह जयदयाल की वात मानकर गायव भी हो गया।"

"तुमको हो क्या गया है ? थोड़ी देर मे तुम कहोगी नाथ कैरियर था। या वह फारेस्ट डी० आई० जी० का भानजा।...पर अस्पताल मे क्या हुआ ?"

"अस्पताल मे तो जयदयाल ही है। सच मै बोल नही सकता, मैंने डाक्टर दास से खुद पूछा था पर ...।"

"रुक क्यों गई ? हमीरा की अगूठी वाली वात देखी थी ?"

"अगूठी पहने है। सुलेखा ने मेरे सामने हस्ताक्षर करा यह चेक दिया। और उसके हाथ वही चालू हाथ है।" सरोज ने अनायास अपना उरोज सहलाया।

"हस्ताक्षर उसी हरामी के है। फिर रहस्य क्या है ?"

"कुछ रहस्य तो है। सुलेखा पुरानी सुलेखा नही है। वह उत्तेजित है। कम से कम हृदय के किसी तार सप्तक पर पहुंची। विलकुल वर्फ की गुड़िया नही है, वल्कि ठीक उससे विपरीत है। एक औरत जो छलक जानेवाली है।"

"सरोज, क्या यह कविता छाँटने का समय है साला ?"

"सुलेखा किसीसे गहरे प्रेम मे होने के खतरे के वहुत निकट है। वह वहुत छिपा रही है। पर सिर्फ पुरुषो से ही ऐसी स्पष्ट वात छिप सकती है।"

"सुलेखा को कोई यार मिल गया है, या कर रही हो। जयदयाल से तो वह तलाक करना चाहती है।"

"यही तो अजीव वात है। वह अस्पताल मे पड़े पट्टियों में लिपटे, गूगे जयदयाल पर ही मोहित मालूम पड़ती है।...मुझसे जयदयाल ने फ्लर्ट किया तो उसका चेहरा गुस्से से फक् पड गया।"

राजाशाह पर इस सूक्ष्म मीमासा का असर नही हुआ। वह मुख्य और

मोटी चीजों को सीधे-सीधे पकड़ने वाला आदमी था। उसके अनुसार उसकी पुष्ट कामनसेन्स ही उसकी सफलता की कुंजी थी।

"आखिर सुलेखा उसकी बीवी ही तो है। फिर इसमे आश्चर्य की क्या बात? औरते एक दिन लाइन पर आ जाती है अगर मर्द लगाम कसी रखे।"

सरोज ने पूछा, "हमीरा कहा है?"

"वह साली तो दोपहर से गायब है। फिर उसके पीछे दूसरी भी चल दी। कोई विदेशी पर्यटक दीख गया होगा।"

सरोज हंसने लगी, "बाहर भी हीरा क्या वही बराबरी का हक मागती है?" यह प्रसिद्ध था कि जो हमीरा के साथ किया जाए वह हीरा के साथ दोहराना आवश्यक था।

राजाशाह गम्भीर ही था। "हमीरा का पाजी दिमाग है। हीरा तो मूक जानवर है।"

"मैं सोच रही थी कि एक बार हमीरा को अस्पताल भेजते।"

"किसलिए? तुम्हारे दिमाग को आज क्या हो गया है, सरोज। वह जाकर क्या सुलेखा की चोली टटोलेगी?"

सरोज का एक हाथ अभी भी अपनी छाती सहला रहा था। सरोज मुस्कराने लगी। वह व्यापार में ठगे राजाशाह को मुख्य और मोटी चीज दीखने लगी।

# ३

# अग्नि-दाह

अस्पताल
(१ जनवरी)

संध्या ७-१५

डाक्टर दास के चले जाने के बाद सुलेखा वापस बलराम के कमरे में लौटते झिझक रही थी। वह रोज और आज का फरक···अपने ऊपर अधिकार न होना, जिस तरह हर्ष की विवशतायें देता, उसी तरह उदासी की भी। अस्पताल के बाहर अंधेरा और तेज़ हवा थी। अपनी घुटन से बेचैन वह दरवाजा खोल बाहर चली आई।

यदि जयदयाल से बदले की ही बात हो तो वह सुरक्षित और संपूर्ण हो गया था। लैला सम्मद और नाथ गायब हो चुके थे। जयदयाल भी। जयदयाल अपने समय पर लौटेगा, उसे विश्वास था। पर उसके लौटने से भी सुलेखा की जीत मे कोई अन्तर नही पड़ता था। कल जब राजाशाह आएगा तो वह बलराम को प्रकट कर सकती थी। बलराम को कोई एतराज न होगा। और इस नाटक के बहुत कारण दिए जा सकते है। यहां पर हर तरह से सुलभ अन्त था।

अन्त का सोचते ही सुलेखा को बाहर सर्दी लगने लगी। सब लोग हंसेंगे और मैं प्रायरी मे लौट रोऊगी।

यदि कल बलराम को प्रकट नही करती तो प्रकट करना कठिन हो जाएगा।

सुलेखा को सरोज पर क्रोध उमड़ रहा था। उसी ने जान-बूझकर जयदयाल का पति-वचन दुहराया था। फिर ठीक सुलेखा के सामने अपने को बलराम के हाथो पकड़वाया था। सरोज के सामने तो हमीरा शरीफ गिनी जानी चाहिए। बेहया कही की।

वेहया। मन की व्यंगकार ने उसपर ही दुहराया।

अस्पताल के सामने, ताल के उस पार के पहाड़ पर प्रायरी थी। जाड़ों में सिर्फ मुख्य रास्तो के स्ट्रीट लैम्प ही जलते हैं। हवा से उनके शेड पलटने के कारण वही लुक-छिप थी जिसे पर्यटक देखते रह जाते हैं। सामने के पहाड़ के वृक्ष मे करीब पूर्ण अंधेरा था। सुलेखा अंधेरे में टटोलती हुई प्रायरी की स्थिति निश्चित्त कर रही थी। एकाएक वह स्थान आलोकित होने लगा। मकान में विजली जलाकर जो दिवाली होती है उससे विभिन्न यह प्रकाश चमकता, झपकता और बढ़ता हुआ था।

सुलेखा को चार्ल्स का सुनाया किस्सा याद आया। क्या प्रायरी में दुबारा आग लग गई थी? जो एक बार हुआ क्या दुवारा हो रहा था?

## अस्पताल
(१ जनवरी)

### संध्या ७-२५

पहाड़ियों पर पडाव होता है। युद्ध की वात ही भूल जाती है। युद्ध कला-चांदमारी और व्यायाम रह जाती है। अफसरों के आपस मे स्वभाव टकराते हैं। रोज की खवर है, कि कोई खवर नही। जमादार शिकार पर जाने की अनुमति मागने लगते है। पर तभी वह रात्रि आ जाती है।

पहली गोलावारी नकली लगती है। तावा नदी पर आगे वढ़कर अव युद्ध-विराम के वाद सी० ओ० ने उसे वापस भेजा था। वह छावनी की जगह ठीक-ठीक पहचानी भी नहीं गई, जहाँ उनकी कम्पनी ने तीन महीने विताए थे।

सव रोशनियाँ वुझ गई हैं। उसका सिर जरा ही चकराया, वलराम पलंग छोड़कर उठ खड़ा हुआ। यदि भार मालूम होता तो सिर्फ गले पर। वह जयदयाल का भार उतारने को वेचैन था।

जो जीवन-भर अपनी मदद न कर सका, वह किसी और के जीवन का क्या उद्धार कर सकता है?

"क्या कर रहे हो? तुमको उठ जाने को किसने कहा?" पीछे से हांफती पहुची सुलेखा ने पूछा।

वलराम खिड़की से मुड़ा। सुलेखा उसे वापस पलंग पर हाथ पकड़कर ले जाने वाली थी। यहा खिड़की से वह सामने के पर्वत का प्रकाश-पुज और स्पष्ट था।

उसने विचित्र स्वर मे वलराम को सुनाया, "वह देखो सामने—प्रायरी—मेरा घर है। उसमे आग लग रही है।"

मेजर वलराम ठिठककर ध्यान से देखने लगा। पहले विश्वास नही होता, लपट है कि नही, फिर आग उठती है और फैलती है। आग किसी चीज़ के पीछे छिपी थी। प्रकाश और लालिमा स्पष्ट दीखते थे। लपटो का अनुमान लगाया जाता था।

सुलेखा की पलग पर वापस ले जाने की चेष्टाओं को झिड़ककर वलराम ने कहा—"चलो।"

"कहा ? अरे तुम वोल रहे हो वलराम !"

सुलेखा के मुख से पहली वार अपना नाम सुनने के कोमल प्रभाव ने उसके निश्चय को जरा नही वदला। वह कपड़े वदलने वाथरूम में चला गया।

वलराम की आवाज हल्की और भारी स्वर की थी। वोल सकते ही आदेश चलाने लगा। कुर्सी पर प्रतीक्षा करती प्रसन्न सुलेखा ने सोचा।

## प्रायरी
## (१ जनवरी)

### रात्रि ८-१५

यदि मल्लीताल में भाग्यवश रिक्शा न मिल जाता या हर कुली को पांच रुपये के इनाम का प्रलोभन सुलेखा न देती, तो पहुंचने की देरी से अशान्त यह वलराम शायद दौड़ना प्रारम्भ कर देता। कमेटी का फायर एंजिन उन्हे चढ़ाई पर मिला। लक्ष्मण ने उन्हे फोन कर दिया था। पुलिस और वन विभाग के कई मुलाजिम मल्लीताल के वाज़ार से कुछ कुली वटोरकर आगे वढ़ चुके थे।

आग मकान के पिछले टाल मे लगी थी। सुलेखा भी कुछ निश्चिन्त हुई। वह छह फुट सूखा टाल प्रचण्ड रूप मे दहक रहा था। उससे निकली लपटें मकान के पिछवाड़े की ओर भी लपक रही थी। उधर का सामान झुलस तो

गया होगा। अंधेरे में ठीक अन्दाज लगाना कठिन था।

दस-पन्द्रह आदमी आग को घेरे उसे बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे। बाल्-टियाँ दो ही लगती थी। रसोई के नलके से जुड़ी काली रबर की पाइप छोटी पड़कर बाल्टियाँ भरने मे प्रयुक्त हो रही थी। पिछले बरामदे के पास खड़ी सुलेखा ने पाया कि बलराम जो एक क्षण उसके पास था, भीड़ में बढ़ गया था।

लपट की आँच में मुख तपता असह्य होने लगता।

बलराम ने नेतृत्व संभालने वाले लोगो को अलग-अलग जाकर समझाया। सुलेखा आदेश सुन तो नही पा रही थी पर आशय कुछ देर से समझ में आ गया।

अभी एक बाल्टी पानी पड़ने पर कुछ देर को चिता के उस हिस्से में फरक पड़ता। पर फिर नीचे और अगल-बगल की आग से वह हिस्सा दुबारा प्रज्वलित हो जाता। लपटें दस फुट की उठ रही थी।

बलराम ने कही से एक लम्बी बल्ली पाकर उससे चिता के ऊपर की लक-ड़िया पीछे की ओर गिराई। गिरी लकड़ी जो 'चिता' से गिरकर दूर हुई, उसपर पानी की बाल्टी डाली गई। 'चिता' के निकट जाने मे दुस्साहस की आवश्यकता थी, क्योंकि बल्ली छोटी थी और हर बार उसका कुछ हिस्सा जल-कर कम हो जाता।

तीन बार बलराम ने आग के घेरे मे बढकर 'चिता' तोड़ी। आग को घेरे ज्यादा तमाशबीनो को अब आग बुझाने की प्रणाली समझ आ गई। बलराम के हाथ से किसी दूसरे ने बल्ली ली तो उसके मुख पर पानी से भिगो कर पट्टी बलराम ने लगा दी।

अब गिरी लकड़ियो, जलती हुई, या कोयले मे दहकती हुई को पूर्ण रूप से जल्दी-जल्दी बुझाने मे देरी हो रही थी। यदि लकड़ियाँ न बुझाई जायें तो वहाँ एक-दूसरे का सहयोग पा फिर आग पकड़ने लगती।

'चिता' से चिट-चिट आवाजे होती। लपटों का रंग गहरा पीला या क्षण-भर के लिए सफेद हो जाता। धुएं का कोई गुच्छा एक साथ उठता। अदृश्य धुए से लोगो के मुख श्याम हो रहे थे।

ऊपर की लक [illegible] रीत नीचे के लक्कड़ जमे और भारी थे। उन्हे ठेल सकना स [illegible] ो वाले दो व्यक्ति बलराम की ओर

करने बढे जहां वह कीचड करना सिखला रहा था। सुलेखा ने सोचा, नेतृत्व पाना इतना आसान भी हो सकता है। मेजर साहब का इसीसे सिर चढ़ जाता होगा।

कमेटी का ठेला, प्रायरी के सामने पहुच रहा था। उन्होने हाथ की घटी बजाना शुरू कर दिया था।

सुलेखा ने देखा कि बलराम चिता की ओर बढकर ध्यान से देख रहा था। शायद टाल मे दबी लकडियो की बनावट समझने के लिए। पर इसके लिए इतना आगे बढने की आवश्यकता तो नही थी।

शायद बलराम ने कमेटी के ठेले की आवाज—इस नुकसान मे बेमानी—घंटी सुनी। उसने लौटकर अपने तीन मुख्य सहायको को कुछ समझाया। उन तीनो ने आवाज लगाकर लोगो को बटोरा और मकान के सामने की ओर प्रेरित करने लगा। शायद ठेले को यहाँ तक खीचकर लाने मे मदद करने। बलराम को उन लोगो को उधर भेजने की सच मे जल्दी स्पष्ट थी। उसने लक्ष्मण के हाथ से पानी की बाल्टी ली और उसे भी धकेला।

सामने की ओर से आई आवाजो से मालूम पड़ा कि ठेले को सहायता की आवश्यकता का बलराम का अनुमान सही था। आखरी भाग में प्रायरी तक पहुचने के लिए सच मे सीधी चढाई थी। अपने स्थान से अविचलित और बल-राम पर केन्द्रित सुलेखा ने पाया कि आग बुझाने वालो को उधर भगा देने का कारण आवश्यक सहायता देना ही नही था।

पानी की बाल्टी और बल्ली लेकर बलराम 'चिता' के बहुत निकट बढ़ गया था। वह जल्दी-जल्दी मे चिता से कुछ कुरेदकर अपनी ओर गिरा रहा था।

ठेला मकान की बाई ओर से ऊपर चढ आया। बलराम का काम पूरा नही हुआ था। सुलेखा बिना ठीक तरह से सोचे ठेले की ओर बढ़ी और उसके सामने आ अनावश्यक हिदायते देने और प्रश्न पूछने लगी। धक्का देने वाले और खीचने वाले कम थे, और भीड़ ज़्यादा। वह 'चिता' की ओर तितर-बितर ढंग से बढने लगी।

बलराम बाहरी घेरा बनाता ठेले की ओर आया। उसने हाथ की बाल्टी अदृश्य मे वहाँ रख दी जहाँ सुलेखा का बरामदे के पास छाया मे स्थान था।

उसकी ओर झट लौटी सुलेखा से उसने कुछ झुककर कहा, "अन्दर रख आओ। दूसरी बाल्टी ले आना।" बिना उत्तर सुने वह फायर ब्रिगेड वालों की ओर चला गया।

अपने कमरे की रोशनी मे आकर सुलेखा ने बाल्टी मे झांका—ऊपर से डाली गई या सगृहीत राख से करीब बाल्टी चार इंच भरी थी। उसे टटोलने की इच्छा और भय में सुलेखा थोडी देर डगडगाती रही। उसने उस भीगी कोयला-राख मे हाथ डाला। उसके सब भय एकदम उसके हाथ मे आ गए। उस राख मे छिपा एक रिवाल्वर था।

सुलेखा ने रिवाल्वर को वापस बाल्टी की राख मे दबाया, बाल्टी अपनी अलमारी के निचले खाने मे रखकर ताला लगाया, हाथ धोये, दूसरी बाल्टी लेकर नीचे उतरी।

ठेले को एक तोप की तरह कोण मे लगा दिया गया था। दो आदमी उसका पम्प चला रहे थे। उससे निकलती धार लगातार होने के कारण कुछ देर में आग का एक कोण जीत लेती। इस हिस्से को कुल्हाड़ियों से मुख्य 'चिता' से काटकर बिखरा दिया जाता। सुलेखा ने पाया कि फायर ब्रिगेड अधिकारी भी उसी ढंग से बलराम के आदेश पर काम कर रहे थे।

सुलेखा बलराम तक पहुंची। उसकी पट्टियां और मुख धुएँ से काले हो गये थे। जहाँ वह खडा था चिता की विकट आग थी। बलराम ने मुड़कर पूछा— "क्या है?"—सुलेखा ने अपने निर्जीव हाथ से बलराम का हाथ पकड़ा। "कुछ नहीं।"—बलराम ने उसे थोड़ा पीछे खीचकर कहा, "अन्दर चली आओ। अब कोई खतरा नही।"

सुलेखा ने मुडते हुए अपने मे पाया कि जैसा वह सोचती थी सच में बलराम के स्पर्श से उसका भय उतर गया था।

थोड़ी देर मे चिता लपटहीन हो गई। टाल की ऊँचाई ढाई-तीन फुट ही बची। अब तोड़ने की बजाय पानी डालना ही जारी था। दर्शक समुदाय का शोर बढने लगा।

े पास बरामदे मे आया। "कमेटी वाले काफी है। बाकी रवाना करे, मेम साहिब।" वह पैसे लेकर चला गया।
ाकर पूछा, "रिक्शा वालों को रोकना .

सुलेखा कुछ निश्चित नही कर पाई। लक्ष्मण ने कहा, "यही सोने को बोल देता हूँ। साहव का तवियत खराव हुआ तो जाना पड़ सकता है।"

"ठीक है।"

'चिता' के बुझते ही अंधेरा बढ गया। अधेरा और ठंड ! अव जो दीखता वह वरामदे की रोशनी मे दीखता। टाल के पास सुलगते कोयलों से तो पास के व्यक्ति की छाया ही दीखती।

जव पम्प चलाने वालो ने काम बन्द किया तो, छः-सात फुट ऊँची टाल जलकर और नष्ट होकर एक-दो फुट ऊँचा काला ढूह रह गया था। उससे उछला दस-वारह फुट ऊचा, अग्नि और प्रकाश का दानव अन्तर्धान हो गया था। वह हवा खीचती 'घु-घू' समाप्त हो गई। रात्रि की निस्तव्धता और साधारण[वातचीत फिर पूर्ववत् प्रकटित हो गई थी।

फायर आफिसर और वलराम लम्बी टार्च की रोशनी मे सावधानी से मुख्य मकान के ऊपरी हिस्सो का निरीक्षण कर रहे थे।

उत्तेजना के अन्त पर थकान है। पर 'चिता' के जलने और अन्त होने में सुलेखा को किसी रहस्यमय अनुभव ने छू लिया था। वह ठीक-ठीक तो नहीं कह सकती थी, पर एक तरह की मुक्ति थी, एक तरह का अभय।

पुलिस निरीक्षक और कमेटी का मुख्य अधिकारी बलराम के साथ ऊपर आए। पीछे-पीछे लक्ष्मण उनको ड्राइंगरूम मे ले गया।

## रात १०-३०

लक्ष्मण कह रहा था, "सरोज बाई करीव पौने सात बजे गईं। जाड़ो मे अंधेरा पहले ही हो जाता है। मेमसाहव ने अस्पताल मे ही सोने को कहा था, हम मल्लीताल वाजार गए पर ग्वाला दूध लेकर प्रायरी चल दिया था। उसको हमने बढकर चढाई पर पकड़ा। फिर आधी चढाई ही बची थी। सोचा क्वार्टर होकर चलें, कुछ सामान भी ले आयेगे।"

"क्या टाइम होगा जव तुम इधर पहुंचे?" सवाल पुलिसवाले ने पूछा।

"साढ़े सात के करीव-करीव से अधिक न होगा, साव। पहाडी का कोना मुडने तक कोई वात नही दीखी। फिर आग दीखा, लपट छोटी थी। हम ऊपर भागे।"

"यहां पर कोई था ? इधर से निकलते देखा तुमने किसीको ?" वही पुलिसवाला।

"कोई नही। आग ऊपर की लकड़ियों में ही थी पर नीचे पकड़-भर रही थी। हमने बड़ी रसोई खोलकर कुछ वालटी पानी दौड़-दौड़कर फेका। आग पर असर नही हुआ। हमारी साँस फूलने लगी। फिर हमने बाल्टी छोड़कर फोन मिलाया। आपको, और आपको। अस्पताल में घंटी जाती रही। पर डाक्टर का कमरा उनके जाने पर वन्द हो गया होगा शायद।"

पुलिसवाले ने कहा, "तुमने इससे ज्यादा देरी की होगी। थाने मे फोन आठ में पांच कम पर आया था।"

अभी तक चुप, खाली रपट के फार्म पर कलम खोले, कमेटी वाले ने पूछा, "पर आग लगी कैसे ? किसकी असावधानी से ?"

वलराम ने पूछा, "तुम ऊपर हल्ला करते चढ़े थे ?" वलराम की आवाज भारी और क्षीण थी। लक्ष्मण ने सिर झुकाकर स्वीकार किया—"हां।"

वलराम ने सभा समाप्त करने के स्वर मे कहा, "आप लोग कल सवेरे तहकीकात करने आइयेगा। अभी कुछ फायदा नही। आग लगाई गई थी। कैरोसिन का दूसरा टिन वही पास पड़ा हुआ था। लक्ष्मण के पहुंचने के समय आग लगानेवाला वही था, फिर छिप गया और पुलिस की पार्टी आने से पूर्व उतर गया।"

## रात्रि ११-००

अपने कमरे में शीशे में सुलेखा ने देखा कि उसका चेहरा भी धुएँ से सांवला हो गया है। अपने चेहरे पर कालिख की उसने सोची ही नहीं थी।

कुछ देर पहले ऊपर लक्ष्मण ने पूछा था। "साहव के लिये साहव का कमरा तैयार कर दे ?" यानी वलराम का जयदयाल नहोना उसपर प्रकट था। सुलेखा लापरवाही से 'हाँ' कहने वाली थी। लक्ष्मण ने जोड़ा, "नीचे के गेस्ट रूम मे विजली खराव भी है।"

अंगुली चेहरे पर मलने से चेहरे पर सफेद लकीर पड़ जाती थी। वह शून्य-मन आदमकद शीशे में अपने को देख रही थी। मुझे कुछ और मोटा होना चाहिये।—राजाशाह और जयदयाल का भद्दा भांगड़ा—हमे तो पसद है,

मोटी-मोटी औरतें !

ग्यारह से ऊपर हो गया है। रात्रि समाप्त होने मे आठ घंटे भी नही है।

## रात्रि ११-१५

"ऊपर चलेंगे? कमरा तैयार है।"

लक्ष्मण ने सम्मुख आकर सुनाया। कोच पर लधरे बलराम पर ज्वर-सा चढ़ रहा था। सोचने का समय थोडा ही है। उसने इशारा कर लक्ष्मण को वैठाया।

"कौन था यहां पर लक्ष्मण ?" उसकी आवाज टूटी और क्षीण थी।

"कोई नही था, साहव। जैसे आपने कहा। छिपकर भाग गया होगा।"

वलराम चुपचाप उसकी ओर देखता रहा।

"कोई भी नही था। राम जी की कसम, हम झूठ नही वोल रहे।"

लक्ष्मण ने वलराम को उसकी ही दृष्टि से पहचाना था। अडिग-शान्त। जलदयाल वाला रौव नही था। ये आंखे लोलुप षड्यंत्र से उसे न पटायेगी।

लक्ष्मण ने कुछ समर्पण मे कहा, "पीछे का दरवाजा खुला था। वन्द था, पर चिटकन नहीं चढी थी। कल रात तक यह ऊपर का शीशा भी नही टूटा था। मेमसाहव आज दिन मे आई थी, पर वे कभी दरवाज़ा वन्द करना नहीं भूलती।"

"यहां कौन आने वाला था ?"

लक्ष्मण ने कुछ क्रोध मे कहा, "यह तो आप साहब से पूछना। हमको क्या मालूम ? आपको चोट न लगती तो हमेशा की वात थी। मेमसाहब तो सवेरे ही कार से वरेली चली जाती। फिर तो सभी आते है।"

"हमारी जगह नही है, यह सब वात आपको सुनाने की। मेमसाहव को भी सव मालूम ही है। वह अपना कमरा इसलिये दो ताले से वन्द करती हैं। कल लंच मे सब लोग आये थे। मीट-सालन नीचे होटल से आया था, चपाती-चावल यहा वना था।"

"कौन-कौन था ? वही ठेकेदार साहव, उनकी नेपालिन, सरोज वाई, एक गोरी लडकी थी। एक और लम्वी-लम्वी पट्टियों वाला साहव। साहव ने हमको उन लोगों के लिये नीचे गेस्ट रूम झाड़ने को जरूर वोला था। अव कौन-

कौन आता, कौन नही आता, यह हमको नही मालूम। वैसे सब आ चुका है।"

लक्ष्मण अबकी बार बिल्कुल फुल ब्रेक लगाकर रुक गया। "चलिए आपको ऊपर पहुंचा दू। दूध फिर गर्म करने को बोला है।"

बलराम खड़ा हो गया। पर सीढी की ओर जाने से इनकार कर दिया।

लक्ष्मण ने समझाया, "गेस्ट रूम मे लाइट लंच टाइम से खराब है।" फिर खीझकर वह डाइनिंग रूम से टार्च लाने गया।

गेस्टरूम में घुसते ही वही मीठी सुगन्ध। हमीरा की सिगरेटों की। ह्रास की। अधेरे मे खड़े बलराम ने अनुभव किया यह कमरा सुगन्धों से भरा है। कीमती सेन्ट, सिगरेट, हशीश। उसे सिनेमाघरों मे फॉयर का खयाल आया।

लक्ष्मण की टार्च मे उसने देखा कमरा बड़ा न था। पर उसे करीब-करीब भरता पलग बहुत बड़ा था। विस्तर बना हुआ था। चादरे खिची थी। टार्च की इधर-उधर आती-जाती रोशनी मे कमरा किसीके सामान से खाली था। कोई कपड़े नही थे। बलराम उस पार आदमकद खिडकियों की ओर बढ़ा। खिडकी बन्द थी फिर भी वह वहा कुछ देखकर पहचान न सकने के कारण खडा रहा।

लक्ष्मण ने कुछ हारकर कहा, "आपका अन्दाज ठीक है। खिड़की में कुडा बाहर है। बाहर से खोल अन्दर आ सकते है, आ सकते है।"

बाथरूम का दरवाजा लैच की आवाज के साथ खुला। बलराम अन्दर जाने की बजाय वही ठिठक गया। वह क्लिक की आवाज उसे इतनी संगीन क्यों लगी!

लक्ष्मण ने पीछे से आकर उसे सम्हाला। "आपकी तबियत ठीक नही है। बहुत मशक्कत हो चुकी है। ऊपर चलिए। चलिए।"

उधर से समर्थन में सुखेखा की चीख आई :

"लक्ष्मण ··· ओ लक्ष्मण।"

## रात्रि ११-३०

कमरे की दीवारो पर तीन शिकारों के मढ़े सिर लगे थे। दो हिरण, एक बाघ। हीटर की गर्मी से कमरा निर्द्वन्द्व हो रहा था। चीड़ की लकड़ी की

महक उमड़ रही थी। उस बासी-मीठी महक को दबाती जो बलराम को पसन्द न थी।

नर्स की तरह सुलेखा ने पूरा गिलास दूध पिलाया। उसने स्लैक्स और स्वेटर पहन लिये थे। सोने की तैयारी की जगह। चेहरे पर हल्का मेकअप था और कोई क्षीण आभिजात्य सेंट।

कुछ देर से सुलेखा को लग रहा था कि बलराम फिर गूंगेपन पर लौट आया है। या जानबूझकर चुप है।

बिल्ली की तरह कमरे के सोफे पर खिचकर सुलेखा ने कहा, "कल सरोज खूब मूर्ख बनेगी। उसने तो जाकर राजाशाह को बहुत गवाही सुनाई होगी। तुम्हारे जयदयाल ही होने की। तुम भी इन घटिया औरतो को पटा लेने मे जयदयाल से कोई कम नही हो।"

सुलेखा ने अपने दोनो हाथ गर्दन के पीछे कर लिये थे। इस कारण उन्नत उरोजो पर, जैसे उसके कथन मे उत्तर मे बलराम की दृष्टि टिक गई, तो सुलेखा ने झट अपने हाथ नीचे कर लिये।

थोडी देर बाद फिर सुलेखा ने कहा, " मैं भी आपके बारे मे बहुत कुछ बतला सकती हूं मेजर साहब। ' तुम अकेले हो, चिन्ता करने, उत्तरदायित्व निभाने को कोई नही। विवाहित रह चुके हो। जिम्मेदारी की आदते विवाह से ही आती है। नैनीताल आत्महत्या करने आए थे। चौंक गये न ? एली-मैंटरी, माई डियर वाटसन।

"मैंने उस रात्रि, कोने मे बैठे तुम्हे लक्ष्य किया था। सह सकने की हद के आगे जो जगह है वह मेरी परिचित है। तुम उसीमे बैठे थे। जयदयाल ने तुम-को खेल के लिये क्यों चुना ? कुछ हमशक्ल होने के कारण ? नही, अधिक मात्रा मे उसके चुनाव का कारण था तुम्हारी निपट लापरवाही। बहुत असा-धारण लापरवाही के कारण। जयदयाल के पास पिस्तौल नही थी। न शायद लैला के पास। जैसे तुम्हारे पास उसका ओवरकोट आया। उसके साथ तुम्हारा गया होगा। ताल पर बजने वाली पिस्तौल उसमे रही होगी। पिस्तौल की आवाज से कोई इतना विचलित नही हुआ था। किसीने उसको इतना स्पष्ट नही पहचाना था। मुझे तुम्हारा चेहरा याद है। इस आवाज की तुम्हे बहुत कल्पना थी। और गंभीर मृत्यु के संदर्भ मे तुम दिखावे के लिये पिस्तौल लेकर

फिरने वाले नही हो, न अपनी रक्षा की इतनी फिकर करोगे। किसीकी हत्या तुमसे न होगी। यानी आत्महत्या के लिये लाये थे। फिर चार्ल्स से कहना कि यदि गायब हो जाऊं तो सामान फेंक देना। क्यू० ई० डी० !"

बलराम की पराजय स्वीकार करती दृष्टि और उसे उसकी बुद्धिमानी पर मुस्कराहट मिली। पर कही उदासी भी थी।

"तुम इतने चुप क्यों रहते हो ? कोई दूसरा इतना काम करता तो सप्ताह-भर सुनाता या सुनता। तुम्हें एक हुकूमत की आदत ज्यादा है। सफलता ने तुम्हारा स्वभाव बिगाड़ दिया है। मेरे भाइयों की तरह।"

कहते ही सुलेखा को लगा कि कदम गलत पड़ गया है। पर उसने ऐसा कहा ही क्या, जो देखा नही। सब लोग बलराम से ऐसे हुकुम ले रहे थे। बलराम विफल ? उसकी कल्पना से बाहर था। हां, चाहने की कमी हो सकती थी। नही, थी। "तुम्हारा अनुमान विल्कुल गलत है, सुलेखा। मैं सब जगह असफलता सिद्ध कर चुका हूं। हुकुमत तो बिलकुल ही नही चला सकता।"

मेरा नाम तो आपने लिया, सुलेखा खुश हुई। प्रत्यक्षत: उसने कहा, "असंभव। मैं नही मानती"। पर रूपसि सुलेखा द्वारा आश्वासन का सहारा उसने नही लिया। सुलेखा ने घबराकर पाया कि पुल खिसक रहे हैं। "मैं जानती हूं कि तुम अपने लाभ छोड़ देते हो।"

इस बात के कहने पर किसी और समय सुलेखा का मन उसको सरोज जैसी बेहयाई का अपराधी ठहराता। पर बलराम के विलुप्त होने में दुख भारी था।

कुछ देर के बाद बलराम ने कहा, "अपने भाई को फोन लगाओ।"

"क्या ?" उसने चौंककर पूछा।

"उन्हे जल्दी से जल्दी यहा बुलाओ। हो सके तो कल ही तक।"

"तुम्हे स्वस्थ, साधारण जीवन का अनुभव है। जो जीवन मैं यहा जीती हूं उसकी मान्यता मे कुछ भी असाधारण नही हुआ। तुम देख लेना, कुछ भी असाधारण नही माना जाएगा। जयदयाल गायब है। वह साल मे छह बार गायब हो जाते हैं। घर के पीछे लकड़ी का टाल जल गया है। गुस्से मे मेरी सारी लाइब्रेरी जला दी गई थी। तुम्हे हम लोगो के बीच फंसकर चोट जरूर लगी है। यह एक गंभीर जिम्मेदारी मैं मान ही रही हूं। यह नम्बर दो का विश्व है। यहा सब कुछ होता है। अशोक एकदम आ जाएगा। पर उससे कहूगी क्या ?"

बलराम कुछ कहते-कहते रुक गया।

"ठीक है, टाल मे तुम्हे एक पिस्तौल मिली। तो ?"

"वह पिस्तौल मेरी पिस्तौल है। इसमे कोई सशय नही।"

"तुम्हारी पिस्तौल यहा कैसे पहुच गई।"

दोनो कुछ देर चुप रहे। सुलेखा को थोड़ा सच बोलकर झूठ बोलना अच्छा न लगा। पर बलराम ने उसे सब सत्य को अनावृत करने का स्थान भी तो नही प्रदान किया था।

"देखो, कल जब मैं दिन मे आई थी तो मुझे लगा था घर मे कोई है। मुझे डर लगा और मैंने रिक्शेवाले को बहाने से अन्दर बुलाकर मकान बन्द किया। पर यह डर, सकोच अधिक था। जयदयाल को मेरे सवेरे चले जाने का ही प्रोग्राम मालूम था। इस मकान मे उसके अपने प्रोग्राम होते थे। मैं उन्हे नही जानना चाहती थी।"

बलराम ने आँखे झुका ली।

सुलेखा उससे प्रतिवाद चाहती थी। और नज़र झुकाई चुप्पी से खीझ उठी।

बलराम ने फिर कहा, "सुलेखा, फोन लगा लो।"

"यह तुम्हारी ज्यादती है। तुम जानते हो, तुम तीन बार कहोगे तो मैं 'चिता' मे भी कूद जाऊंगी। तुम फायदा उठा रहे हो। आखिर मैं कहूंगी क्या।"

"टाल जलाया क्यों गया, तुमने इसका उत्तर नही दिया। कल सुबह पुलिस शायद यह देख ले कि इस आग को लगाने का कारण एक लाश को जलाना था। हमने सच में एक चिता बुझाई।"

"किसकी लाश थी ? तुम निश्चित हो क्या ? मैंने कुछ नही देखा।" उसे लकडियो के तडकने की आवाजे याद आई।

"लाश तो ऊपर ही थी। हमारे जाने तक जल चुकी थी। पर हड्डिया तो स्पष्ट थी। ऐसे अवशेप मैने पहले भी देखे है।"

"किसकी लाश थी ? तुम क्या सोचते हो ?"

"निश्चित तो नही कह सकता पर ·"

"पर क्या ? तुम सोचते हो जयदयाल···"

"नही ! यह लाश तो शायद लैला सम्मद की होगी ।"

सुलेखा का सिर कुछ तैर रहा था। बलराम ने कहा था, 'यह लाश'। उसने सम्हलकर पूछा, "तुम्हारे विचार से जयदयाल नही है ?"

बलराम चुप रहा। सुलेखा ने आवाज उठाकर कहा, "जवाब दो बलराम, मैं सिर्फ तुम्हारी धारणा पूछ रही हूं। सच बतलाओ !"

"वह तो ताल मे है। सुलेखा, मुझे यह कल रात से लग रहा है, मेरे पास ऐसा सोचने को कोई आधार नही है। सिर्फ..."

"सिर्फ क्या ?"

"यदि वह जीवित होता तो मेरे मन मे और देह मे उसकी प्रेरणाएं न आती। जैसे कोई डूबता हुआ जकड़ लेता है, वह मुझे जकड़े है।"

सुलेखा को कुछ समझ तो आया पर उसे लगा कि बलराम थोडी-सी बात पर बहुत बड़ी दीवार खड़ी कर रहा है। वह धीरे-धीरे स्वस्थ हुई।

"नही बलराम, तुम गलत भी हो सकते हो, शायद गलत ही हो।"

बलराम ने इन्कार नही किया। विशेष स्वीकार भी नही।

"नही। वह लुच्चा इतनी आसानी से नही मरेगा। मेरी जान का छुटकारा उससे इतनी आसानी से नही हो सकता।" सुलेखा का बलराम की राय से अस्वीकार बढ रहा था।

कमरे मे चुप्पी रही।

बलराम ने कहा, "कुछ भी हो, खेल खत्म हो चुका, सुलेखा ! एक खून हो चुका है।"

## ४

# जल-उद्धार

पुलिस स्टेशन, मल्लीताल
(३ जनवरी)

### सुबह ११-००

डी० वाई० एस० पी० जोशी झुंझला रहा था। सामने बैठा अशोक माथुर उससे जरा भी रोब नहीं खा रहा था। बल्कि जोशी को शक था, थोड़ी देर में रोब दिखाने लगेगा।

पहले तो तीन पीस सूट। सब चीजें कीमती। फिर एक सेक्रेटरी। कार्ड में कम से कम छह कम्पनियों के नाम थे। माथुर एक्सपोर्ट, माथुर स्टील, माथुर केमिकल्स वगैरह-वगैरह। सुपर रईस जिनके बटुओं में सबसे कम नोट शायद सौ का रहता है। फिर खूबसूरत। हुक्म चलाने की आदत।

मुकाबला बराबरी का नहीं था। पिछले साल ही प्रमोटेड जोशी के लिए।

"सिगरेट ? जोशी साहब।"

इम्पोर्टेड पैकट था। जोशी ने एक सिगरेट ली और लाइटर जो निकला—सोने का।

"तो जैसा मैं कह रहा था अपनी बहिन लेखा, मिसेज दयाल, को लेने आया हूं। यहां मालूम पड़ा कि आप कोई तहकीकात कर रहे हैं। सो तो आप शौक से करें। सिर्फ यदि आप अपनी तहकीकात कल तक निपटा दें तो बहुत अच्छा होगा।"

"देखिए, कुछ कहा नहीं जा सकता। पूरी कोशिश की जाएगी।"

"क्या आप बतला सकते हैं कि तहकीकात हो क्या रही है ? कोई केस रजिस्टर किया है आपने ?"

"केस ? नहीं, अभी नही। पर हो सकता है।" जोशी ने यथासंभव गभीरता से कहा।

अशोक माथुर का सेक्रेटरी चंद्रन विना आज्ञा लिए अन्दर चला आया। यह इस मद्रासी छोकरे की सुवह से आदत वनती जा रही थी। उसे टेढ़ी दृष्टि से जोशी ने देखते सोचा।

"सर, होम सेक्रेटरी, आई० जी० और डी० आई० जी० को फोन सामने वेलीराम की दूकान से बुक कर दिए है। यही पर अभी आते हैं।"

"ठीक है। थैंक यू।"

चंद्रन के पीछे स्विस काटेज का स्टीवर्ड गोपाल आकर काफी का सामान सजाने लगा।

"मैने कुछ काफी मंगवाने की गुस्ताखी की है। आपको एतराज तो नही?"

"नही-नही।"

गोपाल ने मुस्कराकर ताजी पेस्ट्री की प्लेट मेज पर रखी। जानवूझकर जोशी की ओर।

अशोक माथुर ने काफी चखकर गोपाल को धन्यवाद प्रदान किया। गोपाल के वाहर निकल जाने पर साधारण ढंग में दूसरी पेस्ट्री उठाकर जोशी ने पूछा, "यह आपने इतनी वला के फोन किसलिए लगा डाले है।"

"देखिए डी० एस० पी० साहव, मैं कानून की वहुत कद्र करता हूं। मैं आपकी मजवूरी और कठिनाई भी देख रहा हूं। दूसरी तरफ मुझे कल शाम तक जाना ही है। वड़े लोगों को वड़ी तनख्वाह दी ही इसलिए जाती है कि जो साधारण रूप से न हो सके, उसे करे। उनसे मशिवरा कर लेते हैं, शायद कोई सूरत निकल आए। आपपर जिम्मेदारी भी हलकी हो जाएगी।" जोशी को, जो डी०आई० जी० साहव को सीज़न के दौरो से जानता था, इससे तसल्ली न हुई। उनसे कोई भी मशिवरा उसकी ज़िम्मेदारी वढ़ाएगा ही। कम किए जाने का उससे जरा भी अनुभव नही था।

"मेरे ख्याल से आप वात इस तरह वढ़ा रहे हैं। फिर पुलिस तो इसमें खीची जा रही है, जनाव। कल दिन-भर टाल की आग से हड्डियां वीनने वाले आप लोगों के ही साथी थे। मेजर वलराम ने हमारे इन्स्पेक्टर कुकरेती को पट्टी पढ़ा दी है, ना-तजुर्बेकार कुकरेती है ही। और फिर वह चार्ल्स,

स्विस काटेज का बुड्ढा। वह तो सदा से पुलिस का दुश्मन है। कुत्ते को पकड़ लो तो जमानत देने आ जाएगा। इनसे मिल गए हैं, डाक्टर दास जो कभी फौज मे थे। कहते है हड्डियो को लखनऊ भिजवा दो। हमने ठेकेदार राजाशाह को भी यही समझाया था। इन सब तुफैल बाधने वालों के बीच मे पुलिस क्या करे। आप ही वतलाइए।"

वाहर दीवान जी के कमरे मे थाने का टेलीफोन अपने अजीव घर्र-घर्र स्वर मे बोलने लगा। जोशी ने अपनी काफी पूरी निगल डाली। आती आवाजों से स्पष्ट था कि वहा चद्रन ने फोन उठाया था।

वजर वजा। जोशी ने झट कहा, "आपका मालूम पड़ता है।"

"हा, अशोक बोल रहा हू, विशन। यहां नैनीताल से ही।"

" नही, मेरी वहिन लेखा, लेखा दयाल यहा है। उसे वम्बई ले जाने आया था।…

" एक छोटी-सी वात थी। परसों रात प्रायरी मे एक लकड़ी के टाल मे आग लगी थी। कुछ लोगो को शक है कि आग लगाई गई और उसकी राख मे हड्डियो के टुकड़े मिले हैं। कुछ होगा मैं कह नही सकता।…

"लेखा आग लगने के समय, वल्कि पूर्व सारा दिन अस्पताल मे थी। उसका इस आग वगैरह के रहस्य से कोई संबंध हो ही नही सकता नही। मुझे कल शाम तो जाना ही पड़ेगा। यही डर था कि तुम्हारे महकमे की तहकीकातों की वजह से कही लेखा को यहा न रोक लिया जाय,…"हां, हां! वह जव बुलाई जाए, और जरूरत होगी तो आ जाएगी। मैं प्लेन से भेज दूगा। कोई समस्या नही। ·

"ठीक है। तुम कह दोगे। थैंक यू। नही, यहा जोशी वहुत ठीक आदमी है। जो बखेड़ा खडा कर रहे हैं, जिद्दी न हो जायें। और तो कुछ नही। कपिल से मैं लन्दन मे मिला था। वह फर्स्ट क्लास है। गुड वाई।"

विशन सिह कपूर तो आई० जी० का नाम था। फोन के समाप्त होते ही, जोशी (ठीक आदमी) ने कमरे की घंटी टुनटुनाई।

"कुकरेती कहा है? जल्दी बुलाकर लाओ।"

जोशी ने अशोक माथुर से कहा, "जैसा आई०जी० साहव से आप कह रहे थे, आपकी गारटी तो है ही। जरूरत हुई तो आप अपनी वहिन को उपलब्ध करा

देंगे। वैसी कोई जरूरत तो पड़ेगी नही। वाकये पर एक बयान लिखवाये लेते है। यदि लाश भी निकले तो उसका मिसेज दयाल से कोई लेना-देना न निकलेगा। वह तो इस मेजर बलराम की तीमारदारी में अस्पताल में थी। और उसी-के साथ मौके पर पहुंची।"

मुस्कराता गोपाल आकर बर्तन ले गया। चंद्रन ने आकर कहा, "चीफ सैक्रेटरी तो नही है, पेंडिग रखनी है काल सर?"

"नही। बाकी काल्स कैंसिल कर दो।"

जोशी ने कहा, "वह जयदयाल साहब की गुमशुदगी की बात थी।"

"गुमशदगी? डी० एस० पी० साहब।" अशोक माथुर ने शक को जबान पर घुमाते हुए कहा।

"वह गायब है न। इकतीस तारीख की रात्रि से?"

"आप शहर कोतवाल है। आपसे कुछ छिपा नही है। मेरा मतलब आप जयदयाल को जानते है। जरा मनचला और ऐयाश तबियत है। सर गिरधर दयाल का लड़का ऐसा निकलेगा। यह हमारा अभाग्य है। लड़की देने वाला दबता है।"

जोशी ने पूर्ण समझदारी में सिर को घुमाया।

"शादी के कुछ महीने बाद लेखा को बम्बई भेजा तीन लाख रुपये के लिए। कहा, उनकी टिम्बर कम्पनी का अन्यथा दीवाला निकल जाएगा। उन्हे मालूम था कि इस रकम की फिक्सड डिपोजिट लेखा के नाम है। हमारा हाथ दबा था फिर भी मैंने लेखा से उधार का उनके नाम कागज बनवाया। उस दिन से आज तक बेचारी को एक पाई नही लौटाई।"

जोशी ने कहा, "इनके ठेके तो नेपाल तक फैले है। अंधाधुंध कमाई है। राजाशाह ने पिथौरागढ में जमीन खरीदी है। रामगढ की तरफ सेब का बाग लिया है। लोग तो बहुत कुछ कहते है।"

"जिसको निभाना पड़ता है वही जानता है। दिल्ली से आई किसी फिरंगी औरत के साथ सटक गए। राजाशाह को उल्लू बनाने, जो खुद लुच्चा है, बैठा गए मेजर बलराम को। अब बेचारी लेखा क्या करती। उसे तो पति की मर्यादा रखनी पडी। कितना ही जी को न भाए पर उसे निभाना पड़ा अपने पति का भोंडा मजाक। वह तो सुबह ही वापस चली जाती इस सबसे दूर,

वापस बरेली। पर दूसरा ही हादसा हो गया। बलराम की चोट संगीन थी। तीमारदारी में उलझना ही पड़ा।"

राजाशाह जोशी को भी उतना ही खटकता था। "राजाशाह सच मे बहुत लुच्चा है। सारी सोसायटी को गदा कर रखा है। हल्दवानी में पूरा परिवार है, बडा लड़का अगले साल बी० ए० पढने जाएगा। इधर नैनी-ताल के मकान और कैम्पस मे खुल्लमखुल्ला दो-दो रखैल रखता है। फिर वह सरोज घोपाल इसी पाप-मण्डली की है। रुपया है तो कोई इन लोगों को इनके सही नाम से नही पुकार सकता।"

"मेरे ख्याल से जयदयाल की गुमशुदगी भरने की अभी जल्दी मे न रहें। वह तो किसी दिल्ली-कलकत्ते की होटल मे कट रही होगी।"

"हा—सो तो हो सकता है। तल्लीताल मे इनकी अपनी कारें रहती हैं। दिल्ली वाली टैक्सी लौटी भी थी उस रात। राजाशाह ही ताल पर गोली चलने की बात लेकर उछल रहे थे।"

"राजाशाह अपनी ईर्ष्या का फसाद पुलिस के द्वारा उठाना चाहते थे। तब से तो चुप हैं?"

"हा। कुकरेती कह रहा था अब तो टालमटोल है।"

"आपकी नौकरी विकट है। आपको सदा सबसे संगीन सूरत का सोचना पड़ता है। मैं तो यही जानता हू, सुलेखा न ताल पर थी, जब गोली चली, न प्रायरी में, जब आग जली। बस।"

"नही, नही। उनका किसी घटना से कोई सरोकार नही। वह तो जैसे मैंने कहा, हम छोटा-सा बयान लिखवा लेंगे।"

इसी आशय का थोड़ी देर बाद बरेली से डी० आई० जी० साहब का जोशी के लिए फोन आया, जिनके पास लखनऊ से आई० जी० का फोन आया था। जोशी ने थाने से बाहर निकलकर श्री अशोक माथुर को विदा किया।

बोट हाउस क्लब
(३ जनवरी)

डेढ़ बजे दिन

लच की मेज पर धूप जरूर आती थी। पर उससे ज्यादा हवा। अशोक पर रईसी और अधिकार फबता था। उसका कही पहुँचना और सीट पर बैठना ही काफी था। सब चीजे जैसे होनी चाहिए, शुरू हो जाती थी। कभी अनावश्यक प्रश्न नही पूछे जाते। पिता जी मे अधिकार और कुछ आग थी। अशोक मे अधिकार और स्टाइल आया। वेबी मे सिर्फ आग आई, जो वह मिग्स के टेस्ट पाइलेट बनने मे निकाल रहा था। खाना-पीना, हल्का और परिमित था। घी से भरा, दुगना और भारी नही था।

अशोक ताल की ओर देख रहा था। सुलेखा ने उसका ध्यान खीचते कहा, "हलो डायनेमो।" "हलो लेखा।"

"तुमने अच्छा किया मुझे यहां बुला लिया। यह ताल और पहाड़ अपने लगते हैं। वम्बई मे फ्लैट से सागर देखने को भी मन नही करता।"

सुलेखा की आँखें सूजी हुई थी। रोई है या रात-भर जागी है, या दोनों। उसका यहा पहुँचना लेखा के लिए हर तरह से भला सिद्ध हुआ। पर ऐसी मजबूरी थी ही।

उसने पूछा—"क्या पियोगी ?"

सुलेखा ने कहा—"चाकलेट, अगर यहां मिल सके।"

स्विस काटेज का स्टीवर्ड गोपाल आर्डर लेकर चला गया।

अशोक ने हंसकर कहा, "चाकलेट ठीक है। तुम्हे कुछ वजन बढ़ाना चाहिए।"

"यही इरादा है।"

कल शाम डाट पर खडी सुलेखा उत्तेजित और हंस रही थी। वह दिल्ली प्लेन से पहुँचकर सीधे कार से नैनीताल आया था। पूर्व रात्रि को एक बजे पहुचे फोन मे सुलेखा का स्वर इतना घबराया हुआ था।

सुलेखा के पास मिस्र की मम्मी की तरह पट्टियो मे सिर बंधाए जो व्यक्ति

खड़ा था, उसके जयदयाल होने का शक उसे भी उतरने के क्षण हुआ था।
"यह मेजर वलराम है, अशोक।" सुलेखा के स्वर मे व्यंजना थी कि अशोक को मेजर बलराम को अच्छा मानना है।

अशोक ने पूरी कोशिश भी की थी। जो परिस्थिति बढी और जिसके फलस्वरूप वलराम प्रायरी से स्विस काटेज उतर आये, उसका उत्तरदायित्व मेजर साहव की जिद्द थी। जिसका अकारण और खतरनाक होना वलराम को अस्वीकार नही था। पर जिसे निभाने मे वह अपने को मजबूर पाता था। अशोक को पूछना ही पड़ा "आप किस तरह है वलराम ?"

वलराम की आंखे झुक गई थी।

यह प्रश्न पूछा तो जाना ही था उन लोगों के वीच। सुलेखा अपने हृदय की तरफदारी नही छुपा रही थी। एक सुदूर ढग से मेजर साहव भी लेखा पर मोहित थे। पर सुलेखा से अधिक वलराम ने, सुलेखा के लिए खतरे को, उसकी जिद्द से बढने वाले खतरे को, पहचान, अशोक को नैनीताल लाने का आग्रह किया था। जो प्रश्न पूछना मन मे उठा हुआ था, वही अशोक ने पूछ डाला था।

सुलेखा की सूजी आखों की जिम्मेदारी वलराम पर थी। वैसे यदि चाहे तो उसे कोस सकती थी। यदि अन्याय करने की सहूलियत न दे तो संवंध किस काम के।

सुलेखा ताल की ओर गौर से देख रही थी।

"हम लोग कब चल रहे है", उसने विश्वास के साथ पूछा।

"आज-कल-परसों, जब चलना चाहो।"

"तो कल, कल रात्रि ?"

"मैंने भी यही निर्णय किया था। आज शाम शाह ने ड्रिक्स पर बुलाया है। बहुत पीछे पड़ रहा था। चलोगी ?"

"नही ! अब कभी नही।"

अशोक ने प्रश्न अपनी दृष्टि से पूछा।

"मैं अब नही लौटूगी। कभी नही।"

अशोक उसकी ओर देखता रहा।

"[illegible] बार पिताजी ने सम्मति दे दी थी। याद है न। सरदेसाई [illegible] दोनें करा देंगे ?"

"हां, हां। कोर्ट कानून से कोई मुश्किल न होगी। हम लोग तो सब इसी की प्रतीक्षा करते हैं। पिता जी मरने के पहले इस बारे में मुझे जिम्मेदारी दे गये थे।"

"सदा तुम्हारे ही मन की अटक थी।"

सुलेखा ने बात बदली, "बेबी कैसा है ?"

"जैसा हमेशा था। तुम्हारी तरह कुछ काम नहीं कर पाता। बातों में बिजनेस को गाली देता है। शायद चण्डीगढ़ में एयर फोर्स को सुनाता हो। मिग्ग कीमती खिलौने हैं, न जाने कितनी उम्र तक और खेलता रहेगा।"

"कभी चण्डीगढ़ चलेंगे, अशोक ? मैं, तुम, कमल और मधु अभी से संजीदा, अजय। बेबी को घेरकर पूछेंगे, वह किस तरफ है ?"

"जरूर" बिना बुरा मानकर अशोक ने उत्तर दिया।

चाकलेट का प्याला समाप्त कर सुलेखा ने कहा, "यह तो गजब भारी होता है।" सुलेखा ने बेतकुल्लफी से पेट सहलाया और अंगड़ाई ली।

"तुम्हारा सामान नीचे रायत में आ गया है। जाकर सो जाओ।"

अशोक से झगड़ना असंभव था। सुलेखा ने मन में ही कहा, हां, राम कुछ ऊंचाई से धरती पर उतर आया है।

"तुमने डाक्टर दास से सुबह कुछ पूछ लिया था न ?"

"हां। रात अचेत हो जाना थकावट के कारण था। मलहोत्रा साहब ठीक है। स्विस काटेज में है। वही देख-भाल कर रहे हैं।"

## लिलि काटेज
## (३ जनवरी)

### दिन २·३० बजे

कुकरेती ने पूछा, "आपके अनुसार आप और जयपाल कभी [illegible] लैला सम्मद से नहीं [illegible] थे। इकत्तीस तारीख की सुबह आप किस कारण दोनों डाट पर [illegible] डॉ. लैला सम्मद अपने साथी आप के साथ [illegible]

तो जयदयाल ने उसे अपनी पार्टी के लिए निमंत्रित कर लिया।"

राजाशाह ने चिढकर कहा, "इसमे क्या वेजा है ?"

"आपके अनुसार जयदयाल लैला सम्मद से आकर्षित हुआ, जो नाथ को नागवार गुजरा और आप भी उसीमें मज़ा लेने लगे।"

"हां।"

"मजा लेने लगे, क्या मतलब ?"

"मजा लेना। बस मजा लेना। नही समझते तुम ? चिढाना, रास्ते मे आना, अटकाना। जयदयाल उसको अकेले मे ले जाने की कोशिश करता तो हमलोग नही ले जाने देते। छेड़ना। समझ गए ?"

"तो छेडने के अलावा आपकी लैला सम्मद मे कोई दिलचस्पी नहीं थी ?"

राजाशाह कुछ देर तक सोचता रहा। उसने फिर कहा, "हम ओवर सेक्स्ड है। आप जानते ही है। माल फॉरेन और अच्छा था। आप कह सकते है कुछ दिलचस्पी थी। हां, वस।"

"जयदयाल और आपकी उत्तराखण्ड टिम्बर ट्रेडिंग कम्पनी है ?"

"कौन नही जानता। चालीस साल पुरानी कम्पनी है।"

"आप निर्यात भी करते है ?"

"हा। रेलवे स्लीपर का सवसे वड़ा हमारा आर्डर है।"

"आपके और जयदयाल के निर्यात विजनेस से लैला सम्मद का क्या सम्वन्ध था ?"

"कुछ भी नही। कौन कहता है ?"

"सरोज देवी घोषाल आपकी पार्टनर है ?"

"फर्स्ट क्लास केमिकल्स मे एक तिहाई हिस्सा है। घोषाल वावू हमारे कारखाने मे केमिस्ट थे। उनके मरने के वाद सरोज को हिस्सा मिला।"

"उसमे क्या वनता है ?"

"क्या वनता है ? यही रोजिन, रेजिन, कुछ आयुर्वेदिक दवाए। जगल के ठेकों मे जड़ी, बूटी और जंगल की पैदावार भी शामिल होती है। ज्यादा नीलाम हो जाती है, कुछ फैक्टरी मे लेते है। हमारा रोजिन मशहूर है।"

"फर्स्ट क्लास केमिकल्स से भी निर्यात होता है ?"

"वहुत थोड़ा। ज्यादा माल हिन्दुस्तानी फैक्टरियों को जाता है। छोटी

फैक्टरी है, पूरे साल नही चलाते। जयदयाल कैमिस्ट है, वह उसे बढाने की योजना कर रहा था।"

"कम से कम उस फैक्टरी के व्यापार से सरोज देवी परिचित होगी ?"

"हाँ। थोड़ा-बहुत।"

"सरोज देवी के अनुसार लैला सम्मद आपके और जयदयाल के किसी बिजनेस के मामले के लिए आई थी ?"

राजाशाह क्रोध या घबराहट में कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"सरोज ने ऐसा कब बयान दिया। वह तो अभी लन्च पर यहां थी।"

दुवला, मुट्ठी-भर हड्डियों वाला कुकरेती अपनी नोट बुक के और पन्ने पलट रहा था।

"जब बोट हाउस क्लब मे मेजर बलराम पर हमला हुआ, आपको शक नही हुआ था कि वह जयदयाल नही है ?"

"हम लोग पीये हुए थे। हमको क्या, उसकी जोरू को भी शक नही हुआ होगा तब !"

"लैला सम्मद के साथी मिस्टर नाथ सवेरे ही चले गये। आपके पार्टनर, जिन्हे आप छेड़ रहे थे, आपके अनुसार अस्पताल मे बन्द थे। फिर आप किस कारण मिस सम्मद की खोज मे जुटे थे ?"

"मैं जिम्मेदार आदमी हूँ, मिस्टर कुकरेती। रात ताल पर गोली चली थी। फिर वह हादसा हो गया था। सब पर अनिष्ट की आशंका छायी हुई थी। सब मुंह ताकते है तो किसीको बढ़कर कुछ करना पड़ता है।"

"मेरा मतलब उस तहकीकात से नही था। उसमे तो आपके साथ पुलिस गई थी। आपने रायल होटल जाकर उसका पता, पासपोर्ट नं० लिया, दिल्ली-बम्बई फोन लगाते रहे।"

"आप गलतफहमी मे है। फोन मेरे बिजनेस के बारे मे हुए। उनका कोई लैला सम्मद से संबंध नही है। वैसे मैं आदमी हूँ धुन का जिद्दी। एक बात उठाकर छोड़ता नही आसानी से। यदि जयदयाल ने उसे कही गायब कराया था तो मैं उसे खोज डालने वाला था।"

कुकरेती के अगले सवाल पूछने के पूर्व ही राजाशाह ने पूछा, "लैला सम्मद

से विज़नेस की वात क्या आपको सुलेखा ने वतलाई ?" राजाशाह की आशंका विलकुल स्पष्ट थी।

"नही। उनका बयान नहीं हुआ।" कहते ही कुकरेती को मालूम हुआ कि वह जाल मे गिर गया था।

"तो यह फसादी फौजी का कथन है। वह सब झगड़ों की जड है। आपको उसकी इकतरफा बात पर यकीन करने का कोई अधिकार नही। आप सरोज और सुलेखा से बयान लीजिए कि उनके बीच क्या बात हुई।" राजाशाह ने मूंछों पर ताव दिया।

"पहली तारीख की रात अस्पताल से आप सीधे घर आए ?"

"और कहा जाता ? मैने कुछ देर सरोज का इंतजार किया, फिर उसे देर हो रही थी। मैं घर चला गया।"

"सरोज देवी अस्पताल से अकेली अपनी काटेज लौटी होगी ?"

"सरोज देवी अकेले हराडागा के जंगल से कौसानी जा सकती है। बाघ का शिकार कर सकती है।"

राजाशाह सरोज के गुण गाते रुक गया। सरोज कुकरेती के बच्चे को बगल मे दबाकर चाइनापीक चढ सकती थी। स्वयं दो उपपत्नियों के नायक होने के कारण उसे सरोज की पक्की कमर की कद्र थी।

"कोई गवाही ?" कुकरेती पूछ रहा था।

"मेरे घर आने की ? एक नही दो है। पूर्णत: सतुष्ट गवाहियां।" राजाशाह ठठाकर हंसा।

"पहली की शाम सात बजे के करीब।"

"सरोज अस्पताल से सीधे यहां आई थी।" राजाशाह ने उसे चिढाते हुए जोड़ा, "वहा भी गवाही है।"

"क्या जयदयाल साहब पहले भी इस तरह बिना किसीको बतलाए गायब हो चुके है ?"

"कई बार। हम लोग दिल्ली मे थे, तीन दिन को फरीदाबाद में, एक होटल मे अज्ञातवास कर गया था। अक्सर कैम्प से चलता नैनीताल के लिए, नैनीताल जवाव मिलता कैम्प में है।

"गुप्त बातों और कारनामों का उसे बहुत शौक था। कभी-कभी तो अपने घर मे ही गुप्त हो जाता था।"

"उनके चरित्र के ज्ञान के अलावा आपके पास कोई और सबूत है कि जयदयाल कहीं छिपा है और कुशल है? आखिरकार आप लोग जिम्मेदार धन्धे वाले है। ऐसे उसके जाने से नुकसान भी तो हो सकता है?"

राजाशाह ने कुकरेती की तरफ तौलते हुए देखा। यह जतलाने कि वह उसकी चाल अच्छी तरह समझ रहा है।

"देखो कुकरेती, जगलात का धन्धा दूसरी तरह का है। वह दस से पांच नही होता, हर रोज़ नही होता। जब तुम लोग घर मे घुसे होते हो हम कैम्प मे फिरते है। पचास जगह काम चलता है, उसकी सवारी में ही एक महीना लगता है। जयदयाल रईसजादा है, मनचला है। सब ही जानते है, सब काम मै सभालता हूं। उसकी नीयत बिगड़ने वाली है, मैंने लक्ष्य किया। वह भागने वाला है—मैं समझ रहा था। कोई वह चिट्ठी छोड़ गया हो, ऐसी भी बात नही।"

कुकरेती ने कहा कि वह हमीरा और हीरा से कुछ पूछताछ करना चाहता है।

"वे तो हैं नही। उनकी नेपाल से जल्दी आने की चिट्ठी आई है। खरीद-फरोख्त करने मार्किट गई है।"

"नेपाल जा रही है?" कुकरेती ने दोहराया।

राजाशाह ने उठकर दूर की मेज पर से चिट्ठी उठाकर दी। "यही है शायद। मैं तो नेपाली पढता नही।"

कुकरेती ने लिफाफे को ध्यान से देखा। फिर राजाशाह से बिना पूछे अन्दर रखे खत को जल्दी मे पढ़ गया।

उसने राजाशाह को चिट्ठी लौटा दी। "यह तो दो महीने पहले की चिट्ठी है। इसमें कोई बुलावा नहीं है।"

राजाशाह ने स्पष्ट ही चकराकर कहा, "शायद दूसरी होगी। किन्तु किसी बात के बिना तो साली कभी भी नैनीताल छोड़ने को मानतीं नहीं। आप थोड़ी देर ठहरें तो आती होगी।"

कुकरेती ने उठते हुए कहा, "नहीं, मैं फिर आऊंगा। नेपाल भेजने से पहले आप डी० एस० पी० साहब से इजाज़त ले लीजिएगा।"

## मधु व्यू
## (३ जनवरी)

### दिन ३-५० बजे

सरोज घोपाल अपने छोटे ड्राइंग रूम मे ही बैठी कुकरेती का इंतजार कर रही थी।—"राजाशाह ने फोन पर बतलाया था कि आप शायद आएंगे। इसीलिए मैंने लौटने की तैयारी स्थगित कर दी।"

छोटा कमरा चीजों के जमाव से उमड़ा था। पहले तो फर्नीचर दुगुना था। फिर प्रदर्शन की वस्तुएं—पोरसिलेन, ब्रास, क्ले, लकडी काली धातु, सीपी। घड़ियां, दैत्य-मुख, खिलौने, स्क्रीन, मूर्तियां, कुवड़े, बौने, नग्न मिथुन। प्रिंटस, गद्दे, तकिए, नमदे, कालीन।

"आपको चीजें जमा करने का शौक है?"

"हां, कुछ है तो। मिस्टर घोषाल, बंगाल केमिकल्स में थे। वे अक्सर विदेश जाते थे। वहुत कुछ उनका लाया है।"

मोटी? विलासवती? नही, यह औरत हृष्ट-पुष्ट है। कुकरेती ने तय किया। मधु व्यू नाम ही मे है, वैसे ही।

"आपके पति केमिस्ट थे?"

"चीफ केमिस्ट थे। उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। पहली कम्पनी ढल भी रही थी। वह रिटायरमेंट जैसे मे बरेली आ गए।"

"आप भी केमिस्ट हैं?"

"दोस्त लोग मानते है।" सरोज ने हंसकर कहा, "वैसे नही हू। घोपाल साहब की लम्बी बीमारी की नर्स थी सो दवाओ वगैरह से खूब परिचय है। फिर केमिकल्स कंपनी की हिस्सेदार होने पर वहा की देख-रेख मे जानकारी हो जाती है। सिर-दर्द के लिए या नीद की गोली अपने ढंग से लोगों को डिस्पेंस भी कर देती हू।"

"आप जयदयाल और लैला सम्मद के गायब हो जाने के बारे मे क्या जानती हैं ?"

"यही कि सुलेखा ने मुझे पूर्ण बेवकूफ बना दिया। मैं जयदयाल को दस साल से जानती हूं और धोखा खा गई। आप सुलेखा से पूछिए। यदि वह प्रपंच बनाए न रखती तो जयदयाल भाग न पाता।"

"आपका मतलब है सुलेखा दयाल, अस्पताल मे मूछ उतरने के पूर्व ही मेजर बलराम को पहचान गई थी ?"

"मेरा मतलब, यदि जयदयाल, कुछ दिनों के लिए अज्ञातवास मे जाने वाला था तो सुलेखा को उसकी पूर्व सूचना किसी प्रकार भी हो सकती थी—जब वह जयदयाल के षड्यंत्र मे मदद कर रही थी।"

कुकरेती को सुलेखा और मेजर बलराम के बीच की बिजली का कुछ मालूम था। वह इस सुझाव से सहमत न हो सका। बलराम को प्रकट न करने का कारण उसका अपना स्वार्थ या जयदयाल और उसके मित्रो के लिए मजाक का प्रति उत्तर तो संभव था। जयदयाल के साथ षड्यत्र नही।

"सरोज देवी, जयदयाल के षड्यत्र मे डमी (पिट्ठू) की आवश्यकता ५ मिनट से ज्यादा की नही थी। जयदयाल को नाथ के हमले की कोई पूर्व सूचना नही हो सकती थी। यदि वह न होता तो १२.१० बजे तक मेजर साहब मूछें उतार अलग हो जाते। जयदयाल ने मेजर को अपनी जगह सिर्फ क्लब से लैला के साथ खिसक जाने के लिए बैठाया था। सुलेखा दयाल ने जो नाटक चलाया वह जयदयाल के षड्यंत्र का भाग नही हो सकता था।"

सरोज जो कुकरेती को कुछ छोकरा-सा मान व्यवहार कर रही थी, संभलकर बैठ गई।

"दूसरी ओर जयदयाल अल्प या दीर्घकाल के लिए गायब होने क्लब से उतरे हों—लैला सम्मद का विदेश मे कुल जमा सामान रायल होटल मे पड़ा है, लैला इसलिए दीर्घकाल के लिए गायब होने के इरादे से क्लब से नही निकली थी। ज्यादा सभावना यही है कि दोनो थोड़े समय के लिए नौका-विहार के ही लिए निकले थे। पर यहा पर दो प्रश्न है। नौका-विहार या लैला सम्मद के साथ एकांत खोजने का क्या उद्देश्य था—सिर्फ नाथ की डाह के लिए—कि आप सब लोगों की आंख मे धूल झोकने ?"

सरोज ने कहा, "नाथ की ईर्ष्या क्या भयानक रूप से सिद्ध नही हो चुकी ?"

कुकरेती ने खीझकर कहा, "यह साधारण प्रणय का नौका-विहार आगे चलता नही। यदि वह लोग सिर्फ परस्पर एकात ही चाहते थे तो गोलिया नववर्ष के लिए पटाखे मात्र थे। उनका कोई संगीन कारण नही हो सकता। फिर लैला सम्मद होटल लौट आती। लैला सम्मद के न लौट आने से यह सिद्ध है कि वह किसी भी सूरत मे प्रणय-विहार नही था। आप सव मुझसे झूठ वोल रहे है।"

सरोज सोचने लगी। कुकरेती ने कहा, "—लैला सम्मद दिल्ली २९ दिसम्बर को पहुची, अगले दिन होटल में मिले मिस्टर नाथ के साथ नैनीताल चलने को राजी हो गई। उन्हे पुरुषों से कोई विशेष छुआछूत नही थी। वह जयदयाल के साथ स्वय अकेली नौका-विहार को निकली है। न पिस्तौल से डराकर इस्मत लूटने का मौका है, न गोली चलाकर शील-भग से वचने का।"

सरोज ने सिर हिलाया, "नही कुकरेती साहव। आप सिर्फ सिद्ध कर रहे है कि यदि साथ चलने का कोमल कारण था तो पिस्तौल का संगीन इस्तेमाल नही हुआ। वस यही। यह भी हो सकता है कि आधे ताल पर निकल जाने के वाद उसी समय अपने साथ भाग जाने की कीमत जयदयाल ने उस लडकी से तय कर ली हो। एक वहशी उत्तेजना की भी सभावना है, पर वह जयदयाल की शैली नही थी।"

कुकरेती ने सिर झुकाकर अपनी गलती स्वीकार की। उसे अपने चेहरे पर विजय छिपाने का विश्वास नही था।

"कीमत या घूस का एक पूर्व प्रश्न भी है, मिसेज घोषाल। इकतीस तारीख-भर जयदयाल लैला का पीछा कर रहे थे। आप लोग उन्हे, और विशेष कर नाथ, एकात नही दे रहे थे। यह तभी संभव है, जव लैला को जयदयाल से विल्कुल उदासीन माने। पौने बारह बजे वह एकाएक राजी किस कारण से हो गई ?"

सरोज ने कोई भेद न खोला, "क्या भाग्य और स्त्री—मन इतना भी

नही बदलते ? आप वैसा रोमाटिक सुझाव देते तो मैं ही आपके साथ उठ चलती।" वह हंसने लगी।

कुकरेती ने अपना पहला वार किया, "आप लोगो के ऐसे विचार है तब ही तो समझ नही आता। उस दिन १२ बजे पिस्तौल की आवाज हुई। मित्र जयदपाल सामने बैठे थे। प्रेमी क्लब से भागे और गायब हो गए। आप लोगों को फिर संगीन कल्पना क्यों हुई ? पहली तारीख को आपने और राजाशाह ने ताल को टटोलने के लिए क्यो पुलिस को विवश किया ? आपको लैला सम्मद की क्या चिन्ता थी ? क्यों यह चिन्ता थी कि वह मारी जा सकती है ! या खून करके फरार हो सकती है ! उसे अपनी देह के बारे में एतराज नही था। फिर उसके पास क्या था जिसको बचाने या छीनने के लिए गोली चल सकती थी ? जयदयाल की भूमिका मे एक अज्ञात के आते ही सेनेरियो कैसे बदल जाता है ?"

सरोज अचकचाई पर उसने कोशिश की, "एक असाधारण घटना घट जाती है, हम बाहर भागते है। सोचते बाद मे है।"

"उसी समय, हां ! अगले दिन, होटल मे जांच कर मल्लीताल मे बोट वाले से पूछकर" कुकरेती ने अपना अविश्वास बताया।

"जयदयाल को हम जानते थे, कुकरेती जी। उस अजनबी को हम नही जानते थे। वह हत्यारा, बहशी, तिरस्कृत प्रेमी, कुछ भी हो सकता था।"

"जिसने आपकी जबानी शाम-भर लैला की ओर देखा भी नही था।"

सरोज चुप हुई। कुकरेती दूसरी ओर बढा।

"श्री नाथ का आप पता दे सकती है ? वह अपने होटल के दिए चण्डीगढ़ के पते पर प्राप्त नही है।"

"नही, हम उनसे उसी सुबह पहली बार मिले थे।"

"आप लोग क्या लैला सम्मद को पहले से जानते थे ?"

"बिलकुल नही।"

"जयदयाल भी नही जानता था ?"

"नही।" सरोज का उत्तर जिसे कुकरेती ने ध्यान से सुना, सत्य से आश्वस्त था। कुकरेती थोड़ी देर के लिए चुप रहा। उसने सरोज को कुछ विचलित पाया। सरोज को लगा, कही वह फंस गई।

कुकरेती ने अपना दूसरा वार किया, "तब फिर आप और राजाशाह नाथ के हमले के पश्चात् जयदयाल उर्फ बलराम की तलाशी किस लिए ले रहे थे? नाथ ने आकर कहा कि लैला गायब है। इस सूचना पर आप लोगो ने जयदयाल मे किस चीज की तलाश प्रारम्भ कर दी ?"

सरोज ने उत्तर देने से बचाव ढूंढा, "राजाशाह से पूछिए। डाक्टर दास और सुलेखा ने उसपर एतराज किया था।"

"नही मिसेज घोषाल, राजाशाह ही नही। आप अस्पताल से क्लब लौटकर आई थी। सिर्फ बिलियर्ड रूम मे पड़े जयदयाल की मार्टिनी के गिलास को धोकर वापस करने ही नही; आप बिलियर्ड रूम मे कुछ खोजने गई थी।"

सरोज का रंग उतर गया। कुकरेती को लगा कि वह कही पास है। पर किस बात के, कहा "

'चोट की घटना के बाद हम लोग एकदम अस्पताल चले आए थे। किसीको तो वापस जाकर क्लब मे हाल देखने थे। राजाशाह ने मुझसे कहा था।"

"डाक्टर दास और सुलेखा अस्पताल चलने की तकलीफ न करने को कह रहे थे। आप फिर भी चले। आपने कहा, मेरा घर उसी ओर है।"

"वह तो ठीक है। ऐसे अनुरोध होते हैं और ऐसे उत्तर देने पडते है। पर राजाशाह ने मुझसे कहा था कि किसीको लौटकर आना पड़ेगा।"

"कब ?"

"रिक्शे मे—या अस्पताल मे। मुझे ठीक याद नहीं।"

"राजाशाह अस्पताल से आपसे पहले गए। वह आपके लिए रुके पर आपको देर हुई, उन्होने चल देने का निश्चय किया।"

"इससे क्या ?"

"राजाशाह आपके साथ घर की ओर चलने के लिए रुके थे। वे सीधे घर गए। उन्हे नही मालूम था कि आपको, किसीको वापस दूर क्लब लौटना है।"

सरोज ने क्रोध मे कहा, "वह भूल गए होंगे। आपके चक्करदार प्रश्नो मे कोई भी गड़बड़ा जाता है। मेरे क्लब मे खोज करने की कौन आपको गवाही देता है। मै तो सिर्फ जरा-सी देर के लिए झांकने गई थी।"

"बिलियर्ड रूम के आगे मैनेजर के कमरे मे बैठे नाथ ने आपको देखा था।

\

उस समय तक भी क्लब में कुछ लोग थे। आप किसीसे मिली नही, किसी-से आपने नाथ या किसी और बारे में जांच नही की।"

सरोज चुप थी।

"आप लोग फिर बात छिपा रहे है, मिसेज घोपाल।"

"यह आपकी सनक है। आपकी नींव छोटी है, दीवारे ऊंची। जीवन तर्क से नही होता। कितनी बाते हो सकती है। जयदयाल और लैला निकले, न्यू इयर के फायर किए, अपने रस मे डूबे कही निकल गए। क्या पता आज वह कलकत्ता मे हो!"

"पहली तारीख की शाम किसी अज्ञात व्यक्ति ने लकडी का टाल प्रायरी मे जलाया, जिसमें मिली हड्डियो से सिद्ध है कि उसमें एक लाश भी जली थी। एक व्यक्ति की—पुरुष या स्त्री। इस घटना का आपके मत में जयदयाल या लैला से कोई सम्बन्ध नही?"

"क्या आपने सिद्ध कर लिया है कि वह हड्डियों के अवशेष घोड़े, कुत्ते भेड़िये के नही हो सकते? आपको पूरी हड्डिया या कंकाल पहचान सकने लायक संपूर्ण हड्डियां मिल गईं?"

"नही! टुकड़े और चूरा काफी है। डाक्टर दास की राय लखनऊ में सिद्ध होगी। उस सफेद टुकड़ों और चूरे से ऐसे आदमी का अनुमान है जिसने ११५ लाशे जलाई है।

सरोज चौंकी।

"मेजर बलराम ने अपने ११५ कुमाऊनी वीरो को सद्‌गति दी थी। पर यह सेना का इतिहास है।"

सरोज ने एक अजीब कटु प्रचण्डता से कहा, "मेजर बलराम की राय पर आप अपना संपूर्ण आधार बना लेने मे जरा नही हिचकते। वहा आपकी यह भी मीन-मेख श्रद्धापूर्ण हो जाते है।"

कुकरेती ने अपने पर नियंत्रण किया। यह औरत बलराम से तीव्र घृणा करती थी।

"मकान मे प्रवेश करने के कुछ सबूत है। आग केरोसिन के दो टिन उलट-कर जानबूझकर लगाई गई थी।"

"कुछ चोरी हुआ? कुछ घुसने वाले की पहचान है? जयदयाल वहा रहता

था। इकतीस तारीख को चार-पाच घंटे हम लोग वहा थे। जयदयाल उन्हें वहां रोकना चाहता था, पर नाथ की जिद् पर वे लोग होटल लौट आए। सुलेखा का कमरा बन्द था। मैं लैला को ऊपर जयदयाल के बाथरूम ले गई थी।"

कुकरेती के आगे की राह बन्द की जा रही थी। पर इससे सिद्ध होता था कि सरोज इन सभावनाओं पर विचार चुकी है। पर क्यो? उसने मेजर बलराम की चेतावनी की अवहेलना करके कहा, "जिस पिस्तौल से ताल पर फायर हुए थे वह हमे प्रायरी मे मिली है।"

"कौन-सी पिस्तौल?" सरोज ने अपने मोटे हाथों को एक दूसरे मे जकड़कर पूछा। "आपको कहां मिली?"

कुकरेती उसकी ओर देख रहा था। सरोज ने संभलकर पूछा, "कुकरेती जी, जयदयाल के पास कोई पिस्तौल या रिवाल्वर नही था। यह हम सब जानते है। लैला के पास भी शायद ही रही हो और फिर उसे पार्टी मे पिस्तौल लाने की कोई आवश्यकता नही थी।"

"लैला के मित्र नाथ एयरफोर्स अफसर थे। और वह पिस्तौल बोट हाउस क्लब ला सकते थे।"

सरोज फंदे की ओर बढी। "उस रात लैला को न पाकर उसे ढूंढने नाथ वापस प्रायरी गया हो।" वह कुकरेती की उसके प्रति धारणा देख रुक गई।

कुकरेती यह नही चाहता था। उसने सरोज की बात पूरी करनी शुरू की। "जब आप बोट हाउस क्लब पहुची तो वह वही था। पर कुछ देर बाद वहा से फूट गया। उसे लैला को खोजने की धुन तब या निकट मे रायल मे भी उसे गायब पाकर फिर हुई हो। अपनी धुन मे वह प्रायरी की ओर बढ़ गया हो। अभी डेढ बजे से ज्यादा समय नही था।"

सरोज इससे उदासीन थी। "किसलिए? वहां आपके पाने के लिए एक पिस्तौल फेकने?" पर यह स्पष्ट था कि उसकी बतलाई पिस्तौल की बरामदगी से सरोज को गहरी चिन्ता हो गई थी। सरोज की घटनाओं के बारे मे जो अपनी और अप्रकट मान्यता थी उसमे किसी पिस्तौल का प्रायरी में होना या पहुचना कठिनाई उपस्थित करता था। सरोज चेहरे से शांत थी,

पर उसके हाथ एक-दूसरे को सख्ती से जकड़े थे।

"पुलिस जयदयाल को खोजने के लिए क्या कर रही है?"

"कल इकतीस तारीख से पांचवां दिन है न? जयदयाल प्रणय-लोक से लौट आएंगे।" कुकरेती ने अपनी विफलता से क्रुद्ध हो कहा। वह उठ खड़ा हुआ।

## रायल होटल

### संध्या, ४-३० बजे

अभी जाऊं। एक घंटे बाद जाऊं। नहीं जाऊं। धत, जाऊंगी तो सही। साड़ी पहनूं, स्लेक्स और कोट। पर स्लेक्स बिलकुल अनलकी है। उसे आना चाहिए, जो प्रायरी तक दौड़ने को तैयार था और दौड़ ही जाता शायद। उसे स्विस काटेज से दस कदम पर रायल दूर पड़ रहा है। उसका दिमाग सदा खाने की चीज़ों पर जाता है। वहां वेटिना को तो कोई भूखी शक्ल मिल जानी चाहिए। अपने अतृप्त मातृत्व के लिए। कोई बच्चा तो है नहीं।

खुदगरज़ कहीं का। जरूरत थी तो रात-भर हाथ पकड़े रहा।

अपने दुमंजिले कमरे मे चहलकदमी करती सुलेखा ने खिडकी से देखा, कुकरेती मैनेजर के साथ निकल रहा है। उसने एकदम शाल लपेटा और खटाखट नीचे उतरी। कल दिन-भर यही कुकरेती मेजर साहब का हनुमान बने हुए था। उधर से आते कुकरेती का तुले समय पर सामना कर, खास माथुर अंदाज से सुलेखा ने कहा, "कहिए कुकरेती साहब, किस तहकीकात मे आये थे?"

दुबले चेहरे के प्रखर, पर शर्मीले कुकरेती ने कहा, "कुछ नही मिसेज दयाल। जरा मनीजर बाबू से मिलना था।"

"आप स्विस काटेज की तरफ जा रहे है?"

"हां, जाऊंगा।"

"मुझे भी जाना था। मेरे लिए पांच मिनट ठहर सकेंगे?"

कुकरेती ने सहमति मे सिर हिलाया।

"तो फिर चलिए ऊपर। आप चाय पीजिए। मुझे तैयार होने में दो मिनट लगेंगे।"

कुकरेती सीढियो के नीचे ही रुके रहने की कुछ बात कहने वाला था। सुलेखा ने कहा, "चलिए!" कुकरेती को उसने सीढिया चढने पर वाध्य किया।

"वैठिए"—खिडकियो के पास सोफे पर वैठ उसने कुकरेती को वैठाया। चाय वनाई।

"आप मेजर वलराम को पहले से जानते है ?"

"मै तो उन्हे पहचानता भी नही था। पर सुन रखा था। उनके वारे मे।" मिसेज दयाल, आपने तावा नदी की विजय के वारे मे नही सुना होगा। मेरा वड़ा भाई चौथी कुमाऊं मे जमादार था। गाव वालो की ज़वानी दाजू वलराम के वारे मे वहुत सुना था।"

"वलराम चौथी कुमाऊं मे क्या था ?"

कुकरेती की पहाड़ी आंखें उत्साह से चमकने लगी। "चौथी कुमाऊं छत्तीस लड़ाइयों मे नाम कमा चुकी है। पुराने नामी वटेलियन है। पर तावा नदी जैसी विजय कभी नही पाई। और यह विजय दाजू वलराम की थी।"

जो पुलक की वात है, वह लम्वी होनी चाहिए। उसने चाय की केतली मे हाथ लगाया—ठंडी थी। मुझे तो खाने-पीने की वातो मे होशियार होना है। उसने कुकरेती को प्याला उठाने से रोका और एकदम उठी। टेलीफोन पर स्टीवर्ड से गरम चाय आनन्द-डवल पर मंगवाई और तीस सेकेंड में न पहुंचने पर मैनेजर की हाजरी मागी।

कुकरेती की कल्पना मे अभी तावा नदी का पानी चमक रहा था। "तावा नदी के उस पार हर चोटी पर दुश्मन की किलावन्दी थी। हमने इस तरफ नई चौकिया लगाई थी। हमारे पास विशेप तोपखाना नही था। तावा नदी देश की आसान हद वनती है। कही हमारी फौज आगे वढी, कही पीछे हटी। पर उस सारे तावा सेक्टर मे स्थिति पूर्ववत् रही। उस अमावस्या की रात तक।"

"ऐसा हमला न कितावो मे लिखा है, न हुआ है। दाजू के नेतृत्व में दो कंपनियां रात मे उतरी, नदी पार की, और सीधी ऊपर चढाई तय की। सव

कुछ चुपचाप। नदी के मोड़ के आगे, गोलाबारी के दोनों ओर से मोल-भाव हो रहे थे। इधर कुछ नहीं। सुबह के चार बजे तक हमले की पोजीशन में पहुंचा जा चुका था। तब तीन दिशा से हमला बोला गया। कुमाऊं वालो ने आगे बढकर स्टेन और आखिर मे हाथ से हाथ लड़ाई मे एक के बाद एक उनकी पन्द्रह लाइनों वाली पूर्वी रेंजर कम्पनी का सफाया कर दिया। उनकी छह मशीनगन हक्की-बक्की रह गई।"

"अब यहां हमको युद्ध-परिस्थिति समझनी होगी। अन्यथा आप सोच रही होगी कि ऐसी मौत के मुंह मे जाने वाली बहादुरी बेवकूफी थी।"

विस्मय से नेत्र विशाल किए युद्ध-विज्ञान की शिष्या की ऐसी कोई धारणा नही थी।

"इस हमले की स्वीकृति देने के तीन कारण थे। पहला युद्ध-विराम घोषित होने में कुछ ही देर थी। ऐसी सूचना कमान में आ चुकी थी। दूसरा तावा नदी पर सीमा रखना भारत के लिए परमावश्यक था और नदी की निचली सीमा में कई जगह हमारी सेना को पीछे हटना पड़ा था। नदी के दोनों ओर की बढ़ाई-घटाई यदि बराबर न हुई तो सीमा को नदी से दूर हटाने की बात उठ सकती थी। यह पराजय मानी जाती। तीसरा, तावा टेकरी मोड़ पर आई उन लोगों की चौकी थी। उधर से इसमें रसद-व्यवस्था कठिन थी और बाकी चौंकियो से यह दूर पड़ती थी। इसे विजय करना जितना कठिन था, इस-पर विजय रखना उतना कठिन नहीं था। हमारी ओर से उधर रसद पहुंचाना भी कठिन था, क्योंकि घाटी पर उतरा आसान शिकार बन सकता था। इसी तरह के चुने नक्शे के बिन्दुओं को कमान ने सुझाव भेजा था। जब दूसरे लोग सोच ही रहे थे, दाजू ने बीड़ा उठा लिया था।"

सुलेखा ने पूछा, "फिर क्या हुआ ?" उसने झटपट चाय बनाकर कुकरेती को दे दी।

"दूसरा सीनियर अफसर चढ़ाई में मारा गया था। कुल मिलाकर सौ से कुछ अधिक जाने बची थी। पर रसद और हथियार भंडार भर मिले थे। दाजू वहाँ साथियों के साथ जम गये। युद्ध-विराम जो एक-दो दिन में आने वाला था, पूरे सात दिन बाद आया। शत्रु ने खीझकर कुछ भी बाकी न छोड़ा, तोपे घुमाकर नौ-नौ घंटे गोलाबारी करते। दो बार छापे की

कोशिश भी हुई, पर कुमाऊं की ए और बी कम्पनी के जवान वहा से नही डिगे। युद्ध-विराम की घोषणा के दिन वे लोग कुल पन्द्रह बचे थे। बढी दाढियो से काले, दो दिन से भूखे। तावा नदी का स्नान सदा पूर्व मनाया जायेगा।"

कुकरेती एकाएक चुप हो गया।

सुलेखा ने धीरे से पूछा, "और आपके बड़े भाई, जमादार साहब ?"

"वे पाचवें दिन तक दाजू के सुख-दुख के साथी रहे। एक मार्टर का गोला उन्हे खा गया। वे उनमे से थे जिनकी अस्थिया तावा नदी के तट पर जलाई गई। दाजू ने स्वयं आग लगा दी।"

सुलेखा ने पाया कि कुकरेती अपनी बुद्धिमान आंखों से उसकी ओर दया से देख रहा था। वह कुछ समझ न पाई।

"मिसेज दयाल, जमादार लाखन कुकरेती को वही जीवन और मृत्यु मिली जो वह चाहता था। गांव मे हमारी झोपडी मे उसका वीर चक्र का तगमा भी टगा है, जो उसकी मृत्यु के एक वर्ष बाद आया।"

सुलेखा ने कुछ झिझकते पूछ डाला, "बलराम को क्या मिला ?"

"मेजर बलराम सेना से निकाल दिये गये। पिछले महीने तावा-दिवस मनाया गया था। उन पन्द्रह में से तीन हमारे गांव के है। बडा खाना हुआ, पाइप बैंड बजा। बहुत रम चली। जिसे वह तावा टेकरी से कधो पर चढ़ाकर उतरे थे, वह नही था।"

उत्साह का कवि कुकरेती उससे सिकुडता जा रहा था।

"पर ऐसा क्यो हुआ ? तुम्हें मालूम तो होगा कुकरेती ?..."

"तुम्हे बतलाना पड़ेगा।" सुलेखा को समझ आया कि कुकरेती की आखों की करुणा उसके लिए थी।

कुकरेती चुप ही रहा। उसका चेहरा अजनबी और पाषाण होता जा रहा था। यदि इस समय वह उठ जाता तो सुलेखा को मालूम था वह उसे रोक भी नही पायेगी।

सुलेखा ने हारकर अंधेरे मे तीर मारा, "मेरा छोटा भाई भी एयर फोर्स मे है।"

कुकरेती बोला तो सही, पर आत्मीयताहीन शब्दों मे।

"आप बड़े लोग हैं मिसेज दयाल। आप लोग ऊपर से वह न्याय और अन्याय देख सकते हैं जो हमे नही दीखता। ऐसा हुआ, ऐसा होता है, यही हमें समझ मे आता है। मेजर बलराम एमरजेंसी अफसर थे। उनमें से बिरले ही अच्छी रेजीमेंट मे गए। दाजू तो खैर सदा हर जगह फर्स्ट ही आए होगे। पर चौथी कुमाऊं मे अफसर बड़े लोगो के बेटे ही होते हैं। बड़े सेवा अधिकारियों के बेटे या रईसों के रेगुलर कमीशन वाले बेटे। छत्तीस युद्धो मे यश कमाई हुई बटेलियन है।"

"मैंने कहा था दो कंपनियों ने हमला किया था। कप्तान कालरा के बाप नौ सेना में एडमिरल है। उनके चाचा और मामा भी फौज में है,—एक ब्रिगेडियर—एक पूरे कर्नल। कालरा हक से चौथी कुमाऊं में थे। उनकी मृत्यु के बारे में कोर्ट मार्शल हुआ। उन्हे वीरगति नही प्राप्त हुई थी। पीठ पर गोली खाकर मरे थे। हमले मे कायरता दिखाने के लिए चढाई के समय दाजू को उनपर गोली चलानी पडी थी।"

"इस बात को छिपाने के लिए कोर्ट मार्शल किया गया। बचे हुए पन्द्रह जवानों मे से एक भी जवान सच के अलावा कोई गवाही नही दे सका। उच्च अधिकारियो को लगा कि दाजू के इन्कार से लीपापोती की गवाही नही बन पाई। कालरा परिवार अपने पुत्र को खोकर उसकी स्मृति मे शायद परमवीर चक्र चाहता था। बात बन न पाई। दाजू के डेकोरेशन की फाइल भी खो गई। पर पहली इमरजेंसी छंटनी मे उनका नाम जरूर आ गया। ब्रिगेडियर कालरा आर्मी हेड क्वार्टर मे थे। हम तो इतना ही जानते है, यह पूरी बात न हो। पर यह पूरी बात जरूर है कि दाजू मेजर कभी वर्दी नहीं पहनेगे। उनकी किस्मत ही है, दूसरो की चोट खाने की।"

सुलेखा को कुकरेती की आखिरी चोट का बुरा नही लगा। सुलेखा ने कहा, "जो वीर इतना युद्ध जीत सका वह साधारण दफ्तरो से हार गया।"

क्या कुकरेती को लगा कि सुलेखा के स्वर मे ऐसी हारो के लिए माथुर-तिरस्कार योग्य था ? उसके उत्तर में तेजी थी, "मिसेज़ दयाल, युद्धस्थल में जीतना एक बात है, दफ्तरों और व्यापारो मे सफल होना दूसरी बात है। जहां जीवन और मृत्यु की बाजी हो, जहा खर्च की फिक्र से ज्यादा विजय चाहिए, वहा कुशलता और उसके लायक हृदय वाले सूरमा अलग होते है। जीवन के

व्यापार के क्षेत्र की बाकी सौ राहों में भयभीत हृदय चलते है, उनकी हिसाबी निपुणता अलग है। · मैं किसीको दोष नही देता। मेरे खुद के तेज दात हैं, कुतर कर आगे निकल जाऊंगा। पर दाजू बलराम सिंह रहेंगे, और मैं चूहा।"

"तुम चौथी कुमाऊं मे भरती होने नही गए कुकरेती ?" सुलेखा ने सहानुभूति मे पूछा।

कुकरेती खड़ा हो गया। "मैं, मिसेज दयाल ? मैं ? मेरी ऊंचाई तो आपसे भी कम है। मुझे फौज मे कौन भरती करेगा ! पुलिस मे भी विशेष सिफारिश से आया हू।"

"अरे रुको। तुम मुझे स्विस काटेज नही पहुचाओगे, जिसलिए मैंने तुम्हे रोका था ?"

बालक जैसे कुकरेती की बुद्धिमान आखे हंसी। "आपने मुझे यह कथा सुनाने रोका था। जो मैंने सुना दी।"

## लिलि काटेज

### सन्ध्या ५ बजे

धुन का नाम था 'एफ्रीकन वायस'। डमरू जैसे बजते, बीच-बीच मे चाँदनी रात मे बावले भेडियो जैसा हू हूंकार उठता, साधारण खबर सुनाने के ढंग मे कुछ कहा जाता, हँसा जाता, डमरू बजते रहते, ताल तेजी पर आती पखावजों मे। अँधेरे छाए निषाद महाद्वीप की लय बज रही है। एल० पी० टेप ऐसे ही लय बनने के पास आ-आ कर गिरता रहता है, प्रागैतिहासिक दैत्य जानवर पंख पाकर उड़ने के प्रयत्न मे अपनी भारी काया में गिर-गिर पड रहा हो। संगीत असंगीत से न मुक्त होता है, न उसमें लय होता।

अशोक का धैर्य चुकने वाला था। ड्राइंग रूम सीधे बम्बई की फिल्मों मे प्रदर्शित ड्राइंग रूम पर आधारित था। नये विशाल लकडी के केस मे बैठे स्टीरिओ को उसे दिखाकर चला दिया गया। यदि सब कुछ इम्पोर्टेड था तो उससे भी ज्यादा सोफे पर चुप तीन औरते एक विदेशी स्मृति बनाती थी।

इनके गेल में प्लास्टिक के नम्बर होने चाहिए, जैसे बैंकाक के पेट-पेटाग में हम्माम सेविकाएं पहनती है, या हेमबुर्ग की उस सारी सड़क पर कांच की खिड़की मे प्रदर्शित वेश्याएं। व्हिस्की पकड़ाई तो आधा गिलास-भर। जब राजाशाह से दृष्टि मिलती, वह अशोक पर बड़े मर्दाने और बादशाहों वाले ढंग से मुस्करा देता। एफ्रीकन वायस संगीत न हो पर उसके सम्मुख बातचीत भी नहीं हो सकती थी।

राजाशाह के रंग-ढंग से स्पष्ट था कि वह कुछ मांगना चाहता है पर बात शुरू करने मे झिझक रहा है।

सरोज के इशारे से एफ्रीकन वायस बन्द करवाया गया। राजाशाह ने स्विच आफ कर लौटते हुए कहा, "बहुत सेक्सी है यह।" उसने इशारे से भाव-हीन बैठी नेपाली लड़कियो को कमरे से भगाया। बातचीत करने के लिए उनकी पुरानी कुर्सिया एक दूसरे से दूर थी। अशोक उठकर सरोज के पास सोफे पर आ गया जहा अभी तक हमीरा बैठी थी।

राजाशाह ने टीम का खेल प्रारम्भ किया। "अशोक साहब, एक बात जरा नाजुक है। जयदयाल है नही इसलिए आपको तकलीफ देनी है। सुलेखा अपने पुलिस के बयान मे कुछ इधर-उधर की बात न कह दे। आप उसे समझा दे।"

अशोक माथुर चुप रहा।

सरोज ने पारी ली, "जयदयाल के इस मौके पर गायब होने से वह बहुत परेशान है। उसकी मन.स्थिति असाधारण है। अपनी खीझ, लापरवाही या कुछ और मे छोटी बात बडी बात न बन जाए।"

अशोक ने कहा, "आप दोनो को किस बात की चिन्ता है ?"

राजाशाह ने एकदम कहा, "कुकरेती, दो मुट्ठी-भर का इसपेक्टर है। यह तो पुलिस वालों की पुरानी आदत है, मौका मिलते ही अपना जाल फैलाने लगते है। मैं सीजन मे इन्द्र नारायण से (होम मिनस्टर है, आप जानते होगे) बात करूँगा।"

"जयदयाल दिलफेंक आदमी था। जब वह लैला को लेकर चंपत हुआ तो उसकी नीयत स्पष्ट थी। लैला के दोस्त ने तो डाह से जलकर विचारे मेजर पर हमला ही कर दिया, जिसे जयदयाल वहा पिट्ठू बनाकर बैठा गया

था। यह रंग चढाना मुमकिन नही कि लैला किसी व्यापार के काम से यहां आई थी। देखिए माथुर साहब, मैंने खुद ही सुलेखा को यह तरह दी और बह-लावा दिया था कि जयदयाल का पीछा व्यापारिक है। पर दुनिया के सामने यह बात नही दुहराई जा सकती।" सरोज ने कहा।

"पुलिस वालो को तो बहाना चाहिए, हमारे व्यापार पर कब्जा लगाने का।" राजाशाह के हाथो ने हाथ-औजारो की पकड का नाटक किया।

अशोक हैरान था कि यह लोग उसे इतना बड़ा मूर्ख मानते है। अगर इतनी ही अक्ल थी तो यह दोनों धूर्त तो किसी ईरानी को बतख का अंडा भी नही बेच सकते थे। वह सिगरेट के टुकडो से भरी ऐश ट्रे अपने बाये हाथ से कुरेद रहा था। ऐसी फूहड़ और लापरवाह चाल चलने का एक कारण हो सकता है, कोई और बडी ट्रम्प इनके पास होना।

उसने अपने सभापति ढग से कहा, "सरोजदेवी, आप अस्पताल से यह मान-कर आई थी कि सुलेखा के पास जयदयाल है। ठीक। फिर जब जयदयाल गुम था ही नही, उसके गायब होने का बहाना सुझाने का सवाल ही नही था। गायब लैला थी, जयदयाल नही। आपने स्वयं सुलेखा को सुझाया कि लैला की खोज का कारण सेक्स नही बिजनेस है। इससे यह माना गया कि उसके गायब होने का भी कारण बिजनेस हो सकता है।"

राजाशाह के लिए यह एक और उदाहरण था कि घुमावदार बाते सिर्फ फंसाती है। "माथुर साहब—सरोज ने कुछ भी कहा हो, मैं तो यह भी कहूंगा, सच कुछ भी हो—हम लोगो को पुलिस को उससे ज्यादा जानकारी नही देनी चाहिए जो कि बिलकुल जरूरी हो। यह तो आप भी मानेगे।"

"मोटे तौर पर हां। मै सुलेखा को यह ज़रूर राय दूंगा कि जितना बत-लाना उसके निजी स्वार्थ मे जरूरी हो वह सिर्फ उतना ही बयान करे।"

राजाशाह ने कहा, "बस यही सहयोग चाहिए और कुछ नही।"

अशोक ने कहा, "आशा है आप लोग भी सहयोग में पीछे न रहेगे। हम-लोग कल शाम लौटने वाले हैं। सुलेखा का आपकी कम्पनी से तीन लाख मूल और छत्तीस हजार सूद बकाया है। उसके लौटाने का इंतज़ाम करा दे।"

"पर ऋण तो जयदयाल ने लिया था।"

"ऋण आपकी कंपनी, उत्तरा खंड टिम्बर कम्पनी को है, जिसके व्यापार मे

रखे शुद्ध लाभ उससे कई गुना है, पिछले तीन वर्षो में हर एक वर्ष ।"

सरोज और राजाशाह बहुत कुछ कहने वाले थे। अशोक माथुर ने हशीश वाला सिगरेट का टुकड़ा उनकी दृष्टि के सामने मेज पर रखा।

"क्या यह आपकी शर्त ?"

"जो आप माने। मैं आपको सिर्फ यह आश्वासन दे रहा हूँ कि सुलेखा आपके व्यापार के बारे मे उतना ही अज्ञान मे है जितना उसको आप उसके मुनाफे से वञ्चित नही रखते। आपकी लापरवाही से वह भी लापरवाह हो सकती है।"

असर सरोज और राजाशाह पर विभिन्न हुआ। सरोज की आंखों में उसके लिए स्पष्ट घृणा चमकने लगी। राजाशाह अचकचाया हुआ था। परन्तु संधि का इच्छुक था।

राजाशाह ने कहा, "माथुर साहब, आपको जयदयाल के लौटने तक तो ठहरना होगा। मुझे रकम लौटाने मे एतराज नही है। पर हो सकता है साझेदारी देने की बात हो। आखिर पति-पत्नी की बात है।"

सरोज ने सुनाया, "सुलेखा के भाई जो स्पष्ट कर रहे है, वह यही है कि सुलेखा की साझेदारी समाप्त होने वाली है, हर किस्म की, जयदयाल से।"

राजाशाह ने दूसरी कोशिश की, "आप जानते है, रुपया व्यापार में लगता और आता रहता है। बिक्री हुई है, वसूलियां बाकी है। एक विशेष वसूली के बारे मे जयदयाल से सूचना अभी मिल नही सकी है।"

"क्या वह इतनी बड़ी है कि उसके कारण जयदयाल के फरार होने का शक हो सकता है ?"

"बड़ी तो है, परन्तु व्यापार से बड़ी नही है। आज जयदयाल के कंपनी मे हिस्से से भी कम है। हां, यदि फरार होने की कोई और मजबूरी उठ आई हो ··?"

## सध्या ५-३० वजे

स्विज काटेज के ओर करीव भागती सुलेखा के मन में सब मुहावरे सेना की शैली के हो गए थे। कालराओं और माथुरों मे विकट युद्ध छिडा था। वेचारे कालरा हर ओर से माथुर-सैन्य-कुशलता से परास्त हो रहे थे। न उनके पास मिग्स थे, न वह कमान हेट क्वार्टर मे वैठी सुलेखा माथुर की नई-नई चालो के आगे टिक सकते थे। एक चूहे ने विल में घुसकर रस्सी पहले ही काटनी आरम्भ कर दी थी। हर सिंह को एक चालाक लोमड़ी की जरूरत है, वह पहचाने या न समझे। कालरा नौसेना के जहाज सव डूव चुके थे, जव सुलेखा स्विस काटेज पहुच गई। अव स्टेनगन और हाथो की लड़ाई का मौका था।

स्विज काटेज भारी पर्दो के छिपे प्रकाश से भरपूर थी। वगल की लॉज में उसने आसानी से बलराम का कमरा पहचान लिया।

चेहरे की सभी पट्टिया उतर गई थी। वाई ओर कुछ नीचे तक आती बैडएड थी और सिर पर एक पट्टी।

बलराम की आखे जिस स्वागत से जगमगाई उससे निहाल सुलेखा आधी मन की बातें तो वही भूल गई।

"बैठो!" स्वर वैसा ही हल्का और भर्राया था।

आज्ञाकारी सुलेखा ने पलंग की वगल मे पड़ी कुर्सी पर वैठने मे कठिन संतोप किया।

"मुझे कुकरेती ने सव कुछ वतला दिया है। तुम मुझसे वेकार तकरार उठाते थे।"

"क्या वतला दिया है?"

"कि तुम तावा घाटी के दाजू बलराम हो।"

बलराम के चेहरे पर उतरती गंभीरता से सुलेखा खीझ उठी। सदा जुडी खराब वातो को ही क्यो याद किया जाये। यदि यह मेरा यश गाए तो मैं तो

चाकलेट की तरह पीती जाऊं।

"देखो बलराम, यह तो नही चल सकता। हद की भी हद है। मैं तुम्हारे पास सदा खुश आती हू। और तुम हमेशा मेरी उमंग नष्ट करने का कोई न कोई झमेला खड़ा कर देते हो। क्या तुम मुझे समझा रहे हो कि कड़वी बातों का स्वाद सदा के लिए कडवा रहता है या रहना चाहिए ? कोई तुम्हारे साथ ही अन्याय नही हुआ। मैं अपने ऊपर अन्यायों की ही गिनती करने लगू तो मेरे चारों ओर सदा के लिए ग्रेट-वाल-आफ-चायना बन जाये। तुम मुझे हर बार नीचे गिरा देते हो।"

बलराम के हाथ की जकड़ से ही सुलेखा रुकी, नही तो आज आंसुओं की चढ़ाई पूरी होनी थी।

'तुम्हे लखन के भाई ने कोर्ट मार्शल के बारे में बतलाया था ?"

"हा"—सुलेखा कालरा परिवार को शीघ्र ही छटी का दूध याद कराने का अपना दृढ निर्णय बतलाने वाली थी।

"उस बारे मे क्या बतलाया उसने ?"

"वही जो उसे मालूम था। वे लोग कायर कालरा को वीरगति का खिताब दिलाने की कोशिश मे थे। वे लोग सफल न हो सके, क्योंकि कुकरेती के गाव-भाई कोई ऐसा झूठ बोलने को तैयार नही थे।"

"तुम्हे मै सच बतला रहा हूं, क्योंकि तुम चुप्पी रखने नही देती। यह सच है कि उस रात सुरजीत कालरा अपनी हिम्मत खो बैठा था। जैसे यह भी सच है कि सुरजीत मेरे पूर्व आनन्दा का मगेतर था। जिन्हे तुम कालरा परिवार कहती हो वह यह बात उपयोग करना चाहते थे। मैं सुरजीत कालरा से घृणा करता था। तावा टेकरी की चढाई पर फूलती सांसो और खड़कते पत्तो के समय—जब सुरजीत भय से पशु हो गया और तीन सौ आदमियों की जान पर बन सकती थी, मैं डाह से अभिशप्त नही था। पर मैं झिझका था और मेरी छाया की तरह रहने वाले लखन ने बेहिचक संगीन के एक वार से तमाम कर डाला था। जो सजा मुझे देनी थी, जो मैं ही दे सकता था, मेरे लिए बटेलियन की आत्मा ने चुका दी। दाजू बलराम तावा टेकरी मे मेरा नाम पड़ा, क्योंकि जमादार साहब यह चाहते थे।"

सुलेखा ने कहा, "इस स्पष्टीकरण से क्या फरक पड़ता है। मैंने तो अपनी झिझक में तावा टेकरी की चढ़ाई गंवा दी थी।"

"तुम कुछ नही समझते। क्यों किसीका हृदय ऊंचा होता है। क्यों लोग बड़ी बातें कर डालते हैं। जमादार लखन कुकरेती तुम्हें दाजू न मानता तो वह बात भी नही कर सकता था। यह तो कोई नही कहता कि तुमने अकेले तावा टेकरी फतह की। पर तुमपर श्रद्धा के बिना चौथी कुमाऊं के सारे राम, लखन और शत्रुघ्न तावा नदी पार भी नही कर पाते। यह कुकरेती जानता है। यह मैं जानती हूं।"

आदि काल से कोने में घिरे पुरुषों ने जो स्त्रियों से कहा है, वही सुलेखा को सुनाया गया, "तुम नही समझती सुलेखा।"

सुलेखा ने कहा, "अब कौन फिर तकरार बढ़ा रहा है? और चुप मत हो जाना।"

थोड़ी देर बाद सुलेखा पूछने से अपने-आपको न रोक सका, "यह सब तुमने अपनी पत्नी (आनन्दा नाम है ना?) को बतलाया था।"

"नही। बतलाने का कोई मौका नही हुआ, न उसे कोई जिज्ञासा रही। सब तुम्हारी तरह से हमलावर नही होते।"

जब बदनाम हो ही चुके है तो फिर मुरव्वत कैसी? सुलेखा ने सोचा। "तुम और वह साथ नहीं रहते?"

"वह अपने पिता के पास लन्दन गई थी। पर बिलकुल अन्त हो जाएगा, यह कुछ दिनों पूर्व ही मालूम पड़ा। वह मेरी असफलता की छूत से भागी थी। बीमारी असाध्य करार हुई।"

सुलेखा ने कुछ जोर से पर अस्पष्ट कहा था। बलराम ने पूछा, "क्या कहा तुमने?"

सुलेखा ने आराम से झूठ बोला, "कुछ नही।" कहा था, गधी!

टेबल पर रखे नक्शे को देखकर सुलेखा ने पूछा, "यह क्या मुझे और फंसाने की योजना है? तुम तो मुझे जेल मे बन्द कराके ही मानोगे।"

"यह तो नैनीताल का नक्शा है। चार्ल्स और मैं कुछ बहस कर रहे थे।" फिर उसने अपने उत्तर को पूर्ण किया। "क्या तुम भी मानती हो कि मैं तुम्हारी तरफ नही हूं?"

"नही। जो भी करना है वेफिक्र करो।"

"मैंने तुम्हे वतलाया था सुलेखा। यह कोई वहम नही है, कम-से-कम वहम मानने या अवहेलना से अन्तर्धान नहीं होता। जयदयाल का ग्रहण या प्रेत मुझे जकड़े है। उसका अतीत मुझे लौट आता है। पर स्मृति, अनुभव के वाद, साधारण होने पर भूल जाती है। करीब-करीब।" सुलेखा के मन मे आशंका के पहले स्वर कही बजे। उसने और कसकर वलराम का हाथ जकड़ा।

"तुम परसों घर गई थी। मैं ऐसे ही सोच रहा था, कैसे मेरे और आनन्दा के कलह उदय होते और बढ़ते थे। एकाएक मैंने देखा तुम और जयदयाल एक संगीन सघर्ष मे जुटे हो।"

कमरा तो वन्द था पर ताल से आई हवा जैसी ठंड वढ़ी। सुलेखा ने सोचा, वलराम को यही रोक दे। ओठो को वन्द करने के मधुर ढग है। पर उसने विवश पूछा, "तुमने क्या देखा ?"

"मुझे कमरा याद है जहा झगड़ा हुआ था। वह वही था जो तुम्हारा प्रायरी का वेडरूम है।"

"झगडा किस वात पर हो रहा है ?"

"तुम कह रही हो तुम्हे डालर ऋण देने मे कोई एतराज नही, परन्तु जो हीरे खरीदे जाएं उनका जयदयाल हिसाव दे। ऐसी ही कुछ उलझी वात थी।"

सुलेखा ने गंभीर स्वर मे पूछा, "क्या तुम मुझसे कुछ पूछ रहे हो, वलराम ? घुमा-फिरा कर ?"

वलराम ने उसकी आंखों का मुकावला किया। "नही ! मै तुम्हे अपनी मजवूरी के कारण स्पष्ट कर रहा था। सच में पूछना होगा तो सीधे-सीधे पूछ लूंगा।"

"याद रखना, वलराम। और मैं झूठ उत्तर देने का भी हक चाहती हूं। मेरी झूठ पकड़ने की जिम्मेदारी भी तुम्हारी होगी। कही मैं सच से डरती हूं, कही और, सच को जानती भी नही। कही प्याज की पर्त की तरह सच्चाइयां झुठ वन उतर जाती है।"

सुलेखा का सिर यह वात करते-करते झुक गया। दुख भी वढ गया था।

"तुम वहुत हाजिर जवाव हो। मैं कल रात तुम्हारे भाई की वात का उत्तर सोचता रहा। जब तक ठीक उत्तर मन में बनते है मौका ही चला जाता

है।—यदि दो व्यक्तियों के बीच मे रेखा खीच दी जाए तो भी धरती की परिक्रमा करने पर वह एक ही तरफ हो सकते हैं।"

पुस्तक के क्षण लंबे होने चाहिए।

चार्ल्स दरवाज़ा खटखटाकर, अपनी धुन मे घुस आया। "सब इंतजाम पूरा हो गया है। पर कुकरेती नही मानेगा।" सुलेखा को देख वह रुक गया।

सुलेखा ने बलराम का हाथ नही छोडा। जो-जो बेहयाई वह एक क्षण पहले करने वाली थी उसके सामने यह तो बिलकुल निर्दोप था।

"वेटिना मेजर का खाना यही ला रही है।" उसने कमरे में ही रहने की सफाई मे कहा।

"तब तो मैं भी कुछ अपने लिए लेती जाऊ।" सुलेखा उठ खड़ी हुई।

## मल्लीताल थाना
(३ जनवरी)

### सन्ध्या ५ ४५

जोशी की कुर्सी पर बैठा कुकरेती अपने माथे को पकड़े सोच रहा था। थाने मे उसके अलावा एक-दो ही सिपाही और थे। बिजली की बत्ती जली होने के उपरांत भी थाना किसी पुराने ज़माने के किले का तहखाना लगता था।

उसे अभी हीरा और हमीरा का बयान लेना था। और वह भी यदि राजाशाह और सरोज के बयानों की तरह झूठे और कपटपूर्ण हुए तो उसकी खीझ का विस्फोट निश्चित था।

एक सच्चा विश्व है, जिसमें राजाशाह अधेड़ साँड़ था। सरोज देवी लालची विकट औरत थी, जिसमें उत्तराखंड टिम्बर ट्रेडिंग कम्पनी की कमाई शहतीरो और द्राक्षासव की बजाय चरस, अफीम, गाँजे के व्यापार से होती थी। इस विश्व मे हत्या और डकैती होती है। कुकरेती के प्रश्नों का उत्तर उपाधि विश्व देता है। छह पीढी कुमाऊं के रईस। उसे दिखावे की दुनिया में ही रोक लिया जाता। वहां के अविचलित नकारात्मक उत्तरो को सुन लौट

आना पड़ता। यह लोग मामूली लोग नही थे, जिन्हे बलपूर्वक सच्चाई मानने पर बाध्य किया जा सके। स्वयं होम मिनिस्टर राजाशाह के यहा सीजन में आते-जाते थे।

सुलेखा के भाई ने जोशी पर जो सच मे प्रतिबन्ध लगाया था वह था कि रहस्योद्घाटन कुछ भी किया जाए पर उपाधि विश्व के अनुकूल हो। उसे बुनियादी ढंग से नष्ट न करे। हत्या की बू को पुलिस वाले अच्छे कमेटी के कार्यकारियों की तरह जल्दी से हटा दे।

जोशी जी साधारण सिपाही से डी० वाई० एस० पी० बने थे। उनकी राय थी कि पुलिसवालों को झूठ से भी फायदा है जितना सच से। झूठ को नष्ट करना पड़ता है, पर दुनिया की सारी झूठ कभी अन्त होने वाली नही।

सच जानने वाले को झूठ चलने का उपकार करना चाहिए। उससे चलता हुआ सच कृतज्ञ रहता है। सफलता की कुजी यही तजुर्बा है। अपनी राय प्रकट करने के पहले, समय का वजन तोल सकना। सच खोजना पुलिस का काम है पर सच प्रकट कर देना हमारी मजबूरी नहीं।

कुकरेती जोशी का उपहास करते हुए भी उनका शिष्य था। उसमें आगे चढ़ने की महत्वाकांक्षा थी। यदि वह भी सेना मे भरती हो सकता तो लखन की तरह उजड्ड कुमाऊनी वीर बनने मे कोई कमी न रखता। पर जब उसके हल्के और छोटे देह ने उससे यह भाग्य छीना तो उसने अपने मे लखन-स्वभाव को भी उसी सख्ती से तिलांजलि देने का निश्चय कर लिया था। जोशी ऊबा हुआ, आलसी और मन्द बुद्धि था। यदि सच और झूठ के व्यापार से बढ़ना है तो पहले दोनों को कमाना था। कुकरेती जानता था कि उसके द्वारा इनकी कमाई पूजी से ही जोशी जी का तजुर्बा-व्यापार चलता था।

पर भोलापन कही ललकारता था। वेवकूफ जीवित थे और सयानो पर वासीपन था।

"आपका नाम ?"

एक ने कहा, "हमीरा"। दूसरी ने, "हीरा"। कुकरेनी के फोन करने पर हमीरा ने फोन उठाया था और स्वयं ही कहा कि वह दोनों थाने आ जाती हैं। उन दोनों चीनी मिट्टी की बनी गुड़ियों ने यह सोचा ही नही कि उन दोनों

के अलग-अलग वयान हो सकते है। हमीरा वोलती थी और हीरा सिर हिलाती थी। एक-दो प्रश्नों के वाद कुकरेती ने कुछ तेजी में कहा, "देखिए, मैं जानता हूं, आप ठीक हिन्दी वोल सकती है। जान-वूझकर अग्रेजी वोलनेवालो के ढंग में हिन्दी को क्यों विगाडती है। नही; तो नेपाली वोलिए, मैं समझता हू।"

हीरा ने उसके नेपाली वोलने की वात पर ताली वजाई।

"आप हशीश की सिगरेट पीती है ?"

हमीरा उसकी ओर देखकर चुप रही। हीरा ने कहा, "ज्यादा पीती है।" हमीरा ने अपना रटा जवाव दिया, "कभी-कभी कंपनी मे शौक कर लेते है। पार्टी-वार्टी मे जव लोग पीने को मजवूर भी करते हैं।" हीरा ने नेपाली अश्लीलता मे वतलाया कि लोग किस तरह मजवूर करते है।

"आपको ऐसी सिगरेट कहां से मिलती है ?"

"जो पिलाते है, वही आफर करते हैं। हम नही रखते है।" हमीरा ने हीरा को टेवल के नीचे नोचकर चुप करा दिया था।

"आपके पास सिगरेट केस है, क्या मैं देख सकता हूं ?"

हमीरा ने सिगरेट केस वैग से निकाल, खोलकर दिया।

उसमे दो साधारण सिगरेट लगी थी। कुकरेती ने उन्हे सूघा। उनमे हशीश की मीठी महक थी।

"आपको सिगरेट कौन देता था ?"

थोड़ी देर चुप रहने को वाद मुह विचका, हमीरा ने कहा, "कभी-कभी जयदयाल।" पर यह उत्तर हमीरा ने अपने जीवन-भर निभाए सिद्धांत के अनुसार दिया था। डाटनेवाले को उसके मन की वात कह दो। पीटनेवाले के साथ उसके तन की वात कर दो। सत्य का यहां सवाल नही था। वह हल्का-सा मुह विचकाना एक पूरी टिप्पणी थी। कुछ लोग होते है जिनकी शक्ति उनकी कातरता होती है। कातरता मे हिंसा को निमंत्रण और हिंसा सहने मे आपको भ्रष्ट करने की विजय। जिनकी कमजोरी एक जाल है तो अन्त मे आपकी कमजोरी पर हावी हो जाती है।

कुकरेती ने चुप होने के वाद वयान की गंभीरता वन्द करते नेपाली में पूछा, "तुमने राजाशाह को पुरानी चिट्ठी क्यो दिखाई ?" वह खुद मुस्करा रहा था।

पहले हीरा फिर हमीरा दोनों जोर से हंसने लगीं। कुकरेती को मालूम पड़ा कि वे लड़कियां बेलिहाज थी और अपने असली विचार नेपाली में ही सोचती थी। हिन्दी और टूटी-फूटी अंग्रेजी, विदेशी बात थी, जिसमें यह विदेशी विश्व को निभाती थी।

उसने कहा, "कुछ सच्ची मदद करनी है तो बतलाओ, नही तो गांव जाकर काटो घास!"

"बाते हसियावालों से करते हो पर आंखे दूर घास बीन रही हैं। तुम्हारा पेशा जो ठहरा! फरेबी कुमाऊनी।"

"कुमाऊनी मुहावरे नेपाली गालियों के आगे ठहर न सके। फिर वे लड़कियां साधारण-सी बात मे भी अश्लीलता के रंगीन डोरे खीच लेती थी।

"तुमने बतलाया नही, क्यों वापस नेपाल जा रही हो?"

"सरोज, वह बंगाल की हथिनी है न? अब हमीरा के पीछे पड़ी है। जयदयाल अपनी मूछे कितना ही खीचें, होगा वही जो जादूगरनी चाहती है।"

"हीरा ने उसके बिच्छू चढा दिया था तो कैम्प मे साली ने कैसा बदला लिया था।"

हमीरा हंसने लगी। हीरा का मुह लाल हुआ। फिर वह भी हंसने लगी।

"नीद की गोली से तो मामूली आख भारी होती है। सरोज की दवा की ताकत दस गुनी है। अंटा गुल कर देती है।"

"कैम्प मे दारू के साथ मुझको गोली दे दी। फिर रात को मेरे सब कपड़े खोलकर मुझे लदे हुए ट्रक मे चढ़ा दिया। ट्रक तड़के ही चल दिया।"

"बिक्री टाल वाले ने कहा—लकड़ी हो या लड़की, माल हमारा है।"

"धत्…पिथौरागढ़ पहुचने के पहले मैं उठ गई थी।"

"जब इसने पाया कि क्लीनर का लड़का भी इसके साथ फंसा है…"

"मुझे तो ड्राइवर जी ने अपनी कमीज दी पहनने…"

कुकरेती ने कहा—"तो अब गोरखा पलटन को बंगाली खदेड़ डालते हैं।"

उसे विश्वास नही हुआ था कि हमीरा और हीरा के एकाएक वापस जाने की इच्छा का कारण इतना सरल है।

"कुमाऊनी चोर। हमारा खून गर्म करके हमे ही पकड़वाना चाहता है।"

कुकरेती के मन में दूर कही उजाला हुआ। "कोई ऐसी बात है क्या जिसकी नेपाल मे छूट है और यहां नही है।"

"—नायक जी, जब सरहद की बस मे चढा दोगे—तब दिखला दूगी अपनी लाखो की पुड़िया।"

कुकरेती इसी तरफ आगे पूछने से सभला। फिर कहानियां गढ़ दी जाएंगी। उसने पूछा, "मेरी ड्यूटी है जयदयाल को खोज निकालने की। तुम मदद कर सकती हो ? वह कहा है ?"

"कितनी दूर तक जाओगे जयदयाल को खोजने ? अगर दूर जाना पड़ा तो ?"

"पाताल तक तो जाऊगा।"

यह उत्तर पौ बारह था। हमीरा और हीरा की आंखें कुछ अतीत दृश्य देख रही थीं। उन्हे कुछ भय भी था। पर उससे ज्यादा दुबारा देखते रहने का सम्मोहन।

कुकरेती ने धीमे से कहा, "घसियारिन रानियो, जो मन मे देख रही हो वैसी ही कह दो। तुम कहोगी तो उसे दुबारा भूल भी जाऊंगा। नेपाल और कुमाऊं बिरादर है।"

बोली हीरा, पर हमीरा ने उसे रोका नही।

"ताल के ऊपर कोहरा है, नायक जी। सब बत्तियां बुझ चुकी हैं। मेरे पीछे एक भूखी हवा आ रही है। पर ताल का कोहरा लज्जा मे लदी औरत की तरह, पर धीरे-धीरे फैल और सिमट रहा है। पर उससे भी धीरे एक खाली नाव तट से दूर हो रही है। यह भी नही लगता कि किसी दशा में बढ़ रही है—सिर्फ शक होता है। अगर बहुत ध्यान से न देखो या देखते न रहो, तो वह नाव दीखती भी नही। कभी भी अपना भ्रम मानना चाहो तो उस दृश्य को दृष्टि से उड़ा सकते हो। पर मन से यह दृश्य नहीं जाएगा।"

कुकरेती के पूछने के पूर्व ही हमीरा ने कहा, "हां, नाव खाली है। तट से उसमे कोई नही दीखता। पर यह भी सच है कि नाव धीरे-धीरे डूब रही है। धीरे-धीरे डूब रही है।"

कुकरेती सोचने लगा। और लोग जब अस्पताल गए, यह दोनों क्लब में रही और फिर तल्लीताल आईं। पीछे से आती हवा का मुख तल्लीताल का डाट ही था, जहां घाटी की हवा सकरी सड़क से नैनीताल मे घुसती थी। कोई नाव तल्लीताल से आगे बढती और डूब रही थी। यह कोई दूसरी नाव थी, क्योकि जयदयाल और लैला को मल्लीताल से लाने वाली नाव तो मल्लाह ने तल्लीताल के घाट पर दूसरे दिन पहचान ली थी। जैसे उसने बतलाया था, वैसे ही तट पर ऊपर खींची हुई।

उसने हिन्दी में कहा, "चलो मैं तुम लोगों को घर छोड़ आऊं। तुम लोग सच मे खतरे मे हो। नेपाल चले जाओ तो ठीक ही है। पुलिस की इजाजत दो-तीन दिन मे मिल जाएगी।"

## ताल
(४ जनवरी)

### सुबह ६ बजे

ताल मे थोड़ी दूर निकल आने पर चार्ल्स ने पूछा, "किधर चलना है?"

उन लोगों ने तल्लीताल से एक भारी नाव ली थी। दो बैग-भर सामान वे लोग साथ लाए थे। बेटिना के विरोध पर भी चार्ल्स ने तैरने के कपड़े पहन रखे थे।

कुकरेती का विरोध था, सुलेखा को शक था। इसलिए बलराम ने ताल पर हमले का समय कई घंटे आगे कर दिया था। उनका अन्दाज था कि वे लोग डुबकियां सूरज की पहली रोशनी आने पर ही शुरू कर देंगे। चार्ल्स ने अतिरिक्त ठंड का प्रश्न नही उठाया। बलराम अपनी जिद में कठिनाइयां मोल लेने को कुछ नही मानता था।

बलराम ने कोई उत्तर नही दिया। वह एक तन्द्रा में था। ताल का किनारा दूर हो रहा था। अंधकार में नाव चलाते साथी की शक्ल भी नहीं दीखती थी। सिर्फ चप्पुओं के उठने की छपछप आवाज होती थी। बलराम ने एक हाथ गले पर रख रखा था।

अंधकार, गहराई ठंड। जो मुझे प्रेरित कर रहा है, तुम्हें मुक्त करने, वह न मेरा अंश है, न तुम्हारा। न सुलेखा का, न किसी और का। न विजय की अभिलाषा से, न पराजय के भय से। न विज्ञान की सूझ है, न बुद्धि की बूझ है। न मुट्ठी बन्द करती कामना, न मुट्ठी खोलता त्याग।

मैं अपनी आत्महत्या का संकल्प त्यागता हूं, तुम जीवन का संकल्प त्याग दो।

नाव ताल के मध्य मे आगे निकल आई थी? "बाईं ओर घुमा लो। वापस देवी के मंदिर की ओर।" चार्ल्स ने नाव घुमाई। बलराम ने कहा, "बहने दो"।

अब चुप्पी हो गई। हवा बन्द थी। चार्ल्स ने देखा कि बलराम ने अपना ओवरकोट फेंक दिया है और वह पानी मे उतरने को तैयार है।

"मेजर, रोशनी आने दो। यहां बहुत गहराई है। तल के पास नहीं पहुच सकते। मैंने तुमसे कहा था, डायविंग वेट्स (डुबकी के लिए भार) की जरूरत होगी।"

बलराम ने कोई उत्तर नही दिया। उसने नाव पर पड़ी रस्सियों को भी नही उठाया।

नाव शायद अब भी बढ़ रही थी। थम गई थी। कहा नहीं जा सकता था।

बलराम ने आज्ञा दी, "थोडा और बढ़ाओ।"

चार्ल्स ने चप्पू उठाए। उसने कहा, "बारी-बारी से डुबकी लगाएंगे। किसी हालत मे पांच मिनट से ज्यादा नीचे मत रहना।" देवी के मंदिर के पास तट पर ऊची चट्टाने है। वहा तट के साथ-साथ जाता रास्ता एक ऊंट के कूब समान चढाई चढता है।

नाव तट के काफी पास थी। बलराम ने इशारा कर नाव रुकवा दी। वह खडा हो गया था।

बलराम उत्साह से कूदा था। पानी, ठंड और अंधकार मे घुसते ही अवश हो गया।

कोई दिशा नही थी। शायद वह नीचे जा रहा था। फेफड़ों मे सास घुटने लगी। तल तक नही पहुच सकता। उसने अपने-आपको तट की ओर साधा। वह हाथ-पाव फैलाकर टटोलने लगा पर ऐसा करने से उसका शरीर ऊपर

उठने लगा। उसने खोजना छोड़ और गहरे में जाने की कोशिश की। वह पानी के दबाव और घुटते फेफड़ों से हारने लगा था। कहां हो जयदयाल, उसने मन मे पुकारा। डुबकी छूट गई थी, बलराम सतह की ओर उठ रहा था। अग-संचालन और दिशा पर वश खो चुका था।

बलराम तट की चट्टान की निकटता मे उठ रहा था। उसने अपने हाथ फैलाकर चट्टान से सहारा चाहा। पर हाथ फिसल गया, या वह शिलाखंड ही उलट गया।

नाव मे प्रतीक्षा करते चार्ल्स को दीखा कि कुछ मंदिर की चट्टान से सटा हुआ ऊपर आया है। उसने पुकारा, "अब मेरी बारी है। इधर तैर आओ।"

चार्ल्स को लगा कि पानी में ही रहकर जैसे बलराम उसपर हंस रहा हैं; उसके पानी, ठंड और अंधकार से भय को पहचान जैसे नाव पर लौट आने की अवहेलना कर उसे चिढा रहा है। यही बात थी तो ठीक है। बुड्ढे चार्ल्स ने तुरंत डुबकी में उतरने का निश्चय किया। वह इसी निश्चय पर आया था कि नाव और मदिर की कालिमा मे हाथ उठा, बलराम की चीख पानी की सतह से आई।

नाव पर बलराम को खीचने पर चार्ल्स ने पाया कि उसका चेहरा और मुख लहू-लुहान है। मुख की चिपकी पट्टी खुल बह गई थी। ऊपर सिर के बालों में नई चोट थी। मोटे तौलिये देने पर बलराम ने साधारण अंग पोंछ उन्हे गिरा दिया। बलराम ने चार्ल्स की ओर देखा। तुम्हारी बारी।

चार्ल्स ने मंदिर के नीचे तैरती जयदयाल की लाश, हाथ उठाकर दिखला दी।

मंदिर के आगे, तल्लीताल की ओर बड़ी-बडी काली चट्टानें है। लोग उनपर बैठकर ताल देखते है। बलराम और चार्ल्स ने वही खीचकर जयदयाल की लाश को चढ़ाया। जयदयाल पूरे कपड़े पहने था। कहीं चोट नही थी, कही गोली ने देह को नही भेद रखा था। चेहरा जरूर बदरंगा और फला हुआ था।

चार्ल्स ने थके फक्क चेहरे वाले बलराम को कम्बलों मे लपेटा। तब ही वह बलराम को चट्टान में लाश के पास बैठा छोड़कर, कुकरेती को फोन करने आया।

# ५

# परिक्रमा

अस्पताल
(४ जनवरी)

डी० आई० जी० जमाल हसन बरेली से कार मे चलकर नैनीताल दो बजे पहुच गए थे।

जमाल हसन गजब के हसीन थे। शक्ल मे सिनेमा हीरो, बदन पचास वर्ष की उम्र मे भी छरहरा और फुर्तीला। कहा जाता था कि कपड़े सेवाइल रो से बनकर आते थे। उनके हर चीज के करने मे एक अदा थी। उससे भी अधिक कुछ न करने के आरोप के सम्मुख एक गहरी मुद्रा थी। डी०आई०जी० का काम दूर से देख-रेख का होता था। जिले और सरकार के बीच डी०आई० जी० मध्यस्थ होता है। ज़िला अफसर की नासमझियों को सरकार तक पहूचने से रोकने के लिए और सरकार से वेहूदा हुक्म जिले तक पहुंचने के पहले उन्हे बदलवाने के लिए। इसका एक अच्छा ढंग दोनों तरफ की डाक को अपनी मेज पर पड़े रहने देना है।

पोस्ट मार्टम रिपोर्ट उन्हे तीन बजे तक मिल गई। चार-साढे चार बजे तक वह जोशी और कुकरेती की बातें सुनते रहे। यह मशविरा अस्पताल के एक कमरे में हो रहा था। बाहर अशोक माथुर और सुलेखा लाश को वापस लेने के लिए बैठे थे। जयदयाल की मृत्यु की खबर कल अखबारो मे छप जाएगी। यदि बरेली में दाह के लिए लाश न पहुंची तो संबंधी नैनीताल पहुंचने लगेंगे। चन्द्रन रायल होटल मे बैठा दिन-भर फोन करता यही तो स्पष्ट कर रहा था कि जयदयाल का शव रात्रि तक बरेली वे लोग ले आएंगे। अखबार-वालो को भी दाह बरेली मे ५ जनवरी को होने की खबर दे दी गई थी।

डी० आई० जी० के अगले कदम का इतज़ार अस्पताल में इधर-उधर बैठे या टहलते लोगो को था।

चिन्ता से करीब स्याह मुख अशोक के बगल की कुर्सी पर बैठी सुलेखा

बिल्कुल निर्जीव थी। एक टूटी हुई गुड़िया। चार्ल्स उसके पास आकर बैठा रहा था। वेटिना भी कॉफी लेकर आई थी। राजाशाह और सरोज वहीं थे। उनसे तो अशोक भी न बातचीत कर पाया था।

यदि नही थे तो सिर्फ हीरा, हमीरा और बलराम।

सुलेखा ने सवेरे एक स्वप्न देखा था। वह मंदिर बहुत उत्सुकता से सफेद फूलों से भरी एक छोटी टोकरी लेकर पहुंची है। सामने देवता-गृह के द्वार खुले है। वह पूजा-विधि के बारे मे झिझक रही है। एक सफेद कपड़े पहने पुजारी उसे बतलाता है कि मंदिर की पहले परिक्रमा करो। यही नियम है।

उसे सीधे समर्पण की बजाय यह परिक्रमा का नियम आपत्तिजनक लगता है। पर वह मान लेती है। परिक्रमा करके जब वह देवगृह की ओर बढ़ती है तो उसकी डाली के फूल लाल हो गए है। उसे समझ में नही आता कि यह अच्छा हुआ या बुरा। यही नीद खुल जाती है।

कुकरेती ने छह बजे निकलकर उन्हे नर्स कैण्टीन के रूम में बुलाया।

लम्बे संकरे कमरे मे ऊपर के बल्ब से रोशनी मामूली थी। डी० आई० जी० हसन वहां पहले से बैठे थे। वे बहुत अदा से अपनी पाइप जला रहे थे। उनके सामने कागज रखे थे। उनकी तरफ डी० एस० पी० जोशी और कुकरेती बैठ गए। राजाशाह और सरोज भी बुलाए गए थे।

पाइप ठीक तरह जलने के बाद, श्री हसन ने कहा, "डाक्टर दास से मशिवरा हो गया है। हमे कुछ बातों के बारे मे आपसे सवाल-जवाब करने है। आशा है हम इस परिस्थिति तक पहुच पाएंगे कि लाश को छोड़ने में कोई भी एतराज न रह जाए।"

यहां पर उन्होंने जोशी से कुछ पूछा। उसने वैसे ही झुककर कुकरेती से कुछ सूचना चाही।

कुकरेती उठकर बाहर चला गया। वह डाक्टर दास के साथ वापस लौटा। पर जिससे ज्यादा कौतूहल हुआ वह था, पीछे-पीछे, बलराम, हीरा और हमीरा का आगमन।

हीरा और हमीरा उनकी ओर कुर्सियों के न होने के कारण डी० आई० जी० की बाईं ओर बैठी। उसी छोर पर दोनों कतारों के मध्य बलराम को

जगह मिली। उसकी आंखें सुलेखा पर पहुंची और वही स्थिर हो गई।

सुलेखा को विश्वास हो गया कि इन तीनों को पुलिस ने अन्य कही देख-रेख मे रखा था।

उल्टी वात थी। आज वलराम उसकी ओर भागता आ गया था और वह उसे निरुत्साहित करने पर मजवूर थी।

"पहला प्रश्न है, श्री जयदयाल की मृत्यु, हत्या थी या दुर्घटना!"

श्री जमाल हसन ने डाक्टर दास की ओर देखा। "मैं सिर्फ मृत्यु का कारण वतला सकता हू। मृत्यु का कारण पिस्तौल की गोली नही थी। उनकी देह पर कोई संगीन चोट नही है। मृत्यु पानी मे डूवने और तुरंत हृदय की गति वन्द होने से हुई।"

"पुलिस की खोज मुख्यत: कमरे मे वैठे लोगों के वयान मे हुई है। इंस्पेक्टर कुकरेती, आप अपनी तहकीकात के अनुसार क्या मेरे प्रश्न का उत्तर दे सकते है?"

"हा!—हत्या।"

चेयरमैन की तरह लोगों पर श्री हसन ने आख घुमाई। अशोक, सुलेखा, सरोज, राजाशाह मूर्तिवत् वैठे थे।

वलराम ने सेना के अफसर के संक्षिप्त ढंग से उत्तर दिया, "दुर्घटना!"

कुकरेती और दाजू मेजर का मेज के आर-पार सघर्ष प्रारम्भ हो गया।

कुकरेती ने कहा, "कुछ सिद्ध है, वाकी सिद्ध किया जा सकता है। श्री जयदयाल को लैला सम्मद मे दिलचस्पी उनसे कुछ भुगतान लेने की थी। यह वात उनके साझेदारो को मालूम है। उन्हे जयदयाल की किसी चाल वढाने का भय था और वह उसी कारण उनपर कड़ी निगाह रख रहे थे।"

"मेजर वलराम को हम शक्ल पाकर जयदयाल को मौका मिला। इससे उसने राजाशाह और सरोज देवी की आंखों मे धूल झोंकी और लैला सम्मद को साथ लेकर नौकर विहार के लिए निकल पड़ा।"

"ताल मे वढकर जयदयाल ने लैला सम्मद से अपनी मांग की। लैला सम्मद उससे कतरा रही थी। उन लोगो के वीच कहा-सुनी हुई होगी। नाव

में बैठने के पूर्व जयदयाल ने अपने हाथ मे लिया, यानी मेजर बलराम का ओवर कोट, लैला सम्मद को ताल की ठंड से बचाव के लिये प्रदान किया था। उसी ओवर कोट की जेब मे लैला सम्मद के हाथ पिस्तौल लगी। लैला सम्मद ने प्रतिकार मे फायर किया। फायर खाली गये हों, पर उन्ही के कारण जयदयाल ताल मे गिर गया।"

"जो कुछ भी लैला सम्मद ने जयदयाल को नहीं दिया वह इतना मूल्य-वान था कि वह जयदयाल को डूबने से बचाने के लिए नही रुकी। उसने तल्ली-ताल पर नाव तट पर लगाई। और आगे फरार हुई।"

कुकरेती चुप हो गया। सुलेखा ने सबके चेहरे देख, वोट गिने। अशोक की कोई राय नही थी। राजाशाह और सरोज 'हाँ' के पक्ष मे थे परन्तु हीरा और हमीरा अवाक् और क्रुद्ध कुकरेती की ओर देख रही थी। यानी दो वोट 'ना' पक्ष के भी थे।

जमाल हसन ने मुँह से पाइप निकालकर, पूछा, "आप इससे इत्तफाक नही करते, मिस्टर बलराम ?"

"बिल्कुल नहीं !"

"कुकरेती मानते है कि जयदयाल को लैला सम्मद से कुछ पाना था ! क्या उनका मतलब जबरदस्ती छीनना था ?"

"यदि यह बात थी तो सोचिये क्या होता। कुछ ऐसा मूल्यवान जिसके बचाव मे लैला सम्मद हत्या करने मे नही झिझकी, क्या जयदयाल लैला सम्मद की हत्या किये बिना हथिया सकते थे ? यदि कुछ छीनना था तो वह लैला के साथ एकात मे होने की गवाही को छिपाते, उसके साथ अकेले नौका-विहार मे निकलकर उसका प्रचार नही करते।"

"सिर्फ ऐसी सूरत मे लैला, जयदयाल के साथ अकेले नाव मे निकलती भी नही।"

"जयदयाल को यह नही मालूम था कि मुझपर हमला होगा। यदि हमला न होता तो उसको मोहलत १५ मिनट की मिली थी। १२-५ तक मैं मूंछें उतार देता। डकैती की योजना के लिए पन्द्रह मिनट काफी नहीं थे।"

"पन्द्रह मिनट सौदा करने या घूस देने के लिए काफी थे।"

"जयदयाल को लैला सम्मद से कुछ छीनना नही था। यह अधिकृत भुगतान या माल की वसूली थी। जिसके लिए जयदयाल के पास रसीद, पहचान या हुण्डी थी। यह रसीद, पहचान या हुंडी जयदयाल के पास थी, परन्तु आने वाली रकम मे जयदयाल और राजाशाह का बराबर का हिस्सा था। जयदयाल अपना कमीशन पहले काटकर कम रुपयो की आमदनी बतलाने की फिराक में थे।"

"ऐसा करने के लिए उनको लैला का सहयोग आवश्यक था। यदि राजाशाह पूछताछ करे तो लैला को उसकी बात की पुष्टि करनी थी। या राजाशाह से बिना मिले ही उसे नैनीताल से गायब हो जाना था।"

"यह तो स्पष्ट है भुगतान माँगने का अधिकार जयदयाल के पास ही था। अन्यथा राजाशाह इकतीस तारीख को ही लैला से सीधी बात कर लेते। वह यहाँ पर मजबूर थे। और इसी कारण वे सिर्फ जयदयाल की चौकीदारी कर रहे थे।"

"जयदयाल इस परिस्थिति में था जब उसने अपनी योजना बनाई। उसने लैला सम्मद का परिचय पाकर तय कर लिया था कि उसे किस चीज़ से घूस दी जा सकती है। लैला सम्मद हशीशखोर थी। शायद सफेद माल या चीनी कहलाने वाले हेरोइन (Heroin) तक बढ चुकी थी। उसका नैनीताल आने का, या कम से कम भुगतान यहाँ निभाने का मौका स्वीकारने का एक कारण यहाँ अपनी ज़रूरत का नशा मिल जाने की आशा थी।"

"कुकरेती जी के अनुसार नेपाल से इस अवैध हरे व्यापार की एक राह इधर कुमाऊं से है। जंगलो मे अफीम और चरस के खेत पकड़े गये हैं। यह तो तय है कि लैला सम्मद ऐसा मानती थी। उसने कई जगह इस तरह की पूछताछ प्रारम्भ की थी। नाथ के बयान में भी यह स्पष्ट रूप से अंकित है।"

डी० आई० जी० जमाल हसन ने यहां पर अपने सम्मुख लोगो से पूछा, "लैला सम्मद के नशाखोर होने और नशे की खोज मे होने का आप सबको इकरार है?"

कुकरेती ने कहा, "नाथ के बयान मे ऐसी बात है—जैसा मेजर साहब कह रहे हैं।"

राजाशाह ने कहा, "कुछ लगता तो ऐसा था। उसे कुछ कमी खटक रही

थी। —उसने हमीरा की सिगरेट चुरा ली थी। हमीरा के पास कुछ वैसी मीठी सिगरेट पड़ी थी।"

सरोज ने भी हामी भर दी थी। जमाल साहब ने अपने कागजों में कुछ लिखा। फिर पेंसिल से बलराम को आगे बढ़ने का इशारा किया।

बलराम ने कहा, "तो लैला सम्मद नशाखोर थी और इसी प्रलोभन से जयदयाल उसे बाहर ले गया था। तीसरी बात : जिस समय जयदयाल मेरे पीछे बिलियर्ड रूम में आया उसकी हालत सामान्य नही थी। मैंने सोचा था कि इस व्यक्ति मे कोई जल्दी, मजबूरी या डैसपरेशन है। असल में जयदयाल दस मिनट के अन्दर बेहोश होने वाला था। वह अपनी बढ़ती अस्वस्थता से लड़ रहा था।"

जमाल ने पूछा, "यह आपको कैसे मालूम है ? —आप उसके चेहरे-मोहरे से अन्दाज लगा रहे है ?"

"आप लोगो को याद होगा, जयदयाल अपनी स्पेशल मार्टिनी का गिलास उठाकर मेरे पीछे आया था। यह उसने आधी पी रखी थी। जब हमने व पड़े बदले, उसने मार्टिनी मुझे थमा दी। मैंने वह मार्टिनी बाकी समाप्त की थी। यदि मुझपर नाथ का वार न भी होता तो भी, मै कुछ मिनट बाद चक्कर खाकर गिर जाता। यदि मैं ऐसे नशे से अवश न होता तो नाथ जैसे अनाड़ी मुझपर इस तरह सीधी-सीधी दो चोटे नही कर सकते थे। मै अन-आर्म्ड कामबेट मे प्रशिक्षित हूँ।"

जमाल ने डाक्टर दास की ओर देखा। उन्होने कहा, "जयदयाल के बारे मे तो कुछ कहा नही जा सकता, पर मेजर को नीद उलटने की दवा देनी पड़ी थी। फिर जयदयाल का नशे की हालत मे डूबना उसकी मृत्यु की बात सुलझाता है। जयदयाल ने डूबने के खिलाफ कोई कोशिश नही की मालूम पड़ती है।"

बलराम सरोज देवी की ओर देख रहा था। वह प्रश्न उसके प्रतिद्वन्द्वी कुकरेती ने पूछा, "सरोज देवी, आपको क्या इनकार है कि आपने अपनी गहरी नीद की गोली मौका पाकर जयदयाल की मार्टिनी मे डाल दी थी ?" उसके स्वर मे स्वीकार पाने का अधिकार स्पष्ट था।

सरोज ने बिना उसकी ओर देखकर उत्तर दिया, "यह सच है। यह मेरा

जयदयाल से मजाक था।"

जमाल साहब ने फिर कागज़ों पर झुककर लिखा।

नृलेखा का हृदय आशंका से भर गया।

बलराम ने कहा, "आखरी बात जो तय है, वह यह है कि रात के एक या डेढ बजे हीरा और हमीरा ने एक डूबती नाव देखी। उनका मन उस ओर खिंचा पर उन्होंने उस बारे में कुछ किया नही। क्योकि तट से नाव खाली निकली थी। और तल्लीताल के घाट पर एक नई नाव पहुंची हुई थी। हीरा और हमीरा जयदयाल को डूबती नाव मे देख नही पाई, क्योकि वह नीद मे बेखबर नाव मे नीचे पडा था। उनकी कल्पना मे जयदयाल अस्पताल मे था। और दूसरा जोडा सकुशल तल्लीताल पहुच चुका था।"

बलराम चुप हुआ। कुकरेती कुछ कहने वाला था।

"नाव वाले सीज़न के बाद नाव खीचकर चले जाते है। कुछ लोग अक्तूबर मे और दिसम्बर-जनवरी के दिनों मे कुछ समय के लिए लौटते हैं। तल्लीताल पर कुछ नावें तट पर खीची पड़ी थी। यदि पुलिस जाच करे तो उनमे एक कम होगी। उन नावो मे कुछ टूटी और फूटी भी है। उनकी मरम्मत एप्रिल मे लौटकर होती है। आज सवेरे कुछ उलटी हुई पडी थी और कुछ सीधी ही।"

अब की बार बलराम सच मे रुक गया। उसकी आवाज़ थक गई थी।

"बाकी जो हुआ उसकी कल्पना ही हो सकती है।"

क्लब में जयदयाल ने लैला को सूचना दी कि पाच पाउंड हेरोइन मिल रही है। वह एकदम नाथ को छोड़कर बाहर निकल आई। उसका नशे मे पीडित सर्वस्व एकदम उत्तर चाहता था। एकदम हेरोइन को पाना। जयदयाल को अभी एक मुश्किल बात साधनी थी। उसने लैला को सीधे नाव पर चलने को कहा होगा। ठंड मे लैला को सिहरते देखकर उसे अपने हाथ का कोट भी दे दिया होगा। नाव मे बैठते ही लैला ने पूछा होगा, 'कहाँ है?'

जयदयाल ने कहा होगा, 'मेरे पास ही समझो।'

शुरू मे वह नाव चलाने बैठा होगा। शायद थोड़ी दूर निकलने तक उसने आगे उत्तर भी न दिया होगा। फिर जयदयाल ने अपने भुगतान के बारे मे

प्रश्न किया होगा, जिसे लैला ने उसी उदासीनता मे टाला होगा। वह भी जयदयाल को तृप्त करने में उतनी ही लापरवाही लगी होगी।

शायद लैला ने कहा हो कि वह हेरोइन के पैकेट के बारे मे पूरा जाने बिना कुछ वादा देने को तैयार नहीं है। यदि जयदयाल के पास हेरोइन नही थी तो उसके पास उसका माल भी नहीं था।

हर सौदा ऐसी ज़िच्च मे वधता है, फिर खुलता है।

कुछ दूर वह चुप चले हों। एक-दूसरे के निश्चय को तौलते हुए। लैला को भुगतान देना ही था। इस कारण उसका हाथ कमजोर था। सिर्फ जयदयाल के लालच से ही वह सौदा कर सकती थी। उसे कुछ आश्चर्य हुआ होगा कि जयदयाल कुछ थक-सा रहा था। उसकी आवाज क्षीण हो रही थी। उसकी चुप्पियां बढ रही थी। पर उसकी समझ मे कारण नही आया होगा।

वह लोग ताल के मध्य में रहे होगे। जब वारह वजे के आगमन पर क्लब मे पटाखे छूटे होंगे, लैला मुड़कर क्लब की रोशनिया देखने लगी होगी।

वह जयदयाल से कुछ कहने मुड़ी होगी और उसने जयदयाल को सीट से लुढका पाया होगा। नाव वीच ताल मे थमी।

लैला ने नाव मे बढकर जयदयाल को जगाने की कोशिश की होगी। उसे हिलाया, उसका नाम पुकारा होगा। जयदयाल सांस ले रहा, कुछ बड़बड़ा रहा होगा। ज़्यादा पी ली, या ऐसा ही कुछ।

लैला के लिए जयदयाल का होश-हवाश खोना सर्वनाश था। लैला ने जगाने की कोशिश मे पिस्तौल की आवाज़ की होगी। हमे मालूम है कि लैला को उत्तर मिल गया कि हेरोइन कही प्रायरी में छिपी हुई है। क्योंकि तल्ली-ताल से लैला प्रायरी गई थी। लैला के द्वारा ही मेरी पिस्तौल प्रायरी पहुची थी।

अब लैला को प्रायरी पहुंचने की जल्दी थी। वह जयदयाल को लिटाकर नाव खेने लगी। तल्लीताल का घाट पास था और नाव उस ओर थी।

तल्लीताल मे पहुचकर लैला ने सहारा देकर जयदयाल को उठाया। अपनी नाव तट पर खीचने के पश्चात्। जयदयाल उस नाव से तो उतर गया पर वह तट पर वाकी नावो को पार न कर सका और लैला के हाथ से फिसलकर तट की एक नाव मे गिर गया।

लैला जल्दी मे थी। तल्लीताल मे उस रात १२-३० वजे के करीव सन्नाटा था। लैला पहले जयदयाल को वही छोड़ ऊपर सड़क पर चढ़ गई होगी। फिर लौटी होगी। वह अपना पीछा नही चाहती थी। वोट हाउस से सव लोग इधर आने वाले हो सकते थे। उसे गायव देखकर जयदयाल उसकी चोरी रोक सकता था। लैला को कुछ समय चाहिए था, जिसमे वह हेरोइन का पैकेट पा ले। तव सौदे में उसका हाथ ऊपर हो जाता।

लैला को उस नाव के फूटी होने का एहसास नही था। लैला ने उस नाव को तट से खिसकाकर ताल मे ढकेल दिया। जयदयाल ताल मे नाव पर कुछ समय के लिए वन्दी, इस तरह वन जाता था।

हवा तल्लीताल के घाट से गरजती वह रही थी।

पानी मे उतारी नाव धीरे-धीरे आगे वढ गई।

रात के डेढ वजे हीरा और हमीरा ने देखा, तव, नाव डूवी नही, डूव रही थी।

क्योंकि लैला चोर थी, डकैत नही। एक कमज़ोर कमज़ोरी से परवश औरत, वह शायद तल्लीताल लौटकर आने से अपने-आपको रोक न पाती। पर रात के दो वजे तक प्रायरी में उसका खून हो चुका था। उसकी मृत्यु जयदयाल की मृत्यु के जरा पूर्व या जरा ही देर मे हुई।

सुलेखा ने मेज़ के चारों ओर देखा। कुकरेती जमाल साहव की आज्ञा की वाट देख रहा था। अपने एतराज प्रस्तुत करने। पर सुलेखा को लगा कि कुकरेती का विरोध नकली है। अशोक वहुत ध्यान से और अपलक दृष्टि से सोच रहा था। ज्यादा हां—। राजाशाह के चेहरे से हवाइयां उड़ी मालूम पड़ रही थी। जैसे एकाएक किसीने सिद्ध कर दिया हो कि वह वाहरी-जीवन-पसन्द ठोस मर्द नही है। पर राजाशाह का वोट 'हा' मे ही था। सरोज वलराम से संघर्ष मे थी। शायद 'नही' पक्ष मे। सरोज ने तभी उसकी ओर देखा, निखालिस शुद्ध घृणा से। वलराम अपनी ही व्याख्या से वहुत संतुष्ट नही था। पर वह तो जनाव का स्वभाव था। हीरा और हमीरा विल्कुल स्पष्ट 'हां' थी। कुकरेती को आज्ञा मिली।

"श्री बलराम ने विस्तार से कल्पना की है। सिद्ध कुछ गिनी हुई बातें ही की हैं।"

सुलेखा ने देखा कि इसपर हीरा और हमीरा कुकरेती पर घूंसा तानने को तैयार हो गई हैं। वह कुर्सी पर पीछे बैठ गई।

"आपके पास क्या आधार है, यह मानने के लिए कि लैला घूस और मूल दोनों लेकर नही भाग सकती थी ?"

बलराम ने राजाशाह और सरोज की ओर देखा। वे लोग चुप रहे।

बोला अशोक माथुर, "राजाशाह, मेरे ख्याल से आपकी चुप्पी का समय जा चुका।"

इसमे यह धमकी थी कि अन्यथा अशोक स्वयं बोलने पर मजबूर हो जाएगा। वह सरोज की अवहेलना करता हुआ, राजाशाह की ओर देखता रहा।

राजाशाह ने धीरे-धीरे इकरार किया, "हमारी कम्पनी के कुछ बाकी रुपये, काफी रुपये का भुगतान था। लैला पैसा लेकर भागने की जुर्रत नहीं कर सकती थी। इतना हमारे डर से नहीं जितना अपने मालिक के डर से। नही, वह असंभव था।"

बलराम ने पूछा, "क्या आपको भुगतान मिल गया है ?"

सरोज के कुछ सुझाने से पहले पीड़ित राजाशाह ने कहा, "कहां मिला ?"

कुकरेती ने कहा, "यह भी हो सकता है, जयदयाल ने रकम ले ली हो।" उसके कपड़ों मे कोई रकम या रसीद नही थी। लेकर विशाल ताल के हवाले कर दी हो। आपको सही स्थिति का मालूम तो पड़ ही जाएगा।"

राजाशाह ने अविश्वास से कहा, "मालूम तो हो जाएगा। शायद !—यह मिडिल ईस्ट के लोग ज़रा पैसा खा जाने में माहिर है। जयदयाल का अन्त सुनकर फायदा उठा लेंगे।"

सुलेखा चौकन्नी होकर सुन रही थी।

कुकरेती ने पूछा, "सुलेखा देवी, गायब हो जाने के पूर्व जयदयाल ने कोई बड़ी रकम—जो इस तरह के भुगतान की हो सकती हो, क्या आपके हवाले की ?"

सुलेखा ने उत्तर दिया, "जयदयाल ने मुझे कोई बड़ी या छोटी रकम नहीं दी।"

इस उत्तर मे कुछ अन्य संवादी स्वर बलराम ने और कुछ अंश में और अशोक ने सुने।

बलराम ने कहा, "कुकरेती, लैला पूर्णतः जयदयाल की हत्या से बरी है। कोई और हो या न हो। जयदयाल की लाश एक नाव मे फंसी होने के कारण अगले दिन ऊपर नही उठी। उस नाव से मेरा सिर टकराया था। और यह नीचे खिसक गई, परन्तु वह खोजी जा सकती है। उसमे डूबने की गवाही लैला को बरी करती है। जयदयाल को अपनी नाव से गिराकर वह चम्पत नही हुई। और न उसने अपनी नाव मे छेदकर उसे डुबाया। सीधी हत्या और उसे दुर्घटना सिद्ध करने के साधन उसके पास थे। जिनका उपयोग लैला ने नही किया।"

बलराम चुप हो गया। कुकरेती भी चुप था।

अशोक माथुर ने निर्णायक स्वर मे कहा, "जमाल साहब, मूल रूप मे मेजर बलराम की धारणा सही साबित होती है। जयदयाल की मृत्यु दुर्घटना थी।"

जमाल हसन, डी० आई० जी०, ने भी अपने कागज़ पर एक लकीर खींच दी।

जमाल साहब ने कहा, "दूसरा प्रश्न है, प्रायरी मे लकड़ी के टाल को क्यो जलाया गया ?"

पिछली बार संक्षिप्त उत्तर देकर कुकरेती हार गया था। उसने भी इस बार पहले तथ्यों को प्रकट करने का निश्चय किया।

"इस टाल के बारे मे जो बातें सिद्ध है वह इस प्रकार है। वह बहुत दिनों पुरानी लकडियो का संग्रह था। इसकी लकड़ियां उपयोग मे नही आती थी। घर मे बिजली और कैरोसीन इस्तेमाल होता था। कभी-कभार फायर प्लेस जलाने या बाहर दावत के लिए ऊपर की लकड़ियो को उतार लिया जाता था। यानी यह लकडियो का ढेर इस्तेमाल के लिए नही था।...

"इस टाल मे जानबूझ कर किरोसिन छिडककर आग लगाई गई। पहली

तारीख की संध्या दो किरोसिन के टिन उलटे गए थे। यह किरोसिन के टीन छोटी रसोई के बगल वाले स्टोर मे थे। इसका दरवाजा अन्दर से वन्द कर, रसोई के पिछले बरामदे मे खुलते दरवाज़े पर ताला लगाया जाता था।"

"टाल में आग लगने की सूचना लक्ष्मण से मिली। पर सहायता पहुचने तक टाल की आग मे जलाई लाश पूरी जल चुकी थी। टाल में लगी आग स्वतन्त्र रूप से श्रीमती सुलेखा दयाल ने अस्पताल से देखी। उन्होंने मेजर बलराम को दिखलाई। फिर दोनो तुरन्त प्रायरी लगभग उसी समय पहुच गए जब लक्ष्मण की सूचना पर नीचे से कुली जमा कर थाने के सिपाही और फारेस्ट गार्ड पहुचे थे।"

'खास टाल से दो चीजे बरामद हुई। एक मानव-कंकाल का पूर्ण शक स्थापित करने लायक हड्डियों के टुकडे और चूरा। मेजर बलराम की पिस्तौल।"

"आपके प्रश्न का उत्तर तो कठिन नही है, डी० आई० जी० साहब। टाल को जलाने का उद्देश्य तो लैला सम्मद की लाश को जलाना था।"

जमाल हसन ने मेजर बलराम की ओर देखा।

बलराम ने चुपचाप अस्वीकार मे सिर हिला दिया।

सुलेखा ने पाया कि सब ही बलराम की ज़िद को अन्याय मान रहे हैं। जमाल हसन साहब के सुन्दर चेहरे पर कुछ शिकायत की लिखावट थी। सुलेखा ने फिर बढते शक से पाया कि हीरा और हमीरा बिल्कुल स्तब्ध और ठीक सामने देख रही थी।

"क्या मैं इंस्पेक्टर कुकरेती से एक प्रश्न पूछ सकता हूं।"

"जरूर।" जमाल साहब ने कहा।

"लाश को तो टाल मे रखकर जलाया जा सकता है। मेरा रिवाल्वर क्यों टाल में जलाया गया ?"

कुकरेती सोचने लगा। चुप रहा।

"रिवाल्वर से ही आप हड्डी के चूरे को लैला का अवशेष कह रहे हैं। लाश जलाने वाला आखिर वहां से भाग गया ? उसे कही रिवाल्वर खोना था तो इतना बड़ा ताल था ? वह रिवाल्वर साथ क्यों नही ले गया ?"

"लैला सम्मद के साथ ३१ दिसम्बर और १ जनवरी के बीच वाली रात

यह रिवाल्वर प्रायरी पहुंचा था। खूनी ने लैला का कोई अवशेष प्रायरी मे नही छोड़ा है। उसका बैग और कपड़े नष्ट हुए या हटा लिए गए। यदि खूनी को लैला के पास रिवाल्वर मिलता तो वह उसको ले जाता। इसका सीधा मतलब यह है कि रिवाल्वर को लैला सम्मद ने अपनी हत्या के पूर्व ही टाल मे फेंक दिया था। खूनी को टाल मे रिवाल्वर के होने का ज्ञान ही नही था।"

"लाश टाल के ऊपर की एक फुट लकड़ियां जलने से स्वाहा हो चुकी थी। हम लोग चिता को बुझाने के प्रयत्न मे लकडियां गिराते रहे। दो फुट तक तो लकडियां छितर गईं। फिर मोटे लक्कड़ थे। मैंने ध्यान से देखने पर पाया कि वे लक्कड एक ढंग से सजे है! और उनको बल्ली के धक्के से छुड़ाना संभव न होगा। मैं लकडियो की रचना देख रहा था। तब मैंने देखा कि नीचे की भारी लकडियो मे एक खाली चौकोर जगह है। जहा ऊपर की राख गिर रही थी, पर जहा आग नही थी, मैंने पहले वहां ऊपर से बल्ली डालकर टटोलना चाहा, पर सफलता न मिली। फिर देखा कि पीछे की ओर से उस चौकोर खाली जगह तक राह है। बल्ली से टटोलने पर रिवाल्वर वहां गिरी राख के साथ निकल आया।"

"टाल मे एक छिपाने की जगह थी या खाली जगह जहां कुछ छिपाया जा सकता है।"

"यदि लैला सम्मद ने रिवाल्वर इस जगह पर रखा तो इस जगह का उसे कैसे पता था? छह फुट टाल के ऊपर वह रिवाल्वर यू ही फैंक सकती थी। टाल की लकड़ियो मे फंसा और गिरा सकती थी। पर पीछे की ओर नीचे की चोर जगह के बारे मे उसे कैसे मालूम हुआ? क्या वह यह चोर जगह थी जहां जयदयाल ने हेरोइन छिपा रखी थी? और जिसका पता लैला को नाव पर चला था? लैला ने शायद हेरोइन का बैग निकाला होगा और हाथ की पिस्तौल अन्दर फेंक दी होगी।"

"लैला को रिवाल्वर के बारे मे कोई फिकर नही थी। जयदयाल नाव में पड़ा था। उसने कोई अपराध नही किया था। जो वह चाहती थी, उसे मिल गया था। वह प्रायरी से अपनी चोरी का निशान मिटाना चाहती थी न ही हेरोइन हाथ आ जाने पर सौदे मे सुदृढ होती थी। बल्कि पिस्तौल वहां पाकर जयदयाल को सूचना हो जाती कि उसका पक्ष अब कमजोर हो चुका है। लैला

के लिए वहा पिस्तौल फेक देना अस्वाभाविक नही था।"

"यदि टाल मे हेरोइन छिपाने की जगह थी तो टाल जलाने का एक कारण और था। चोरी के सबूत को जला देना। कोई ऐसा व्यक्ति जिसे हेरोइन छिपाने की जगह का तो मालूम हो पर लैला के वहां रिवाल्वर फेंकने का न मालूम हो, टाल को जला सकता था। यदि नादानी और शैतानी की बात को अलग कर दें तो टाल जलाने के कारण दो हो सकते हैं। खून के सबूत को जलाना या चोरी के सबूत को जलाना। इसी तरह टाल जलानेवाला स्वयं खूनी, या लैला से हेरोइन चोरी या डकैती करनेवाला या बरामदगी करने वाला हो सकता है।"

"अब हम इस प्रश्न पर आते है कि लाश लकड़ी के टाल पर क्यों रखी गई।"

जमाल हसन के मुख से पाइप गिरते-गिरते बची। "लाहौल बिलाकूवत ! लाश को चिता पर रखने की भी आप जलाने से दीगर वजह ढूंढ रहे है। आपके सोचने की बारीकी के हम कायल है साहब ! पर तहकीकात को बिल्कुल प्रोफेसरी न बना दीजिए।"

बलराम ने कहा, "रिवाल्वर जलाने नही, छिपाने की जगह रखा गया था। यदि रिवाल्वर छिपाया जा सकता है तो ऊपर की लकड़ियां गिराकर एक दुबली औरत की लाश भी छिपाई जा सकती है।"

जमाल साहब अब बहस में कूद चुके थे। "पर खूनी छिपाने पर क्यों रुकेगा जब वह लाश को जला ही सकता है ?"

"लाश किसलिए जलाई जा सकती है ? जलाने के शौक के लिए नहीं, खूनी का मुख्य उद्देश्य यह भी नही था कि वह अपराध ही असिद्ध कर सके। मुख्य उद्देश्य यह होगा कि प्रश्न उसपर सिद्ध न हो। अपराध को गायब कर देने और अपराध को दूसरे पर सिद्ध करने के बीच मे यदि दूसरी बात सरल हो तो वह लाश छिपाएगा, जलाएगा नही। यह भी हो सकता है कि लैला का खून करके खूनी का उद्देश्य ही सिद्ध न हुआ हो और आगे लाश रखकर वह सिद्ध हो सकता हो। तो ?"

जमाल साहब टस से मस न हुए। "जनाब, टेढ़ी बाते तब मानी जाती हैं

जब सीधी बातों से काम न चले। आपका तो शौक ही चक्कर डालना मालूम होता है।"

बलराम हंस पड़ा, "ठीक है, तो देखें कुकरेती की बात कितनी सीधी हो सकती है ?"

यहां थोडी देर रुकना पड़ा, क्योंकि सिपाही और अर्दली कमरे मे चाय लाए। अशोक माथुर ने जमाल हसन से कुछ पूछा और वह उठकर बाहर गया। सुलेखा समझ गई। चन्द्रन को आज रात लाश के साथ बरेली की यात्रा के लिए आदेश दिए जा रहे है। एकाएक सुलेखा के मन में इतनी उदासी बढ आई कि उसे लगा कि कमरे में भी रोशनी कमज़ोर हो गई है। कितने दिन बीतेंगे, कि फिर बलराम का हाथ उसके हाथ मे आएगा।

"मेरे अनुमान से लैला सम्मद इकतीस तारीख की रात को एक-डेढ बजे प्रायरी पहुच गई थी।" बलराम ने प्रारम्भ किया। उसने फिर कुकरेती से पूछा :

"आपकी धारणा के अनुसार उसका खून कब हुआ ?"

कुकरेती कुछ उत्तर देने वाला था पर रुका। "आग चिता पर पहली तारीख की शाम को करीब सात-सवा सात बजे लगाई गई। इकतीस दिसम्बर रात्रि के एक बजे और पहली के सात बजे के बीच, कभी भी खून हुआ हो क्या फरक पड़ता है ?"

बलराम ने पूछा, "आप फरक जानना चाहते है—या मानते हैं कि खून इस बीच कभी हो सकता है ?"

"कब खून हुआ हो, इसका वास्ता खूनी की शक्सियत से हो सकता है। पर खून होने या न हो सकने से नही।"

"प्रायरी मे लैला सम्मद का खून रात के दो बजे के पूर्व ही हो सकता था, क्योकि उसे प्रायरी मे रुकने का कोई कारण ही नही था। उसे मालूम था, हेरोइन कहाँ है। लैला को हेरोइन ढूंढ़कर वापस लौटाना था।"

कुकरेती चुप था।

"यदि खूनी के लिये सीधी बात खूनकर लाश को जलाना था तो उसने तभी लाश क्यों नही जला दी ? लाश अठारह घण्टे बाद क्यों जलाई गई ?

जमाल साहब, आपको हर हाल मे मानना पड़ेगा कि लाश टाल में अठारह घण्टे छिपाई गई।"

"लैला सम्मद के खून और टाल को जलाये जाने का संबंध आपके शब्दों में टेढा ही हो सकता है।"

कुकरेती ने कहा, "दो बजे तक खून करना जरूरी नही था। कोई, शायद खूनी, लैला सम्मद को प्रायरी में छिपने का कोई कारण दे सकता था, या चोट पहुचाकर छिपा सकता था। आपने यह संभावना ही सिद्ध की है कि खून और चिता जलाने के समय अलग-अलग थे। यह भी कि लाश जलाने के अलावा टाल जलाने के दूसरे कारण भी हो सकते है। संभावना उठाना सिद्ध करना नही है।"

बलराम ने मुस्कराकर कहा, "बिल्कुल ठीक। मैंने आपकी धारणा से अन्य संभावना प्रस्तुत की है।"

"यदि खूनी के पास लैला के ऊपर अधिकार होता तो वह लैला की लाश को ताल मे फेंकता। पहली की शाम तक बलराम फरार था। हर तरह से ताल मे डुबाना चिता मे जलाने से बेहतर ढंग था। यदि अपने से शव को सिर्फ दूर ही फेंकना था।"

"दूसरी बात लैला को मारने के क्या कारण हो सकते है? नाथ हिरासत में थे और वह प्रायरी के निकट नही आये। नाथ लाश जला नही सकते थे, क्योकि पहली तारीख तीन बजे तक नैनीताल छोड़ चुके थे। नाथ के अलावा किसी और का लैला से मन के विकार का संबंध नही था। बाकी सबके लिए लैला एक हेरोइन की पुडिया या भुगतान का पैसा थी। वसूली के लिये लैला सिर्फ वाहक थी। यानी मूल रकम की चोरी के लिये लैला जान की धमकी पर रकम दे देती। हेरोइन की पुड़िया के लिये उसका व्यवहार अव्यवस्थित हो सकता था। मुख्य रकम या उसमे उसका हिस्सा जयदयाल को नही मिला, क्योकि वह लेने के लिये अवश था। रकम गायब है, यदि लैला के पास थी। इसी तरह से हेरोइन का पैकेट भी गायब है।"

"जहा तक प्रायरी पहुंच सकने का प्रश्न है, इकतीस की रात के दो बजे तक सुलेखा दयाल को छोड़कर सबको अवसर था। पहली तारीख को लाश जलाना प्रारम्भ करने के लिये सुलेखा दयाल और सरोज घोषाल को अवसर

नही था। टाल जलाना दूसरे के द्वारा भी कराया जा सकता है—लोग अपनों को गवाही दे रहे है। झूठ भी बोल सकते हैं।"

"यह भी जरूरी नही कि खूनी ने रात को ही लाश टाल मे रखी हो। सुलेखा दयाल नीचे के गेस्ट रूम, बाहर के शेड्स और कुछ छोटे कमरो मे नही गई थी। लाश जलाई जाने के पूर्व प्रायरी में छिपी भी हो सकती है।"

"यहां कही तथ्यों और उससे आवश्यक निष्कर्षो का अन्त हो जाता है। इसके आगे विचार नही ले जा सकता। मै और कुकरेती वही बाते सुनकर, अपने मन के अनुसार अलग-अलग बातें सोचते है। न मेरी धारणा अनिवार्य है—न उनकी।"

"हीरा और हमीरा की बात ली जाये। मैं यह नही मान पाता कि डूबती नावे नही देखी गई। कुकरेती यह जानकर कि वह दोनो पहली तारीख को दिन-भर बाहर थी, अपनी कल्पना मे उनको प्रायरी मे पहुंचे बिना नही देख पाते। हमे कुछ आगे चाहिये। खूनी पर खून के निशान जैसा, मुखबिर के आखो देखे हाल जैसा, कुछ खूनी के स्वय स्वीकार जैसा।"

"परेशानी इस बात से है कि कुछ ऐसा मैंने छुआ, देखा या पहचाना है, अपनी अचेतन बुद्धि से, जो अब पहुच मे या स्मृति मे नही लौटता।"

"मैंने यह नही सिद्ध किया कि टाल जलाने का उद्देश्य लाश को जलाना नही था। यही सिद्ध किया कि कुकरेती भी अपने कथन को सिद्ध नही कर सकते हैं।"

बलराम के चुप होते ही, सुलेखा ने सबपर दृष्टि दौडाई। सबने चिन्ता-मुक्ति की लम्बी सासे छोड़ी थी। बड़े आश्वासन में लौट आए थे। उन्हे लग रहा था कि जब कुकरेती किसी ओर अंगुली उठाने वाला था, बलराम हाई कोर्ट जज की तरह यह तब तक नही होने देगा जब तक बात बिल्कुल सिद्ध न हो जाये। पर ऐसा मानना इन लोगो की मूर्खता थी। कुकरेती और बलराम मे छिपा सहयोग था। बल्कि कुकरेती सदा अपने नहलों पर दहला कुछ अधिक आसानी से लगवा रहा था।

हीरा और हमीरा अपने वकील की बहस के बाद शायद अपना कलह स्वयं कुकरेती से उठाने तैयार थी। शायद नेपाली मे कुछ कहा था, जिससे

कुकरेती के कान लाल हुए। राजाशाह बिल्कुल अनसेक्सी लग रहे थे। सरोज बाएं वक्ष पर हाथ रखकर कठोर आँखों से सोच रही थी।

जमाल हसन ने कहा, "हम लोग मेजर बलराम के आभारी है। जिन्होंने केस के मुख्य पहलुओ को स्पष्ट किया है। पुलिस वाले उद्धत करने वाले होते है, खतरे के जीवन मे सोचने और करने को अलग पहचानना नही होता है। खैर, पुलिस की भी राय—अभी तक की तहकीकात से इसी जगह है—यानी तहकीकात जारी है। आप सबसे अनुरोध है कि आप जिम्मेदार लोगो की तरह पुलिस की मदद करे। जयदयाल की लाश की बरामदी से बात बिल्कुल बदल गई है।"

"आप लोगो के कल के बयान किसी बिल्कुल और परिस्थिति मे थे। तब आप लोगों का संकोच उतना संगीन नही था, जितना अब होगा। यदि आप-ने जुर्म नही किया तो सब छोटी-बड़ी बातों को प्रकट करने में हिचकिचाहट नही होनी चाहिये। हमारे अफसर आप लोगो से सम्पर्क मे रहेगे। एक-दो दिन मैं स्वयं नैनीताल हूँ।"

अशोक माथुर की ओर देख उन्होंने कहा, "जयदयाल के पिता सर गिरधर से मेरा परिचय था। उनका खानदान उत्तर प्रदेश के कायस्थ परिवारों मे प्रमुख है। पोस्ट मार्टम पूरा हो चुका था। हमने तय किया है कि आप जयदयाल की लाश उसके आखिरी संस्कारो के लिए ले जा सकते है। आप और सुलेखा दयाल अन्तिम कर्म निपटाने जा सकते हैं। श्री जयदयाल की मृत्यु एक दुर्घटना थी। और वैसे ही अखबारो मे बतलाई जायेगी।"

जमाल हसन बर्खास्तगी की अदा से खड़े हो गए।

अशोक ने सुलेखा से कहा, "आधा घण्टा लगेगा। मैं स्विस काटेज के नीचे कार भेज दूंगा। जब हम तैयार होगे।" वह कुछ और कहना चाहता था, फिर रुक गया। शायद, सावधानी बरतना। जयदयाल की मृत्यु से बाहरी और भीतरी व्यवधान उत्पन्न हो गये थे। अशोक जिस प्रकट सयम की अपेक्षा करता था, उसके भग होने की संभावना सुलेखा स्वयं मे कल की तरह आज नही पाती थी। उसने सिर हिला दिया।

हाथ थपथपाने वाला चार्ल्स कही से पास पहुंच गया था। वह उसके साथ अस्पताल से उतर आई।

## स्विस काटेज

समय ७-४५ शाम

मेज़ पर सुलेखा की ओर सिर्फ एक चाय का प्याला था। उसकी ओर वेटीना की हाई-टी (नाश्ते) की सारी चीजे। सुलेखा का चेहरा ताल के पास की काली चट्टानो की तरह का था।

सुलेखा ने औपचारिक ढग से कहा, "हम वरेली आ रहे हैं।"

उसने सामने बैठकर सुलेखा के लिए दूसरा प्याला चाय वनाई। पहला प्याला, उसके हाथ मे विना छुए, ठंडा हो चुका था।

"अव आत्महत्या तो नही करोगे? तुम सव झंझटों से मुक्त होना चाहते थे। कहा फंस गये?"

वलराम ने उसके सामने चाय का प्याला रखा। सुलेखा ने चौंककर कहा, "अरे तुमने कुछ खाया ही नही? वेटीना के अनुसार तुम भूखे लगते हो। क्यो?"

"मां भी कहती थी कि मैं सन् तीस के वंगाल के दुर्भिक्ष की आत्मा हूं।"

सुलेखा की कठोरता उसकी भावुकता और भावुकता के भय से ही वनी थी। उसने दूसरे स्वर मे कहा, "तुमने वह लकीर खीच ही दी। तुम सदा मानते थे कि जयदयाल की मृत्यु हो चुकी है। उस रात तुम्हारे वार-वार गले की ओर जाते हाथ न जाने कैसी भाषा थी, जो यही वार-वार कहती थी। पर मुझे विश्वास नही होता था, जयदयाल मृत! जिस छुटकारे के लिए मैं वरसों छटपटाती रही थी उसे ऐसे न प्राप्त करना था! उसे हराने लायक हाथ मुझे मिल गया था। मैं अव जीत जाती। वाजी उठाने की आवश्यकता नही थी।"

वलराम ने सुलेखा का क्षीण हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

"तुम अब क्या करोगे?"

"वही नौकरियों के लिए इन्टरव्यू के लिये पहुंचूगा। इस माह फ्रंटियर

सर्विस की कॉल है। भारतीय इतिहास की सब लम्बी, हारी लड़ाइयों के नक्शे बनाऊंगा। मुझे पहले चिढ़ उठती थी, हमारे यहां की वीरता का आदर्श अपने भय से लोहा लेना रहा है। दूसरे पर विजय पाना नहीं। युद्धक्षेत्र में भी भीतरी साधना, बाहरी सफलता की बजाय···" वह चुप हो गया। उसकी कल्पना मे उसके भारी पांव आते और जाते दिन थे।

सुलेखा जैसे अपने बारे में बतलाने पर मजबूर हुई। "तुम्हे जयदयाल के मन के बारे मे विलक्षण दृष्टि मिली हो, पर तुम मुझे बिल्कुल नही समझते। यदि समय होता तो अपने को छिपाना बिलकुल उचित था। मैं तुम्हे अपने बारे मे चेतावनी नही सुनाती। मै कठोर हू, स्वार्थी हूं, षडयंत्रकारी हूं। चोर भी हो गई हूं। उपभोग की गई चीज हूं। दूसरों का उपयोग करना सीख गई हूं, घृणा और उपेक्षा कर लो···वह सहने की भी आदत हो गई है।"

"रहने दो!"

"रहने दो क्या। तुम दुनिया-भर की सब झूठ छाटते रहे हो। मेरी झूठ तुमने छांटनी ही शुरू नही की। असली सच और झूठ तो तुम्हे मैं एक दिन बतलाऊगी। यह याद रखना।"

एकाएक रुककर सुलेखा ने पूछा, "तुम कही बाहर तो नही जाने वाले?"

"मैं?"···फिर बलराम ने समझकर कहा, "नहीं! केस बम्बई में होगा। मेरी गैरहाजिरी की ही ज़रूरत होगी।"

थोड़ी देर चुप्पी रही।

सुलेखा ने पूछा, "तुम और कुकरेती नाटक कर रहे थे न? वह ऐसा बेवकूफ नही है कि हर बार गलत निष्कर्ष पर पहुंचे।"

"क्या इतना स्पष्ट था? फिर तो जमाल साहब की योजना सफल नहीं होगी।"

"तुम्हारी योजना? जमाल साहब ने खूबसूरत दीखने के अलावा कोई योजना नही बनाई। वह भी भगवान की ही देन है।···जयदयाल की चार बड़ी बहने आयेगी. एक से एक बढकर कुरूप और तीक्ष्ण बुद्धि! वह तो मुझे ही खूनी मानती रहेगी। यदि यहां से सूचना नही आई।"

सुलेखा ने एक नाम लेकर पूछा। बलराम ने स्वीकार कर लिया।

वे लोग चुप बैठे थे। नीचे से कार का हार्न बजा।

सुलेखा ने बायें हाथ से अपना बैग खोलकर चांदी का शीशा निकाला। "यह अपने पास रखना, खोना मत।"

बाहर रोडो पर पैर बजे।

सुलेखा ने दुखी स्वर में कहा, "मैं ही हमेशा बोलती रहूंगी। तुम मुझसे कुछ पूछोगे नही। कोई उत्तर नही दोगे।"

वाणी-शून्य बलराम ने सुलेखा का हाथ, 'हां' में दबाया। सुलेखा को आशा नही थी कि विदाई पर इस योद्धा का चेहरा इतनी पूर्णता से मुरझा जायेगा।

लिलि काटेज मे तैनात हेड कांस्टेबल जग बहादुर ने इत्तला दी कि सरोज घोषाल का अभी फोन आया था। और उन्हे हुक्म के अनुसार बतला दिया गया है कि राजाशाह पुलिस की आज्ञा लेकर अपने परिवार के पास हलद्वानी गये है।

रायल होटल मे कुछ देर बाद थाने से कुकरेती का फोन आया। डी० आई० जी० जमाल हसन ने कहा,—"ठीक है, गुडलक"।"

जमाल होटल मे न बैठ सके। पाइप पीते हुए, धीरे-धीरे चलकर स्विस काटेज आ गये। काच के दरवाजों मे बन्द बरामदे मे, गहरी आराम कुर्सियों मे पैर फैलाए चार्ल्स और बलराम बैठे थे। रोशनी हल्की थी।

जमाल ने वहा बैठकर लम्बी चुप्पी तोड़ी। "कुकरेती गया है, अब थोड़ी ही देर की बात है।"

मेजर ने हूँ-हाँ भी नही की। बिल्कुल गुमसुम, सवेरे की तैराकी का अब बदला निकल रहा था। पर बलराम ने बिना आना-कानी किये हत्या के बारे मे अपने निष्कर्ष दुबारा उन्हे सुना दिये—जब जमाल ने एक-दो बातों को चेक करने की प्रार्थना उससे की।

सरोज ने जयदयाल को नशे की गोली देना स्वीकार किया है। यह बिना अभिप्राय नही था। इसका भी कारण वही था जो जयदयाल के नाटक का था। जयदयाल के अलग होने पर लैला सम्मद से एकांत मे बात तय करना, या जबर्दस्ती करना, असली भुगतान की रकम जानने के लिए।

इसीलिए सरोज को मेरे बेहोश हो जाने पर अचरज नही हुआ। उसके अनुसार जयदयाल अस्पताल मे था—और एक दूसरी तरह से राह से हटा दिया गया था। यदि उस समय उसे लैला सम्मद मिल जाती तो वह अपना पुराना मनसूबा उसी तरह निभाती।

एक बजे के कुछ पहले सरोज अस्पताल से निकली। राजाशाह जा चुका था। वह वहां बाहर कुछ देखकर, बिना पहचान कर रुकी। किसीने प्रायरी मे रोशनी जलाई थी।

सरोज घर जाने का फैसला बदलकर रिक्शा बोट हाउस क्लब ले गई। बोट हाउस क्लब जाने के दो कारण थे। एक तो यहां से आगे पैदल जाना था और रिक्शा छोड़ने के लिये यहा आने मे सहूलियत थी। दूसरा अस्पताल मे सरोज को मार्टिनी के गिलास की याद आ गई थी। मै उस गिलास को बिलियर्ड्स रूम ही छोडकर लौटा था। उस गिलास को धोना था।

सरोज क्लब के दूसरी ओर के दरवाजे से बाहर निकली और प्रायरी की चढ़ाई की ओर बढी। उधर लैला ने प्रायरी पहुचकर पाया था कि टाल अधेरे मे था। उसके पास तो टार्च भी नही थी। लैला ने बरामदे को टटोला और पाया कि पीछे की रोशनी का स्विच बाहर नही था। वह जल्दी मे थी।

उसने मकान मे घुसकर रोशनी करने की सोची। बैग खोलकर उसने वह तीन इंच, छोटा नीले रंग की मूठ वाला चाकू निकाला जो उसने उसी दिन हीरा के सामने भोटिया स्त्री से लिया था। इससे उसने पिछले दरवाजे के ऊपर वाले कांच का प्रोटीन काटकर निकाला और चाकू के फल से काच को अलग कर हटा लिया। हाथ अन्दर डालकर दरवाजा खोला। मुख्य मकान के आर-पार गलियारे और हाल मे घुसते ही तीन स्विच बाहर की ओर है। उसने पहला जलाया, दाहिनी ओर रोशनी हुई। दूसरा जलाया मुख्य हाल की ऊँची बत्तियों के कुंज जल गये और आखिर वाले से पीछे की बडी बत्ती जल गई। उसने सिर्फ पहला स्विच वापस आफ किया।

यही रोशनियों का जलाना अस्पताल के बाहर निकलकर सरोज ने देखा था—जिस तरह अगले दिन शाम सुलेखा ने मकान की आग देखी थी।

लैला टाल के पिछली ओर गई और उसने टाल मे वह बिल ढूढा, जिसके बारे मे नीद मे डूबते जयदयाल ने उसे बतलाया था। इसपर से सामने की

लकड़ियां उठाकर उसने हेरोइन का पैकेट बाहर निकाला। उसको मेरे ओवर-कोट की बाहरी जेब मे रखते उसका हाथ रिवाल्वर से टकराया। और उसने वह रिवाल्वर बेकार जान उस बिल में फेंक दिया। लकड़ियां वापस रख दी। बिल ढूढने और पैकेट पाने मे उसे कम-से-कम आधा घंटा लगा होगा।

अब जैसा मैंने कहा था, उसका प्रायरी मे काम समाप्त हो गया था। वह लौटने की जल्दी मे थी। उसे रोशनी बुझानी थी। शायद वह पैकेट को अच्छी तरह प्रकाश में देखना भी चाहती थी। पैकेट प्लास्टिक का बन्द बैग था। जिसमे चीनी-सा दीखने वाला पदार्थ भरा था। हॉल की तेज रोशनी मे उसने अपनी पाई निधि को देखा।

इस समय पहुची सरोज ने हाल की जली रोशनी से सही अन्दाज लगाया कि लैला या बलराम या दोनो मकान मे है। वह बाहर से गेस्ट रूम की खिड़की की ओर बढी जो बाहर से खुलती है और जिसके द्वारा शायद पहले सरोज उस कमरे मे आ चुकी थी। यह कमरा अंधेरे में था।

सरोज के खिड़की खोलकर कमरे मे आ जाने के कुछ ही देर बाद सरोज ने उस कमरे की ओर आते लैला के हील्स की आवाज़ लकड़ी के फ्लोर पर सुनी। सरोज छिपकर खड़ी हो गई।

सरोज के पास कोई हथियार नही था। सरोज का उद्देश्य लैला से बात करना था। यदि लैला अकेली थी तो वह कुछ जोर-जबरदस्ती भी कर सकती थी। हृष्ट-पुष्ट सरोज मरियल लैला से आसानी से निपट सकती थी। लैला ने चलने के पूर्व अपने हाथ धोने या बाथरूम जाने की ज़रूरत पाई। वह गेस्ट रूम और उससे लगे बाथरूम को जानती थी। जयदयाल ने उसे यह दिखलाया था। और उसके उपयोग का निमन्त्रण दिया था। फिर ऊपर जयदयाल का कमरा रात सुलेखा बन्द कर गई थी।

उसने हाल की रोशनी से दूर दरवाज़े को खोला और कमरे मे घुसी। कुछ गलत था, क्या, वह पहचान न पाई। स्विच दबाने पर रोशनी न जली। इस कमरे की बिजली शाम से खराब थी। उसने झिझककर भय को अलग किया और बाथरूम के द्वार की ओर बढी।

क्या उसने सरोज की हल्की सास को सुना? उसने बाथरूम के अन्दर घुसकर दरवाजा बन्द किया। यहां भी बिजली खराब थी। अंधेरे में उसे डर

लगा। उसने हाथ धोये या फ्लश चलाया। उसे एकाएक ध्यान आया कि गलत क्या था। कमरे की खिड़की खुली थी। लैला उस तरफ की परिक्रमा लगा प्रायरी के पिछली ओर पहुंची थी। तब यह बन्द थी।

लैला ने हाथ मे अपना चाकू खोलकर लिया। फिर कुछ सोचकर हेरोइन के पैकेट को कोट की जेब से निकाल वही बाथरूम में छोड़ा।

यहा खून की आवश्यकता नही थी। लैला और सरोज में बातचीत होकर बात समाप्त हो सकती थी। सरोज को हेरोइन के पैकेट के बारे मे मालूम तक नही था। जिसके लिए ज़रूर लैला जान पर खेल जाने पर मजबूर हो सकती थी।

सरोज दरवाजे के पास अंधेरे मे खड़ी थी। लैला सम्मद संशकित जब उस कमरे में बढ आई, पीछे से सरोज ने उसे पुकारा या छुआ। लैला ने बिना सोचे जानवर की तरह घूमकर वार किया। इससे सरोज के बाये वक्ष पर चोट आई।

लैला का गला सरोज के हाथ आ गया था।

सरोज को लैला की जान लेने से मतलब नही था। सरोज के मोटे हाथ उसे दबाते ही गए। लैला और सरोज की यदि बातचीत हुई होती तो खून न होता और सरोज दूसरे दिन मुझे जयदयाल न मानती। लैला जब ढीली हुई, मर चुकी थी।

सरोज को लैला की जान से मतलब नही था, उसे लैला की तलाशी ज़रूर लेनी थी। सरोज उसे खीच या उठाकर, ड्राइंग रूम या हाल में लाई। उसे एक हीरो की थैली की तलाश थी। एक कैरट या उसके ऊपर के बेलजियम कट हीरे जो हर एक पच्चीस हज़ार से ऊपर के मूल्य के हों। कम से कम बारह शायद पच्चीस। बैग, कोट या कपड़ों मे उसे न मिला। सरोज ने लैला के सब कपड़े वगैरह और जूते उतारकर देखा होगा। कुछ नही !

ढाई बजे के करीब, पीछे के दरवाजे से आती ठण्ड से सरोज सिहरी होगी। उसके पास एक नगी लाश थी। जीवित लैला की तरह मृत लैला का उपयोग सरोज जयदयाल के खिलाफ कर सकती थी। यदि जयदयाल उन लोगों की आंखों मे धूल झोककर वसूली पा चुका था, तो एक तरह से यह हार विजय मे बदली जा सकती थी, क्योकि वह एक बार ऐसा कुछ कर चुकी थी। सरोज

ने लैला को बाहर लकडियों के टाल मे छिपाने का तय किया। लैला, नेपाली हीरा से भारी नही थी। सरोज को टाल के ऊपर से करीब चालीस लकड़ियां गिराकर वापस जमानी पडी होगी।

लैला का प्रायरी आना उसके जयदयाल के साथ षडयंत्र की पुष्टि करता था। सरोज ने माना होगा कि हीरे जयदयाल ने लैला से (बलराम के साथ) नौका-विहार मे जाने से पूर्व पा लिए थे। यदि बलराम ने उससे ताल पर हीरे छीने होते तो वह सीधे क्लब आती। प्रायरी मे छिपी लाश का कई तरह से उपयोग हो सकता था। हीरे जयदयाल के पास थे और उसे यह नही मालूम हो सकता था कि मरने के पहले लैला ने सरोज को हीरों की पूरी संख्या के बारे में नही बतला दिया था। क्योंकि सारे अवैध व्यापार का सवाल था। जयदयाल कितना भी न चाहकर लैला की लाश गुम करने मे मदद करता। लाश कुछ देर प्रायरी मे छुपी रह जाए, जैसे जयदयाल के प्रायरी लौट आने तक—तब लाश हटवाने की बात सरोज को शायद प्रस्तावित भी न करनी पड़ती।

तीन बजे, ज्यादा से ज्यादा साढे तीन बजे तक सरोज ने लैला को टाल में रख दिया था। उसने वापस जाकर गेस्ट रूम की खिडकी बन्द की, लैला के हाथ का छोटा चाकू उठाया। हो सकता है उसने गुसलखाने मे भी रोशनी जलाकर झांका हो। पर उसकी नज़र में हेरोइन का पैकेट नही पड़ा जो गुसल-खाने मे छिपाया हुआ था।

अब वह ऊपर अपने घाव को देखने जयदयाल के कमरे और गुसल की ओर चढ़ी। शाम मेरी तलाशी मे जयदयाल के कपड़ों से उसने जयदयाल की चाबी ले ली थी। मामूली घाव और खरोंच की दवा-पट्टी की। शायद गुसल के नल को चलाकर भी कुछ धोया। वहां तौलिये इस्तेमाल किए।

सरोज लौट गई। उसे एक-दो दिन ऊंचे गले के ब्लाउज ही पहनने थे। सब छिप गया था। जयदयाल वापस प्रायरी कल नही तो परसों लौट आने वाला था। जनवरी की ठड मे लाश तब तक छिपी रह सकती थी। उसने जयदयाल का कमरा वापस बन्द न किया।

उसे लैला के साथी बलराम की चिन्ता नही थी। लैला स्पष्टत. प्रायरी अकेली और जयदयाल की साठ-गाठ से आई थी। बलराम का उपयोग हो चुका था। वह फरार था या ताल मे था।

अगले दिन शाम को जब उसकी धारणा में अनायास जयदयाल का हाथ उसके वक्ष पर पड़ा तो उसके द्वारा वहा की पट्टी को पहचान पाना सरोज के लिए चिन्ता की बात नही थी। इस छोटे-से घाव या खरोंच की जयदयाल से बड़ी कीमत वसूल करनी थी। उसको लाश के बारे मे चिन्ता नही थी। उसका कुछ इंतजाम किया जा सकता था। जयदयाल की मृत्यु सिद्ध होने पर सरोज की चिन्ता बहुत बढ़ गयी।

सुलेखा ग्यारह बजे प्रायरी गई। उसने पीछे का टूटा शीशा देखा। जयदयाल के कमरे का खुला दरवाजा, भीगा बाथरूम का फर्श, गीला तौलिया। उसे भय हुआ कि मकान मे कोई है। कंघी मे भूरे बाल, सुबह के छूटे थे, जब लंच में लैला यहा आई थी। उसने परिस्थिति को दो तरह से बदला—उसने स्टोर रूम से कुछ निकाला और सदा दरवाजे बन्द करनेवाली सुलेखा उस दिन स्टोर का दरवाजा खुला छोड़ गई। दूसरा उसने अस्पताल से लक्ष्मण को वापस प्रायरी मे नही भेजा।

पहली तारीख की सुबह हमीरा की सिगरेटे समाप्त थी। जयदयाल से सिगरेट मिलती थी। वह अस्पताल मे सुलेखा के निरीक्षण में कैद था। लंच टाइम के बाद हीरा और हमीरा प्रायरी गईं। उनका इरादा हमीरा की सिगरेट चोरी करने का था।

इस बात का भी आधार है कि हमीरा को कुछ सिगरेटे मिलीं और उन्होंने गेस्ट रूम तथा राजाशाह के कमरे मे उन्हे पिया। उन कमरों में हशीश की मीठी बू थी।

धूप के उतर जाने पर, जब वे लोग जयदयाल के घर में पिकनिक समाप्त कर वापस जाने की सोच रहे थे, उन्हे गेस्ट हाउस के गुसलखाने में छिपा पैकेट मिल गया। हमीरा ने हेरोइन और उसके पैकट का मूल्य एकदम पहचान लिया।

दरवाजों पर सुनने वाली हमीरा शायद यह जानती थी कि इसके लिए जयदयाल टाल मे जगह इस्तेमाल करता था। वे दोनों बाहर गईं। टाल की छिपाने की जगह न केवल खाली थी वहां पर संगीन पिस्तौल भी रखी थी। हीरा और हमीरा का कथन है कि उन्होने कोई लाश नही देखी। मेरे ख्याल से उनकी झूठ पर्त के बाद पर्त उतरती है। उन्हे लाश का कुछ शक होगा। टाल

जल जाने पर यदि हेरोइन के बारे मे जयदयाल नही पूछेगा तो उन्हे विश्वास हुआ होगा कि लाश के जल जाने पर और भी मुख बन्द रहेंगे। खैर, हीरा और हमीरा ने टाल जलाने का निश्चय किया। उन्हे स्टोर का पता था, दरवाजा भाग्य से ही खुला मिला।

हमीरा हेरोइन का पैकेट ले आई। इसीके बल पर दोनों नेपाल लौटने को तैयार हो गईं।

# ६
# साक्षात्कार

मधु व्यू

### आठ बजे रात्रि

कमरा बड़े हीटर से गर्म था। निपट धुंध से ठंड से पहुंचे कुकरेती का स्वागत सरोज ने आत्मीयता से किया।

"एक ब्रैण्डी चलेगी ?"

"नही, मिसेज़ घोषल। ड्यूटी पर नही।"

"हम किसे बतलाने जा रहे है। और मत मानो इसे ड्यूटी।"

"नही ! डी०आई० जी० वैसे ही खफा है।"

"अच्छा ! काफी पी लो।"

सरोज खुद अन्दर काफी लेने चली गई। कुकरेती अपना ओवर कोट उतारकर बैठ गया। उसने बीच के टेबल के नीचे एक चपटा काला डिब्बा छिपा दिया।

सरोज काफी ट्रे में स्वयं लाई।

"आपके नौकर कहाँ हैं ?"

"नही है। क्यों हमसे अकेले में डर लगता है ?"

कुकरेती काफी चखकर बोला, "आप मानी नही। काफी में डाल दी।"

"तुम्हारी जरूरत और मजबूरी दोनो का इससे समाधान हो जाता है।" सरोज हंसने लगी।

थोड़ी देर मे सरोज ने कहा, "वह तीसमारखां मेजर तुम्हारे पीछे ही पड़ा है। उसकी इतनी डी०आई०जी० क्यो सुनते है ?"

कुकरेती ने प्याला मेज़ पर रखकर, अपनी कुढन का प्रदर्शन किया, "बड़े लोग आपस में एकदम मिल जाते हैं, और हम लोग कही के नही रह जाते। बड़े लोगो का केस उन्हीकी मर्ज़ी से वर्क-आउट होता है।"

' जमाल हसन बिलकुल अशोक माथुर का पिट्ठू हो गया है। ये सब बड़े अफसर रईसो को देख अपनी दुम हिलाने लगते हैं। पर जमाल एक बात नही जानता ?"

"क्या ?"

"यही की बलराम सुलेखा दयाल का पुराना यार है।"

आश्चर्य से कुकरेती के हाथ का प्याला खड़खड़ा गया।

"यह बाते औरतों की निगाहों से नही छिपती। दोनों के मुख पर साफ चमक रहा हे। सुलेखा जो मर्दो के स्पर्श से बिजली की झटके की तरह भागती है, उस दिन अस्पताल में उसके पलंग पर घुसकर बैठी हुई थी। हाथ छोड़ती ही नही थी। कभी ऐसा हमने सुलेखा को देखा नही है। आधी बोतल का नशा चढा हो जैसे।"

कुकरेती ने इस बात पर कुछ देर सोचकर सिर हिलाया, "उनका आपसी रिश्ता कुछ भी हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। वे लोग ताल और प्रायरी की दुघर्टनाओं मे नही फंसते।"

"मैं यह नही कह रही कि मेजर या सुलेखा खूनी है। ऐसे लोग खून खुद नही करते हैं, कराते है, या मनचाहे खून हो जाने पर असली खूनी को बचाकर इधर-उधर की बात बनाते है।"

कुकरेती ने पूर्ण समर्थन में सिर हिलाया।

सरोज ने उत्साहित हो कहा, "आपकी राय दोनों घटनाओं के बारे में बिलकुल दुरुस्त मालूम होती है। बेहोश होते ही जयदयाल को लैला सम्मद ने ताल मे जानबूझकर गिराया होगा। बड़े लोग नही चाहते कि जयदयाल की मृत्यु मे हत्या का लांछन आए तो हमीरा को फुसला दिया गया। यदि उन्होंने सच मे कोई डूबती हुई नाव देखी होती तो वे लोग अगले दिन राजाशाह को बतलाते। तीसरे-चौथे दिन तक क्यों रुके रहते ? इससे उनके बयान और उनकी सच्चाई दोनों पर शक होता है।"

कुकरेती ने कहा, "यही तो सरोज जी, हम कहते है। इन लोगों की बात कैसे एकदम मानी जा सकती है।"

सरोज का पल्ला गिर गया था, पर इस समय वह मोटी और मुख्य बातें सम्मुख रख रही थी।

"हीरा और हमीरा के झूठ बोलने का कारण है। वह हमसे पूछिये। दोनों का पत्ता कटने वाला था। राजाशाह तो उनसे ऊब ही चुका था। जयदयाल की चापलूसी कर बची हुई थी। तल्लीताल की आंखोदेखी घटना एक असली घटना को छिपाती है। हीरा और हमीरा को तल्लीताल से लौटती हुई लैला मिली होगी। लैला को छिपते हुए प्रायरी जाते इन लोगों ने देखा होगा। और अपने चोर स्वभाव से प्रेरित वह उसके पीछे हो ली होंगी।"

"प्रायरी मे इन लोगों ने चुपचाप देखा होगा कि लैला सम्मद टाल से हेरोइन का पैकेट निकाल रही है। हमीरा किसीसे कम नशाखोर नही है। आज हशीश पर है तो कल हेरोइन पर भी पहुँच सकती है। यह तय है कि हमीरा उस पैकट की कीमत जानती थी और उसे हथियाने को मचल गई होगी।"

कुकरेती के ध्यान को अपनी बातों से कुछ खिंचते देखकर सरोज ने उसके अनकहे प्रतिवाद का उत्तर दिया, "मैं मेजर बलराम की तरह कल्पनाएं नही सुझा रही हूं। एक प्रश्न था कि लाश उसी समय क्यो नही जलाई गई। इसका जैसा ठोस उत्तर हीरा-हमीरा के लिए है किसीके लिए नही है। कुकरेती साहब, हीरा-हमीरा की नौकरी रात्रि की है, और छुट्टी दिन की। वह रात को वहां रुककर लाश को टाल मे नही लगा सकती थी। उनको लाश को गेस्ट रूम मे छोड़ने की बरबस मजबूरी थी। पर दूसरे दिन-भर लाश को आराम से टाल मे सजा कर जलाने का समय था। वे लोग डेढ बजे तक भागती हुई मल्लीताल लौट सकती थी—राजाशाह की सेवा मे, क्लब से रिक्शा लेकर, समय पर पहुंचने।"

"सरोज देवी, मुझे अदालत मे केस प्रस्तुत करना है, मात्र संभावनाएं नहीं—कुछ चीज़ें जो खून को सिद्ध करे। फिर लैला के पास पिस्तौल थी वह भी पूरी तरह से लड़ी होगी। खून करना इतना आसान तो नही रहा होगा।"

"पुलिस वाले होकर आपके भोलेपन की बलिहारी। आप औरत को खून करते नही देख सकते। मै मानती हूं बाहर टाल के पास तो मुश्किल है। पर सोचिए यह दोनों गेस्ट रूम में छिपी हो। वहा अंधेरा था, बिजली खराब थी। लैला ने पैकेट निकालकर पिस्तौल उस जगह फेक दी होगी। वह चलने

के पहले हाथ-मुँह धोने, स्वस्थ होने अंदर आई होगी। वहां आसानी से दोनों उसे दबोचकर खत्म कर सकती थी।"

"कैसे ? पिस्तौल थी नही इनके पास। छुरे-चाकू से खून बहता, जिसको धोने मे कठिनाई होती।"

सरोज ने कुकरेती की मूर्खता से विवश अपने हाथ जोड़कर दिखलाए। "लैला के विरोध समाप्त होने के पूर्व ही उसकी गर्दन टूट गई होगी। हमीरा को आश्चर्य हुआ होगा एकाएक अपने पाश मे मुरदा लाश को पाकर।"

कुकरेती ने एकदम पूछा, "पर हीरा के अनुसार लैला ने उसी दिन एक भयंकर भोटिया चाकू खरीदा था। बैग से निकालकर लैला उसका वार कर सकती थी।"

सरोज हंसने लगी। "भयंकर भोटिया चाकू ! ठहरिये दिखलाती हूं।" उसने उठकर सजावट की अलमारी खोली और वहा से चाकुओ मे से एक चाकू उठाकर लाई। "वह भयंकर भोटिया चाकू इससे जरा छोटा था। इसकी पूरी चोट से भी जो बदन में घाव होगा वह किसी भी औरत को सहने या छिपाने मे कोई समस्या नही उत्पन्न करेगा। राजशाह उनको सेक्स में ज्यादा नोच डालता है।"

कुकरेती ने हाथ ऊपर उठाकर कहा, "बात वही पर लौट आती है। माना कि वे लोग खून कर सकती थी। माना वे लोग लौटकर लाश जला सकती थी। यह हम सिद्ध कैसे करते हैं, मेरी यह समस्या है।"

"हां, यह समस्या तो है। लाश जलकर स्वाहा हो गई है।"

कुकरेती ने कहा, "हरिद्वार में अस्थि-विसर्जन के घाट पर चांडाल लोग गंगा मे डुबकी लगाकर तल की रेत को टोकरियों में छानकर सोने के टुकड़े खोज लेते है। पुलिस प्रायरी की चिता की राख भी छानती रहेगी। वहा शव होना तो करीब-करीब सिद्ध हो ही चुका है। पर क्या आपकी राय मे खूनी ने लैला का हैड बैग, कपड़े, गहने सब चिता को समर्पित कर दिये थे ? इनके अवशेष नही पहचाने गए अभी तक ?"

"यह तो आप मान सकते है कि इन लोगो ने सब कुछ चिता मे नही फेंका होगा। उसने गहने के नाम पर धातु की बनी चेन पहन रखी थी, एक ब्रेसलेट भी याद आता है। बैग मे आपके भयंकर भोटिया चाकू के अलावा काफी जल न

सकने वाला अटरम-सटरम होता है। जूते तो लैला के पतले थे। पर इससे हीरा और हमीरा पर क्या कठिनाई बढी। वे लोग अपने साथ एक लैला का बैग, चेन, ब्रैसलेट डालकर ले आई होंगी।"

"और हेरोइन का पैकेट ?"

"हा। पर वह तो उन्होने आपको समर्पण कर दिया है।"

सरोज ने सवाल आसान लहजे से किया था। वह उसकी तरफ नही देख रही थी। पर कुकरेती ने अनुभव किया कि सरोज पूरे मनोयोग से उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रही है।

कुकरेती ने दांव लगा देने का निश्चय किया "मेजर और उनके कारण डी० आई० जी० हेरोइन के समर्पण से यह मानने को तैयार है कि 'चिता' में आग हीरा और हमीरा ने लगाई होगी। इसके आगे सबूत मांगते है। कुछ ऐसा जो खून से उनका सीधा संबंध बैठा सके !"

सरोज ने पूछा, "बलराम ऐसी इनायत क्यों हीरा और हमीरा पर करते है ? आखिर इससे राजाशाह या मैं ही तो बचती हूं।"

"बलराम का कहना है कि खून मुख्य रकम के लिए हुआ जो तीन लाख से ऊपर की थी। बीस हजार की हेरोइन के लिए नही। वह कहता है हीरा-हमीरा चोर हो सकती है, डकैत नही। राजाशाह मानते हैं उन्हें बड़ी रकम का कोई पता नही था। वगैरह-वगैरह। केस भंवर में पड़ गया है जो ठोस सबूत से ही आगे खुल सकता है।"

सरोज चुप थी। उसका हाथ आदत मे बायें उरोज की ओर उठा पर वापस गिर गया।

"मुख्य रकम तो लैला की पास थी ही नही, कुकरेती जी !"

"आपका मतलब वह रकम लाने वाली नही थी ?"

"नही, नही। मेरा मतलब, जयदयाल ने वह लैला से पहले ही लेली थी। सच तो यह है।"

कुकरेती ने अपने सबसे लाचार ढंग से फिर सबूत की बात दुहराई।

सरोज ने कहा, "आपको खोज जारी रखनी पड़ेगी। मैं उन लड़कियों को जानती हूं। वे लैला के बैग और अन्य अवशेषों का भी फायदा उठायेंगी। उन्होंने वह सब ताल मे या कही और फेंका नही लगता।"

कुकरेती की धड़कन बढ गई। उसने सरोज को उत्तर की ओर घेरते कहा, "लिलि काटेज के कोने-कोने की तलाशी हो गई है।"

"लिलि काटेज में छिपाने का सवाल ही नही उठता। छिपाने का उद्देश्य उससे किसीपर धमकी वन सकना हो सकता है। इसके लिए कोई सुरक्षित प्रायरी मे ही जगह सवसे उपयुक्त होगी। याद कीजिए, उन लोगों की तो तव यही धारणा हो सकती थी कि जयदयाल अस्पताल मे है। जयदयाल से सुलभ और अमीर शिकार कौन हो सकता है, इस चक्कर मे उलझाने के लिए।"

"आपका मतलब जयदयाल के कमरे मे खून के सवूत छिपे है ?"

"मैं सोचती हूं वहा होने की वहुत सभावना है।"

सरोज कुकरेती की ओर देख रही थी। उसके चेहरे पर होते परिवर्तनो से वह चकराई। वौड़म, ग्रामीण, शिष्य भाव गायव हो गया था। कुकरेती की उसपर ठहरी आखे किसी भी आत्मीयता से दूर थी। यदि उनमे उसके लिए कुछ था, तो जरा-सी दया।

सरोज घवराहट मे फिसलने लगी। कुकरेती के कहा, "मिसेज गोपाल, मै आपको लैला सम्मद के खून के जुर्म मे गिरफ्तार करता हूं।"

उस रात पीछे के खुले दरवाजे से ठंड आ रही थी। लैला सम्मद के मृत शरीर के ऊपर झुकी सरोज को सिहरन लगी थी। उससे भी तीव्र और वर-फीली ठंड उसे घेर गई।

कुकरेती ने वाहर का दरवाजा खोलकर पुकारा। एक स्त्री और एक पुरुप कास्टेवल अन्दर आए। उसने कहा, "आप चलने के लिए तैयार हो जाएं। आप चाहे तो राजाशाह को फोन कर ले।"

"तो राजाशाह यही है। शुरू से ही पडयंत्र था।"

कुकरेती ने कुछ नही कहा। उसने झुककर मेज़ के नीचे से टेप रिकार्डर निकालकर वन्द किया और ओवर कोट मे रख लिया।

वह अपनी जगह से उठी नही। उसने राजाशाह को सूचना दे देने की कांस्टेवल से प्रार्थना की।

"यह स्टंट करने के लिए आपके पास क्या सवूत है ?"

"जो सव आपने अभी दे दिया है। आप हीरा और हमीरा की नही, अपनी

परिस्थिति के वारे में वतला रही थी। आपकी कल्पना इतनी कुशल इसलिए थी, क्योकि वह कल्पना थी ही नही।"

"इस टेप रिकार्ड से आपको क्या मिलेगा ?"

"मिसेज घोपाल, लैला और हीरा बोट हाउस क्लव साथ आई थी। लैला ने पार्टी मे आने के पूर्व वह भोटिया चाकू खरीदा था। उसे देखने का आपको कभी अवसर नही मिला। आप उससे परिचित कैसे है ?"

"चाकू से छोटा-सा घाव बायी छाती पर आपने खाया था। इसे पहली की शाम बलराम ने अनायास टटोल लिया था। इस घाव को उड़ा देना इतना आसान न होगा।"

"जव आप अस्पताल से कलव पहुची थी तब हीरा और हमीरा डेक पर डांस कर रही थी। उन्होंने आपकी गतिविधि देखी। आपने उन्हे लक्ष्य नही किया। उनको वहा पार्टी की जान होने के कारण वीसों लोगों ने देखा। वह सवा-दो के पहले वहां से नही चली और जैसा आप कहती है रात्रि सेवा के लिए समय पर उपस्थित हो गई। उनका लैला के पीछे जाना असंभव था।"

"उस रात्रि सुलेखा दोनो, अपने और जयदयाल के, कमरे को ताला लगा-कर आई थी। उसे दूसरे दिन किसीके मकान मे होने का शक जयदयाल के दरवाजे के खुले होने के कारण ही हुआ। जयदयाल की चाभी कोट के साथ वलराम के पास आई। नाथ के हमले के वाद जयदयाल के कपडों को आपने और राजाशाह ने टटोला था तभी आपके पास वह चाभी आई।"

"रात्रि को आपके सिवा कोई जयदयाल के कमरे मे न जा सकता था, न वहां कुछ छिपा सकता था, क्योंकि वह सुलेखा के कमरे की तरह वन्द था। फिर भी कोई गया। किसीने गुसलखाना इस्तेमाल किया।"

"लैला के पास मुख्य रकम नही थी, यह आप आश्वासन से कहती है, क्योकि आप स्वयं उसकी तलाशी ले चुकी थी।"

"आपको कैसे मालूम कि गेस्ट रूम मे बिजली खराव है। यह खरावी तो आप लोगों के लच के वाद हुई। आपको कैसे उस कमरे के अंधेरे मे होने का मालूम है, यदि उस अंधेरे मे आपने खून नही किया था ?"

कुकरेती चुप हो गया। वह खड़े-खड़े सरोज के आपस मे जकड़े हाथो को देख रहा था।

"क्या इस सबमे कुछ भी ऐसा ठोस सबूत है जो अदालत मे मुझे अपराधी सिद्ध करा दे ?"

"मैं इतना जानता हूं कि मैं इन सबसे आपको नि.संशय दोषी मानता हूं। गिरफ्तारी करने के लिए यह काफी है। तहकीकात का अन्त नही है। सबूत और मिलेंगे—लोग सच बोलेंगे।"

"तुम्हारा मतलब राजाशाह से है ?"

"नही ! मेरा मतलब स्वयं आपसे है। हवालात के फीके लम्बे घंटे इस सारे संचय से विलग आप सह न पाएंगी।"

एकाएक सारे संयम को छोड़, क्रोध से मुख बिगाड़ सरोज ने कुकरेती को गाली दी। शाम-भर थाने मे हीरा और हमीरा ने फरेबी कुमाउनी को यही गाली सुनाई थी। पर उसके साथ जो घृणा थूकी गई, वह सरोज की अपनी विशिष्ट थी।

## हरिद्वार

बरेली से मुरादाबाद, जहां दयाल परिवार की पुरानी कोठी थी, और जहां से वे लोग रईस बने थे, फिर करीब चालीस की मंडली में हरिद्वार। सुलेखा पर पूरी नज़रबन्दी थी। चार बड़ी ननदों का पहरा था। और ताऊ तथा मामा नेपथ्य में खांसते रहते थे। पर निष्प्राण रहना कोई समस्या नहीं थी।

सबेरे सब लोग कनखल घाट जाते थे। वहां गंगा-स्नान, पिण्डदान, लम्बी पूजा, पीपल को जलदान इत्यादि होता। गंगा की धार तेज़ और असह्य ठंडी थी। स्त्रियो मे वही एक, रोज़ डुबकियां लेती थी। धार के जल मे डूबना और फिर निकलना देह को ही नही मन को भी एक नया जीवन देता।

वह पहली कार मे ही सीधे लौट आती। ननदें बाज़ार करने रुक जाती थीं। कनखल मे सब्जी शायद सस्ती मिलती थी।

दिन मे कुछ देर गरुड़ पुराण का पाठ होता। भयावह यममार्ग का वर्णन। वैतरणी के तट पर शाल्मलि वृक्ष पर आत्माओं का पहुंचना। पार

ले जाने वाले मल्लाह पूछते है; व्यंग में, पार जाना चाहते हो क्यों ? कैसा कर्म है तुम्हारा ? निरुत्तर आत्माएं नदी में फेंक दी जाती है या वह चौदह पड़ाव वाली यात्रा जिसमें देह जलाया, बींधा, ठिठुराया और सताया जाता है ।

बाकी दिन अकेले बिता सकने की सहूलियत थी। धर्मशाला की सबसे ऊपर वाली मंज़िल पर उसका कमरा, एक जंगला-लगा बरामदा था। ऊंचाई से गंगा और पुराना शहर दूर-दूर तक दीखता।धीरे-धीरे राख और बहते जल का यह नगर उसे भाने लगा सब कुछ सरल था। बैठना चाहो तो चटाई, सुनना चाहो तो धार का खिसकता स्वर, या धार पर धार का गिरता हुआ विवाद, देखना चाहो तो पर्वत-आकृतिया । उसके अनबूझे प्रश्न कहीं रहस्यमय उत्तरो से शान्त हो जाते ।

जयदयाल में भी कुछ जयदयाल होने से मुक्ति चाहता होगा। उसी छटपटाहट से जो वह जानती थी। बलराम ने ताल से देह निकालने मे कुछ करुणा की प्रेरणा से किया था। गहराई से उबरना, एक चिता का जलना उसके लिए अर्थवान घटनाएं हो गए।

उसके मन मे गंभीर शोक था। पर शायद जयदयाल के लिए बहुत कम भाग मे ।

ग्यारहवें दिन उसकी यह वैराग्य-यात्रा कई कारणों से समाप्त हुई। निचली बैठक मे राजाशाह बैठा था। सुलेखा ने लक्ष्य किया कि उसकी मूंछों मे कुछ सफेद बाल चमक रहे थे। राजाशाह खड़ा हुआ। सुलेखा अपनी अंगरक्षकों में सुरक्षित ऊपर चली गई।

शाम को गरजती लाल रंग की गाड़ी मे माथुर-परिवार के प्रतिनिधिस्वरूप वेबी पहुंचा। थोड़ी देर अपनी भोली धृष्टताओं से नीचे सबको मोहित कर वह चार मंज़िल सीढ़ियां दौड़ता उसके पास आ धमका।

वेबी को उसपर कोई छाया नही दीखी, या न देखना उसकी नीति थी।

"अशोक हद करता है। उसकी तरह सबके पास चन्द्रन तो है नही। मुझसे कहा गया कि बलि का बकरा मैं चुना गया हूं। बस। मैं चण्डीगढ़ से सीधा नैनीताल पहुंच गया। अब नैनीताल से आ रहा हू। हद है।"

"गाड़ी कहा मिली ?"

चेहरे के क्रोध को मिटाती मुस्कराहट से वेवी ने कहा, "दिल्ली जाकर 'माथुर एक्सपोर्ट' से हथिया ली। बिलकुल जूम है।"

"झूठा। तब तू जानकर नैनीताल गया होगा।" वेवी हंसने लगा।

"तुम बदली नही लेखा। ऐसा काला चेहरा कर रखा है। मुझे एक मिनट शक हो गया था।"

थोडी देर वेवी अपने पागल ढग से बडबड़ाता रहा। "मैं नीचे जाता हू, दयाल वोर्ड आफ डाइरेक्टर्स से कुछ जरूरी सौदा पक्का करना है, जो श्री अशोक माथुर सदा की तरह अधूरा छोड़ गये। फिर लौटूगा।"

बेबी लौटा नौ बजे बाद। आते ही सीधे लेट गया।

"वाप रे वाप। अगर कोई नादिर शाह या वलवन भी इन चारों बहिनों का हरम पा जाता तो ये उसे ठिकाने लगा देती। इनके पति तो दीखते ही नही, अच्छे कर्मचारियों की तरह।"

"क्यो क्या हुआ!"

"कुछ नही। सिर्फ इन लोगों ने इन ग्यारह दिनो मे चक्रवृद्धि व्याज लगाना सीख लिया है। नही, लेखा तुम्हे कोई राय यहा नही देनी है। वरेली से तुम मेरे साथ बम्बई चल रही हो और बस। इन लोगो से वात पक्की हो गई है।"

सुलेखा अपने जमीन पर बिछे विस्तर पर चुप लेटी रही।

"बेबी, अशोक चाहता है अब तुम एयरफोर्स छोड़कर उसके साथ आ जाओ।"

"वह ज़रा ज्यादा चाहना छोड़ दें। अपनी मर्जी की वात भी दूसरो की मर्जी पर करनी कठिन होती है। मिग्स को जितनी बार वह खिलौने कहता है मेरे सहयोग की प्राप्ति उतनी ही दूर करता है।"

"खाना खा लिया ?"

"हा, हा। वाद मे चारो ने घेर कर परोसा।"

"नैनीताल मे कहा रुके थे ?"

"रायल खुला था। चार्ल्स और वेटिना तुझे याद कर रहे थे।"

सुलेखा ने अपने से पूछा, मेरी सांस रुकती-सी क्यों है ?

"मेजर बलराम मिले थे। उसी दिन गए। बहुत चुप रहता है, पर उस आदमी मे स्वाभाविक अधिकार है।"

चुप रहने की सफलता सिद्ध थी। वह चुप रही।

"अशोक ने मुझसे कहा था, उनसे धन्यवाद वगैरा करना। पर मुझसे हो न सका। चार दिन के तेज बुखार से, हा, तुम्हे नही मालूम तैराकी दुस्साहस की रात से ही उसे तेज बुखार हो गया था—पर घबराओ मत वहां तीमारदारो की कमी नही थी। चार्ल्स-वेटिना तो थे ही। पर पुलिस इन्सपेक्टर कुकरेती अपने को अर्दली तैनात किए था। और वह दो स्वीट नेपालिने। इतनी देख-रेख के लिए मैं भी बीमार पड सकता हू।"

"हीरा और हमीरा अभी तक नेपाल नही गई ?" सुलेखा विवश पूछ बैठी।

वेवी हसने लगा। पर सुलेखा उनके लिए अमंगल कामनाए करती रही। मरीज की बुखार में खतरनाक कमजोरिया थी।

"बलराम के बारे मे एक बात है, लेखा। वही चक्रवृद्धि ब्याज सिद्धान्त जो उसमे उलटा मूल को घटाता रहता है। मेरे पहुचने तक उसने अपना उपकार बिलकुल भुला दिया था। धन्यवाद कहना ओछा लगता। हम युद्ध-सिद्धान्तो पर बहस करते रहे।"

सुलेखा अपने हाथ की खाली उगलिया देख रही थी। जो अधिकार ले नही, उसपर अधिकार पाया कैसे जा सकता है।

सुलेखा ने प्रतिवाद प्रारम्भ किया, "मै वहां नही थी इस लिए मेजर साहब नैनीताल मे धाकड़ जासूस की प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। उनकी सारी खोजबीन बिलकुल गलत थी। लम्बी-लम्बी बाते एक बात है, और सच दूसरी।"

"क्या तुम्हारी राय मे सरोज घोषाल खूनी नही थी ?"

"उसको बतलाने मे क्या बड़ी बात थी। वह तो मेजर साहब ने उसकी छाती टटोलकर पता लगा लिया था। न मेजर न डी० आई० जी० यह मालूम कर सके कि हीरे कहा गए ?"

"तुझे मालूम है कहा है ?"

"हां ! मेजर बलराम के पास।"

बेबी तख्त से करीब-करीब गिर गया। अब सुलेखा की हंसने की बारी थी। "उस बुद्ध को नही मालूम। उसके पास पांच लाख की कीमत के हीरे है।"

सुलेखा ने सुनाया।

जब कार से नाथ और लैला सम्मद उतरे तो सबने मान लिया कि हीरे लाने वाली लैला सम्मद है। वह अरबी थी, बेरुत से आई थी। और अलिफ के अवैध व्यापार के उपयुक्त लगती थी।

उस रात पार्टी के पूर्व मेरा और जयदयाल का झगड़ा हुआ था। उसने हीरे पाने के लिए डालर का फटा हुआ टुकडा मेरे द्वारा बरेली से मंगवाया था। फैन्सी ड्रेस पार्टी की गलत सूचना देकर मूंछे मंगवाने के बहाने, क्योंकि उसी डिब्बे मे डालर रहते थे। मैं जयदयाल का मन्तव्य समझ गई और डालर का टुकडा मैंने अपने पास रखा। जयदयाल उसे माग सकता था पर हीरे मेरे हाथ में लाकर देने की शर्त पर, मेरे ऋण को वापस करने के आश्वासन पर।

जयदयाल अपनी आदतो से मजबूर लैला पर डोरे डालने लगा। कुछ इन हरकतो से चिढकर नाथ ने डास के लिए मुझसे कहा। फ्लोर पर साधारण बातचीत मे नाथ के एयर फोर्स में होने की कलई खुल गई। मैंने पूछा, वह कहां नियुक्त है। उसका उत्तर था चण्डीगढ़ के पन्द्रहवे बाम्बर स्क्वाड्रन में। मैंने पूछा, क्या अब भी वाइस चीफ, नारायनन ही स्टेशन कमान्डर है ? नाथ ने हामी भरी। वाइस चीफ नारायनन की विदाई पार्टी का तूने दो महीने पहले लिखा था। उसे मिग्स के टेस्ट पाइलट माथुर का पता नही था। नाथ टूट गया। मुझे और बाते याद आईं। यह स्क्वाड्रन लीडर होकर दिल्ली मे 'सेण्ट्रल विस्टा' की जगह 'जनपथ' मे क्यों रुका था ? और फिर याद आया कि नाथ ने लैला को नैनीताल आमन्त्रित किया था। दूसरा नाच प्रारम्भ हुआ। नाथ ज्यादा पास होकर नाचने की कोशिश कर रहा था। मैं उसे फ्लोर से बाहरी घेरे पर ले गई। उस क्रोध मे पूछना सरल था ? "हीरे लाये हो।" उसने हामी मे सिर हिलाया और मेरे पास आकर बेत की कुर्सी मे बैठ गया। नोट के दोनो टुकड़ों का मिलान कर उसने एक छोटी-सी चमड़े की थैली मेरे हवाले की। क्योंकि

उसे मेरे हीरे मांगने पर कुछ आश्चर्य था, मैंने उसे हीरे की थैली लौटाई और कहा वह यही बैठा रहे और मै मशविरा करके आती हूँ।

अपने नोट का टुकड़ा वापस लेकर मैं पार्टी की वजाय क्लोक रूम गई और वहां अपने बैग में पड़े एक अन्य डालर को उसी आकार मे फाड़ डाला जिसमे पहचान का डालर फटा था। थोड़ी देर मे आकर मैंने नाथ को सब कुछ ठीक होने की सूचना दी। डालर का टुकड़ा दुबारा देकर हीरे की थैली ले ली।

नाथ ने पीना अपना काम समाप्त होने के बाद प्रारम्भ किया। वह लैला को लेकर डास के लिए उठा। थोड़ी देर बाद जयदयाल ने मुझसे डालर का टुकड़ा मागा। और मैंने उसको अपना बनाया टुकड़ा दे दिया।

उस रात्रि ताल पर यदि कुछ खोया तो वह नकली डालर का टुकड़ा, जिसके बूते पर जयदयाल लैला से हीरे मांग रहा होगा और लैला चकराई हुई पर हेरोइन पाने को लालयित उसे सच वतलाने में अनाकानी कर रही होगी।

"पर सुलेखा, तुमने हीरे छिपाए कहा? राजाशाह और सरोज तलाश नही कर पाए थे।"

"तुझे मेरा चांदी का शीशा याद है। उसके पीछे का हिस्सा खुल जाता है। अजीब वात है, हीरों की खोज में जयदयाल यह मुझसे माग ले गया था। पर बलराम के हाथ उसने मुझे हाथ में आए हीरे लौटा दिए और उन्हे खोजने ताल पर चला गया। बलराम ने जयदयाल के भेष मे आकर सर्वप्रथम मुझे अपना शीशा लौटाया।"

बेवी ने हिचककर पूछा, "तुम्हे नाथ के नैनीताल से चले जाने की जल्दी रही होगी।"

"यदि वेवकूफ बनकर जयदयाल लौट आता तो उसपर प्रकट ही करना पड़ता। पर फिर वह मुझसे वहाने वनाकर मेरे भुगतान से नही वच सकता था—यह सच है कि मैंने नाथ के जाने तक बलराम को प्रकट नही किया। नाथ को बलराम पर हमले की माफी भी कुछ इस कारण दी। पर फिर हीरों का वह मूल्य नही रह गया।"

सुलेखा ने सोचा। बलराम को अप्रकट मे हीरे दे देने के क्या अर्थ थे मेरे लिए। अपने लिए हीरों की अवहेलना सिद्ध करना? या वलराम और साथ में

हीरों को फिर पाने के बारे मे आश्वासन ? या दोनों साथ पाने या खोने के लिए बाजी या उसे न पा सकने पर हीरों को पत्थर के टुकड़े मानने वाला हृदय ?

दोनो काफी देर तक अपने-अपने विचार सोचते रहे। बाहर अंधकार था और बहती हुई धारा की निरन्तर ध्वनि।

वेवी ने कहा, "लेखा, तुम्हे जयदयाल की सम्पत्ति से कितना चाहिए ?"

"एक पैसा भी नही। तुम जानते हो।"

"जयदयाल का उत्तराधिकार उत्तराखण्ड टिम्बर ट्रेडिंग कंपनी में आधा हिस्सा है। यह कम्पनी वर्षों में थोडा मुनाफा करती रही है। अब 'हरी राह' बन्द होने पर फिर उसी स्थिति पर आ जाएगी। फिर तुम्हारा तीन लाख ठेठ ऋण है। यदि तुम्हें पूरा हिस्सा मिल जाता तो पाच लाख से ऊपर ही मिलता। तुम्हारी ननदे हिस्सा चाहती है, और राजाशाह ऋण लौटाने मे मुहलत। मान लो, हम दोनो बाते मान ले। इसकी ऐवज मे तुम्हारे पास जो हीरे हैं उसपर तुम्हारे पूर्ण कानूनी अधिकार (इन लोगो के विना जाने) भी किए जा सकते है। और इन सबसे सम्पूर्ण मुक्ति सदा के लिए। तुरन्त।"

"मंजूर है।"

"मैं कल अशोक को फोन कर पूछ लूगा।"

वेवी उस रात अपने मन मे एक प्रश्न सुलेखा से पूछता रहा। चीखते मिग्स को उनकी क्षमता से दो कदम आगे ले जाना। मैं तो यही करता हूं। हम दोनों मे दुस्साहसी हृदय किसका है ?

## दिल्ली

फ्रंटियर सर्विस के लिए इन्टरव्यू भी और इन्टरव्यूज की तरह ही था। कुछ प्रश्न, कुछ उत्तर। प्रश्न किस तरह उसकी योग्यता या अयोग्यता प्रकट कर सकते थे—उसे ठीक समझ मे नही आता। अपने उत्तरो मे हाजिर जवाबी की कमी सदा कचोटती रहती। पर इस साक्षात्कार के बाद, बार-बार पूछे गए प्रश्न और दिए उत्तर कल्पना मे उमड़कर उसे सताते। कभी स्मृति

उनमे यहां-वहा कुटिल परिवर्तन कर देती, जिनसे वह नौकरी के लिए साक्षात्कार किसी और गंभीर चुनाव-परीक्षा की तरह अनुभव होता।

पहली वात तो वह चक्राकार, एक मंजिली इमारत थी। धौलपुर हाउस, यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन। चक्राकार होने मे क्या व्यंजना थी जो न मन से छूटती, न पहचानी जाती।

"आपको मालूम है कि इस सर्विस मे नियुक्ति के मतलब होगे जीवन-भर वीहड़ और अकेले में जीवन-निर्वाह ?"

"मुझे इससे कोई विशप चिन्ता नही है।" नीफा की सुदूर चौकी में भी कितना वीहड़ और अकेलापन होगा—उसके दिल्ली में जीवन से भी ज्यादा ?

"आप विवाहित है ?"

"अव नही हूं।" आनन्दा के पिता का पत्र उसकी जेव में था—सोलह तारीख को तलाक होने का आर्डर मिल जाएगा। हम लोग कोई मासिक खर्चा नही माग रहे है—एक तो तुम्हारे लिए देना कठिन होगा। दूसरे आनन्दा के होने वाले पति नही चाहते। मैं आज रात्रि के विमान से लंदन वापस जा रहा हूं।

यहा पर पहुंच चेयरमैन अपनी आंखों से चश्मा अलग कर देता है। "पर परिस्थिति तो फिर वदल सकती है ?"

सुलेखा के संदर्भ को पूरा कुरेदने पर निर्णायक जैसे तुला हो। उसकी धृष्टता से वलराम कोई उपाय नही कर पाता।

"हां !"

तीखी आंखे उसकी ओर अटल रहती है।

वलराम कहता है। "मेरा जीवन वही हो सकता है जो हो सकता है।"

पर यदि जीवन वदलता नही, तो वह नौकरी क्यो चाह रहा है ? अपने को अगले प्रतिवाद से वचाने वलराम जोड़ता है, "मैं उदासीन नहीं कुछ झिझकता हूं।"

चेयरमैन, वात यही छोड़ देता है, और नही भी। वलराम पर यह स्पष्ट होता है कि उसका कथन, उत्तर नही है। एक प्रश्न है उत्तर देने के लिए।

इन्टरव्यू बोर्ड में दाहिनी ओर वैठे सरदार साहव पूछते है, "युद्ध विज्ञान

आपका मुख्य पठन विषय रहा है ? आप लिखते भी रहे हैं ?"

"हां !" वह सरदार साहब की टाई नही पहचान पा रहा है। किसी रेजिमेंट या क्रिकेट क्लब की है।

"क्या आप मानते है कि आखिरी मीमांसा में युद्ध का निर्णय राइफल और उसके पीछे बैठी विजय-लालसा से होता है ?"

"एक स्तर पर यह सच है ।"

"इसके अलावा युद्ध के स्तर है ?"

"सेनापति का स्तर। कहां, कब और किससे सामना किया जाए। युद्ध-परिस्थिति चुनी और भोगी जाती है। युद्ध इस स्तर पर भी जीते और हारे गए है।"

सरदार के लिए यही उत्तर काफी था। पर बलराम बोलता जाता है। "फिर युद्ध-उद्देश्यों का स्तर है। लडाइयां जीतकर भी युद्ध हारे जाते हैं। गलत राष्ट्र-नीतियों पर जीते युद्ध पराजय से महंगी विजय देते है। दुस्साहस सब कुछ है, और कुछ भी नही। वह कहां समर्पित है यह भी उतना ही निर्णायक है।"

अपने उत्तर की सम्पूर्णता से प्रसन्न बलराम, एकाएक उदास हो जाता है।

सरदार साहब की टाई वही थी जो कैप्टेन कालरा पहना करता था।

"कहा जाता है, भारतीय लड़ना जानते है पर जीतना नहीं ?"

"यह सच भी है और निपट झूठ भी। यह भारतीय सेना से निकाला गया भारतीय स्वभाव पर निष्कर्ष लगता है। पिछले सौ साल में भारतीय सेना को सिर्फ लडने का अवसर मिला, सेनापतित्व का नही। हमने सिर्फ शौर्य सिद्ध किया, क्योंकि कुछ और सिद्ध कैसे करते ? फिर सेना के अनुभव से भारतीय स्वभाव का सच निश्चित करना, या भारतीय स्वभाव की विजय-उदासीनता को भारतीय सेना की योग्यता पर लागू करना खतरनाक है।"

बोर्ड मे किसीने आगे न पूछा था। पर बलराम के सामने एक प्रश्न उपस्थित कर दिया गया था। क्या वह स्वयं सेनापतित्व से कतराता रहा है ? कहां, कब और किससे सामना किया जाए ? क्या वह सिर्फ रायफल-स्तर पर विजय-पराजय मानता रहा है ?

बोर्ड पर डिफेंस मिनिस्टरी का प्रतिनिधि प्रश्न पूछता है, "चौथी

कुमाऊं ? क्या आप तावा नदी की लड़ाई के हीरो दाजू बलराम है ?"

बलराम चुप रहता है। क्योंकि 'हा' और 'ना' मे स्वयं कभी निश्चय नही कर पाता है। वह काले-सफेद खिचड़ी बालों वाला व्यक्ति फिर पूछता है, "दाजू बलराम था न नाम ?"

"हा"

चेयरमैन पूछते है, "उसके बाद कोई अन्य विजय ?"

बलराम प्रश्न समझ नहीं पाता। "फिर युद्ध-विराम हो गया। बाद मे, मैं सेना मे न रहा।"

एक घुटन मे बलराम पीड़ित फिर कहना चाहता है। "आपको विश्वास क्यो नही। युद्ध समाप्त हो गया था। मै सेना मे नही रहा। विजय का प्रश्न ही नही उठता।"

फिर पराजय का प्रश्न क्यों उठता रहा ? प्रश्न ही नहीं। पराजय होती क्यों रही ? यह आरोप की तरह मेरा भाग्य मुझपर सुनाना, अन्याय है। मैं मामूली, औसत, कुछ उदासीन—सदा था। न बाहर, न भीतर से बहुत प्रेरित। मुझमें मांग कम थी, अपने से, दूसरो से। मुझे तौलने में इतना ऊपर और नीचे होना ही नही चाहिए था। जैसा भारी चौथी कुमाऊं ने किया, जैसा हल्का आनन्दा की महत्त्वाकांक्षा ने पाया। मैं चुपचाप विश्व देख गुजर नही सका। मैं छुटकारा चाहता था। मैने सत्य मे दूसरों को बाध्य कर, प्रकट मे, उनसे कठोर भाग्य पाया। सेना से बर्खास्तगी, आनन्दा से तलाक।

अकेले और बीहड से कभी जी नही घबराया। संबंध सदा विघटित हो गए।

प्रश्न के उत्तर की खोज तक कौन ठहरने देता है। बोर्ड अगला प्रश्न सुना देता है सदा।

"आपने बहुत-से युद्धों और लड़ाइयो का अध्ययन किया है, अब आगे किसका करेगे ?"

"महाभारत !"

चेयरमैन, एक-दो मेम्बर हसने लगते है। आखिर हमारे अतीत की सबसे बड़ी लड़ाई है।

उस रात बलराम ने स्वप्न देखा। वह चौरंगी, कलकत्ता में है। सड़कों पर धुंध उमडा है। एक जौहरी की दुकान मे वह अंगूठिया देख रहा है। सुलेखा के दुबले हाथ के एक अंगूठी लेनी है। उसे, इनमे से कौन-सी पसन्द आएगी। वह सोच रहा है। आखिर मे तय करता है कि उसके गोरे संगमरमर रूप के लिए लाल मानिक-जडित अंगूठी उपयुक्त होगी।

जिस दिन फ्रंटियर सर्विस के सफल उम्मीदवारों की सूची मे उसने अपना नाम पाया, बलराम ने चौरंगी वाले स्वप्न को याद कर सुलेखा को बम्बई एक रूबी-जड़ी अंगूठी भेज दी।

मध्य फरवरी के उस दिन जब सवेरे छह बजे उसके फ्लैट के बाहर की घंटी बजी तो उसने सोचा कि आज दूध वाला सबसे बाद की बजाय उसे सबसे पहले दूध देने आ गया है। दरवाजा खोलने पर बाहर सुलेखा को खड़ी पाकर वह उसे देखते ही रह गया।

उसने कहा, "आओ।" सुलेखा कही और आने की जगह, जैसा उसे मालूम था, उसके हृदय आ लगी।

सुलेखा की जकड़ ढीली पड़ने पर बलराम से पूछा गया, "लौटाओगे तो नही ?"

"अन्दर तो चलो।"

सुलेखा देहरी के बाहर ही उसका वचन चाहती थी। बलराम ने वचन दे दिया।

बहुत देर बाद, सिर्फ एक अंगूठी पहने, बिलकुल प्रसन्न, सुलेखा ने कहा, "निर्लज्ज और प्रसन्न होना तुम्हे भी मेरी तरह सीखना पड़ेगा ?"

"यह साधना कैसे होती है ?"

"एक चिता जलती है। एक शव छूटता है। लम्बी बात है। जो एक बार हुआ है, दुबारा हो सकता है।"

●●●

मुद्रक : मॉडर्न प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली